नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[२] सूयगडो

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

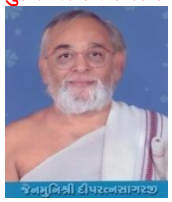

श्रीसूत्रकृताङ्गम्ः– बुज्झिज्जत्ति तिउ(प्र० तिकु)ट्टिज्जा, बंधणं परिजाणिया। किमाह बंधणं वीरो, किं वा जाणं तिउट्टई ? ॥१॥ चित्तमंतमचित्तं वा, परिगिज्झ किसामवि। अन्नं वा अणुजाणाइ, एवं दुक्खा ण मुच्चइ ॥ २॥ सयं तिवायए पाणे, अदुवाऽन्नेहिं घायए। हणंतं वाऽणुजाणाइ, वेरं वड्ढइ अप्पणो ॥ ३ ॥ जस्सिं कुले समुप्पन्ने, जेहिं वा संवसे नरे। ममाइ लुप्पई बाले, अण्णे अण्णेहिं मुच्छिए ॥४॥ वित्तं सोयरिया चेव, सव्वमेयं न ताणइ। संखाए जीविअं चेवं, कम्मुणा उ तिउट्टइ ॥५॥ एए गंथे विउक्कम्म, एगे समणमाहणा। अयाणंता विउस्सित्ता, सत्ता कामेहिं माणवा ॥६॥ संति पंच महब्भूया, इहमेगेसिमाहिया। पुढवी आउ तेऊ वा, वाउ आगासपंचमा ॥७॥ एए पंच महब्भूया, तेब्भो एगोत्ति आहिया। अह तेसिं विणासेणं, विणासो होइ देहिणो ॥८॥ जहा य पुढवीथूभे, एगे नाणाहिं दीसइ। एवं भो ! कसिणे लोए, विन्नू नाणाहिं दीसइ (प्र० वड्ढइ) ॥९॥ एवमेगेत्ति जप्पंति, मंदा आरंभणिस्सिआ। एगे किच्चा सयं पावं, तिव्वं दुक्खं (प्र० तेणं तिव्वं) नियच्छइ ॥ १० ॥ पत्तेअं कसिणे आया, जे बाला जे अ पंडिआ। संति पिच्चा न ते संति, नत्थि सत्तोववाइया ॥ १ ॥ नत्थि पुण्णे व पावे वा, नत्थि लोए इतोऽवरे। सरीरस्स विणासेणं, विणासो होइ देहिणो ॥ २ ॥ कुव्वं च कारयं चेव, सव्वं कुव्वं न विज्जई। एवं अकारओ अप्पा, एवं ते उ पगब्भिआ ॥३॥ जे ते उ वाइणो एवं, लोए तेसिं कओ सिया ?। तमाओ ते तमं जंति, मंदा आरंभनिस्सिया ॥४॥ संति पंच महब्भूया, इहमेगेसिं आहिया। आयछट्ठो पुणो आहु, आया लोगे य सासए ॥५॥ दुहओ ण विणस्संति, नो य उप्पज्जए असं। सव्वेऽवि सव्वहा भावा, नियत्तीभावमागया ॥ ६ ॥ पंच खंधे वयंतेगे, बाला उ खणजोइणो। अण्णो अणण्णो णेवाहु, हेउयं च अहेउयं ॥ ७ ॥ पुढवी आउ तेऊ य, तहा वाऊ य एगओ। चत्तारि धाउणो रूवं, एवमाहंसु आवरे (प्र० एवमाहंसु जाणगा) ॥ ८ ॥ अगारमावसंतावि, अरण्णा वावि पव्वया (प्र० इया)। इमं दरिसणमावण्णा, सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥ ९ ॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते ओहंतराऽऽहिया ॥२०॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते संसारपारगा ॥ १ ॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते गब्भस्स पारगा ॥ २ ॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते जम्मस्स पारगा ॥ ३ ॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते दुक्खस्स पारगा ॥ ४ ॥ ते णावि संधिं णच्चा णं, न ते धम्मविओ जणा। जे ते उ वाइणो एवं, न ते मारस्स पारगा ॥५॥ नाणाविहाइं दुक्खाइं, अणुहोंति पुणो पुणो। संसारचक्कवालंमि, मच्चुवाहिजराकुले ॥६॥ उच्चावयाणि गच्छंता, गब्भमेस्संति णंतसो। नायपुत्ते महावीरे, एवमाह जिणोत्तमे ॥ ७॥ इति बेमि ॥अ० १ उ० १॥ आघायं पुण एगेसिं, उववण्णा पुढो जिया। वेदयंति सुहं दुक्खं, अदुवा लुप्पंति ठाणओ ॥ ८॥ न तं सयं कडं दुक्खं, कओ अन्नकडं च णं ?। सुहं वा जइ वा दुक्खं, सेहियं वा असेहियं ॥ ९ ॥ सयं कडं न अण्णेहिं, वेदयंति पुढो जिया। संगइअं तं तहा तेसिं, इहमेगेसिं आहिअं ॥३०॥ एवमेयाणि जंपंता, बाला पंडिअमाणिणो। निययानिययं संतं, अयाणंता अबुद्धिया ॥१॥ एवमेगे उ पासत्था, ते भुज्जो विप्पगब्भिआ। एवं उवट्ठि(प्र० पवट्ठि०)आ संता, ण ते दुक्खविमोक्खया ॥ २ ॥ जविणो मिगा जहा संता, परिताणेण वज्जिआ। असंकियाइं संकंति, संकिआइं असंकिणो ॥ ३ ॥ परियाणिआणि संकंता, पासिताणि असंकिणो। अण्णाणभयसंविग्गा, संपलिंति तहिं तहिं ॥ ४ ॥ अह तं पवेज्ज बज्झं, अहे बज्झस्स वा वए। मुच्चेज्ज पयपासाओ (प्र० पयपासाई), तं तु मंदे ण देहए ॥ ५ ॥ अहिअप्पाऽहियपण्णाणे, विसमंतेणुवागते। स बद्धे पयपासेणं, तत्थ घायं नियच्छइ ॥ ६ ॥ एवं तु समणा एगे, मिच्छादिट्ठी अणारिआ। असंकिआइं संकंति, संकिआइं असंकिणो ॥७॥ धम्मपण्णवणा जा सा, तं तु संकंति मूढगा। आरंभाइं न संकंति, अविअत्ता अकोविआ ॥ ८ ॥ सव्वप्पगं विउक्कस्सं, सव्वं णूमं विहूणिआ। अप्पत्तिअं अकम्मंसे, एयमट्ठं मिगे चुए ॥ ९ ॥ जे एयं नाभिजाणंति, मिच्छादिट्ठी अणारिया। मिगा वा पासबद्धा ते, घायमेसंति णंतसो ॥ ४० ॥ माहणा समणा एगे, सव्वे नाणं सयं वए। सव्वलोगेऽवि जे पाणा, न ते जाणंति किंचण ॥ १ ॥ मिलक्खू अमिलक्खुस्स, जहा वुत्ताणुभासए। ण हेउं से विजाणाइ, भासिअं तऽणुभासए ॥ २ ॥ एवमन्नाणिया नाणं, वयंतावि सयं सयं। निच्छयत्थं न याणंति, मिलक्खुव्व अबोहिया ॥ ३ ॥ अन्नाणियाणं वीमंसा, अण्णाणेण (प्र० नाणेनोव) नियच्छइ। अप्पणो य परं नालं, कुतो अन्नाणुसासिउं ? ॥ ४ ॥ वणे मूढे जहा जंतू, मूढे णेयाणुगामिए। दोवि एए अकोविया, तिव्वं सोयं नियच्छइ ॥५॥ अंधो अंधं पहं णिंतो, दूरमद्धाणुगच्छइ। आवज्जे उप्पहं जंतू, अदुवा पंथाणुगामिए ॥ ६ ॥ एवमेगे णियायट्ठी, धम्ममाराहगा वयं। अदुवा अहम्ममावज्जे, ण ते सव्वज्जुयं वए ॥ ७॥ एवमेगे वियक्काहिं, नो अन्नं पज्जुवासिया। अप्पणो य वियक्काहिं, अयमंजूहिं दुम्मई ॥ ८ ॥ एवं तक्काइ साहिंता, धम्माधम्मे अकोविया। दुक्खं ते नाइतुट्टंति, सउणी पंजरं जहा ॥९॥ सयं सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं। जे उ तत्थ विउस्संति, संसारं ते विउस्सिया ॥५०॥ अहावरं पुरक्खायं, किरियावाइदरिसणं। कम्मचिंतापणट्ठाणं, संसारस्स पवड्ढणं (दुक्खखंधस्स वड्ढणं पा०) ॥ १ ॥ जाणं काएणऽणाउट्टी, अबुहो जं च हिंसति। पुट्ठो संवेदइ परं, अवियत्तं खु सावज्जं ॥ २ ॥ संतिमे तउ आयाणा, जेहिं कीरइ पावगं। अभि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मा य पेसा य, मणसा अणुजाणिया ॥३॥ एते उ तउ आयाणा, जेहिं कीरइ पावगं। एवं भावविसोहीए, निव्वाणमभिगच्छइ ॥४॥ पुत्तं पिया समारब्भ, आहारेज्ज असंजए। भुंजमाणो य मेहावी, कम्मणा नोवलिप्पइ ॥५॥ मणसा जे पउस्संति, चित्तं तेसिं ण विज्जइ। अणवज्जमतहं तेसिं, ण ते संवुडचारिणो ॥६॥ इच्चेयाहि य दिट्ठीहिं, सातागारवणिस्सिया। सरणंति मन्नमाणा, सेवंती पावगं जणा ॥७॥ जहा अस्साविणिं णावं, जाइअंधो दुरूहिया। इच्छई (प्र० इच्छिज्जा) पारमागंतुं, अंतरा य विसीयई ॥८॥ एवं तु समणा एगे, मिच्छादिट्ठी अणारिया। संसारपारकंखी ते, संसारं अणुपरियट्टंति ॥९॥ त्तिबेमि। अ० १ उ० २॥ जं किंचि उ पूइकडं, सड्ढीमागंतुमीहियं। सहस्संतरियं भुंजे, दुपक्खं चेव सेवइ ॥६०॥ तमेव अवियाणंता, विसमंसि अकोविया। मच्छा वेसालिया चेव, उदगस्सऽभियागमे ॥१॥ उदगस्स पभावेणं, सुक्कं सिग्घं तमिंति उ (प्र० सुक्कंमि घातमिंति उ)। ढंकेहि य कंकेहि य, आमिसत्थेहिं ते दुही ॥२॥ एवं तु समणा एगे, वट्टमाणसुहेसिणो। मच्छा वेसालिया चेव, घातमेस्संति णंतसो ॥३॥ इणमन्नं तु अन्नाणं, इहमेगेसि आहियं। देवउत्ते अयं लोए, बंभउत्तेति आवरे ॥४॥ ईसरेण कडे लोए, पहाणाइ तहावरे। जीवाजीवसमाउत्ते, सुहदुक्खसमन्निए ॥५॥ सयंभुणा कडे लोए, इति वुत्तं महेसिणा। मारेण संथुया माया, तेण लोए असासए ॥६॥ माहणा समणा एगे, आह अंडकडे जगे। असो तत्तमकासी य, अयाणंता मुसं वदे ॥७॥ सएहिं परियाएहिं, लोयं बूया कडेति य। तत्तं ते ण विजाणंति, ण विणासी कयाइवि ॥८॥ अमणुन्नसमुप्पायं, दुक्खमेव विजाणिया। समुप्पायमजाणंता, कहं नायंति संवरं ? ॥९॥ सुद्धे अपावए आया, इहमेगेसिमाहियं। पुणो किड्डापदोसेणं, सो तत्थ अवरज्झई ॥७०॥ इह संवुडे मुणी जाए, पच्छा होइ अपावए। वियडंबु जहा भुज्जो, नीरयं सरयं तहा ॥१॥ एताणुवीति मेधावी, बंभचेरेण (प्र० न) ते वसे। पुढो पावाउया सव्वे, अक्खायारो सयं सयं ॥२॥ सए सए उवट्ठाणे, सिद्धिमेव न अन्नहा। अहो इहेव वसवत्ती, सव्वकामसमप्पिए ॥३॥ सिद्धा य ते अरोगा य, इहमेगेसिमाहियं। सिद्धिमेव पुरो काउं, सासए गढिआ नरा ॥४॥ असंवुडा अणादीयं, भमिहिंति पुणो पुणो। कप्पकालमुवज्जंति, ठाणा आसुरकिब्बिसिया ॥५॥ इति बेमि ॥ अ० १ उ० ३॥ एते जिया भो ! न सरणं, बाला पंडियमाणिणो (प्र० जत्थ बालेऽवसीयंती)। हिच्चा णं पुव्वसंजोगं, सिया किच्चोवएसगा ॥६॥ तं च भिक्खू परिन्नाय, वियं तेसु ण मुच्छए। अणुक्कस्से अप्पलीणे, मज्झेण मुणि जावए॥७॥ सपरिग्गहा य सारंभा, इहमेगेसिमाहियं। अपरिग्गहा अणारंभा, भिक्खू ताणं परिव्वए ॥८॥ कडेसु घासमेसेज्जा, विऊ दत्तेसणं चरे। अगिद्धो विप्पमुक्को अ, ओमाणं परिवज्जए ॥९॥ लोगवायं णिसामिज्जा, इहमेगेसिमाहियं। विपरीयपन्नसंभूयं, अन्नउत्तं तयाणुयं (प्र० अन्नुन्नवतितानुगा) ॥८०॥ अणंते निइए लोए, सासए ण विणस्सती। अंतवं णिइए लोए, इति धीरोऽतिपासइ ॥१॥ अपरिमाणं वियाणाइ, इहमेगेसिमाहियं। सव्वत्थ सपरिमाणं, इति धीरोऽतिपासई ॥२॥ जे केई तसा पाणा, चिट्ठंति अदु थावरा। परियाए अत्थि से अंजू, जेण ते तसथावरा ॥३॥ उरालं जगतो जोगं, विवज्जासं पलिंति य। सव्वे अक्कंतदुक्खा य, अओ सव्वे अहिंसिता ॥४॥ एयं खु नाणिणो सारं, जन्न हिंसइ किंचण। अहिंसासमयं चेव, एतावन्तं वियाणिया ॥५॥ वुसिए य विगयगेहि, आयाणं संप(सम्म, सार प्र०)रक्खए। चरिआसणसेज्जासु, भत्तपाणे अ अंतसो ॥६॥ एतेहिं तिहिं ठाणेहिं, संजए सततं मुणी। उक्कसं जलणं णूमं, मज्झत्थं च विगिंचए ॥७॥ समिए उ सया साहू, पंचसंवरसंवुडे। सिएहिं असिए भिक्खू, आमोक्खाय परिव्वएज्जासि ॥८॥ त्तिबेमि ॥ उ० ४ समयाध्ययनं १॥ संबुज्झह किं न बुज्झह ?, संबोही खलु पेच्च दुल्लहा। णो हूवणमंति राइओ, नो सुलभं पुणरावि जीवियं ॥९॥ डहरा बुड्ढा य पासह, गब्भत्थावि चयंति माणवा। सेणे जह वट्टयं हरे, एवं आउखयंमि तुट्टई (प्र० जीवाण जीवियं) ॥९०॥ मायाहिं पियाहिं लुप्पइ, नो सुलहा सुगई य पेच्चओ। एयाइं भयाइं पेहिया, आरम्भा विरमेज्ज सुव्वए (सुट्ठिए पा०) ॥१॥ जमिणं जगती पुढो जगा, कम्मेहिं लुप्पंति पाणिणो। सयमेव कडेहिं गाहइ, णो तस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठयं ॥२॥ देवा गंधव्वरक्खसा, असुरा भूमिचरा सरिसिवा। रायानरसेट्ठिमाहणा, ठाणा तेऽवि चयंति दुक्खिया ॥३॥ कामेहिं ण संथवेहिं गिद्धा, कम्मसहा कालेण जंतवो। ताले जह बंधणच्चुए, एवं आउखयंमि तुट्टती ॥४॥ जे यावि बहुस्सुए सिया (सुई चू०), धम्मिय माहण भिक्खुए सिया। अभिणूमकडेहिं मुच्छिए, तिव्वं ते कम्मेहिं किच्चती ॥५॥ अह पास विवेगमुट्ठिए, अवितिन्ने इह भासई धुवं। णाहिसि आरं कओ परं ?, वेहासे कम्मेहिं किच्चती ॥६॥ जइविय णिगणे किसे चरे, जइविय भुंजिय मासमंतसो। जे इह मायाइ मिज्जई, आगंता गब्भाय णंतसो ॥७॥ पुरिसोरम पावकम्मुणा, पलियंतं मणुयाण जीवियं। सन्ना इह काममुच्छिया, मोहं जंति नरा असंवुडा ॥८॥ जयं विहराहि जोगवं, अणुपाणा पंथा दुरुत्तरा। अणुसासणमेव पक्कमे, वीरेहिं संमं पवेइयं ॥९॥ विरया वीरा समुट्ठिया, कोहकायरियाइपीसणा। पाणे ण हणंति सव्वसो, पावाओ विरयाऽभिनिव्वुडा ॥१००॥ णवि ता अहमेव लुप्पए, लुप्पंती लोआंसि पाणिणो। एवं सहिएहिं पासए, अणिहे से पुट्ठे अहियासए ॥१॥ धुणिया कुलियं व लेववं, किसए देहमणासणा इह (प्र० इहिं)। अविहिंसामेव पव्वए, अणुधम्मो मुणिणा पवेदितो ॥२॥ सउणी जह पंसु-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुंडिया, विद्दुणिय धंसयई सियं रयं। एवं दविओवहाणवं, कम्मं खवइ तवस्सिमाहणे ॥ ३ ॥ उट्ठियमणगारमेसणं, समणं ठाणठिअं तवस्सिणं। डहरा वुड्ढा य पत्थए, अवि सुस्से ण य तं लभे ऊणा ॥ ४ ॥ जइ कालुणियाणि कासिया, जइ रोयंति य पुत्तकारणा। दवियं भिक्खुं समुट्ठियं, णो लब्भंति ण संठवित्तए ॥ ५ ॥ जइवियं कामेहिं लाविया, जइ णेज्जाहि णु बंधिउं घरं। जइ जीविय नावकंखए, णो लब्भंति ण संठ(प्र० सण्ण०)वित्तए ॥ ६ ॥ सेहंति य णं ममाइणो, मायपिया य सुया य भारिया। पोसाहि ण पोसओ तुमं, लोग परंपि जहासि (प्र० चयाहि) पोसणो (प्र० पोस णे) ॥ ७ ॥ अन्ने अन्नेहिं मुच्छिया, मोहं जंति णरा असंवुडा। विसमं विसमेहिं गाहिया, ते पावेहिं पुणो पगब्भिया ॥ ८ ॥ तम्हा दवि इक्ख पंडिए, पावाओ विरतेऽभिणिव्वुडे। पणए वीरं महाविहिं, सिद्धिपहं णेआउयं धुवं ॥ ९ ॥ वेयालियमग्गमागओ, मणवयसाकायेण संवुडो। चिच्चा वित्तं च णायओ, आरंभं च सुसंवुडे चरे ॥ ११० ॥ त्तिबेमि ॥ अ० २ उ० १ ॥ तयसं व जहाइ (प्र० चयाइ) से रयं, इति संखाय मुणी ण मज्जई। गोयन्नतरेण माहणे (जे विऊ प्र०), अहसेयकरी अनेसी इंखिणी ॥ १ ॥ जो परिभवइ परं जणं, संसारे परिवत्तई महं (चिरं पा०)। अदु इंखिणिया उ पाविया, इति संखाय मुणी ण मज्जई ॥ २ ॥ जे यावि अणायगे सिया, जेवियपेसगपेसए सिया। जे मोणपयं उवट्ठिए, णो लज्जे समयं सयाऽऽयरे ॥ ३ ॥ सम अन्नयरम्मि संजमे, संसुद्धे समणे परिव्वए। जे आवकहा समाहिए, दविए कालमकासि पंडिए ॥ ४ ॥ दूरं अणुपस्सिया मुणी, तीतं धम्ममणागयं तहा। पुट्ठे परुसेहिं माहणे, अविहण्णू समयंमि रीयइ (समयाहियासए पा०) ॥ ५ ॥ पण्णसमत्ते (पण्हसमत्थे पा०) सया जए, समताधम्ममुदाहरे मुणी। सुहुमे उ सया अलूसए, णो कुज्झे(प्र० कुप्पे)णो माणि माहणे ॥ ६ ॥ बहुजणणमणंमि संवुडो, सव्वट्ठेहिं णरे अणिस्सिए। हरए व सया अणाविले, धम्मं पादुरकासि कासवं ॥ ७ ॥ बहवे पाणा पुढो सिया, पत्तेयं समयं समीहिया। जो मोणपदं उवट्ठिते, विरतिं तत्थ अकासि पंडिए ॥ ८ ॥ धम्मस्स य (सोऊण तयं पा०) पारए मुणी, आरंभस्स य अंतए ठिए। सोयंति य णं ममाइणो, णो लब्भंति णियं परिग्गहं ॥ ९ ॥ इहलोगदुहावहं विऊ, परलोगे य दुहं दुहावहं। विद्धंसणधम्ममेव तं, इति विज्जं कोऽगारमावसे ? ॥ १२० ॥ महयं पलिगोव (पलिमंथमहं पा०) जाणिया, जावि य वंदणपूयणा इहं। सुहुमे सल्ले दुरुद्धरे, विउमंता पयहिज्ज संथवं ॥ १ ॥ एगे चरे ठाणमासणे, सयणे एगे समाहिए सिया। भिक्खू उवहाणवीरिए, वयगुत्ते अज्झत्तसंवुडो ॥ २ ॥ णो पीहे ण याव(प्र० णार)पंगुणे, दारं सुन्नघरस्स संजए। पुट्ठे ण उदाहरे वयं, ण समुच्छे णो संथरे तणं ॥ ३ ॥ जत्थऽत्थमिए अणाउले, समविसमाइं मुणीऽहियासए। चरगा अदुवावि भेरवा, अदुवा तत्थ सरीसिवा सिया ॥ ४ ॥ तिरिया मणुया य दिव्वगा, उवसग्गा तिविहाऽहियासिया। लोमादीयं ण हारिसे, सुन्नागारगओ महामुणी ॥ ५ ॥ णो अभिकंखेज्ज जीवियं, नोऽविय पूयणपत्थए सिया। अब्भत्थमुविंति भेरवा, सुन्नागारगयस्स भिक्खुणो ॥ ६ ॥ उवणीयतरस्स ताइणो, भयमाणस्स विविक्कमासणं। सामाइयमाहु तस्स जं, जो अप्पाण भए ण दंसए ॥ ७ ॥ उसिणोदगतत्तभोइणो, धम्मट्ठियस्स मुणिस्स हीमतो। संसग्गि असाहु राइहिं, असमाही उ तहागयस्सवि ॥ ८ ॥ अहिगरणकडस्स भिक्खुणो, वयमाणस्स पसज्झ दारुणं। अट्ठे परिहायती बहुं, अहिगरणं न करेज्ज पंडिए ॥ ९ ॥ सीओदगपडिदुगुंछिणो, अपडिण्णस्स लवावसप्पिणो (प्र० सक्किणो)। सामाइयमाहु तस्स जं, जो गिहिमत्तेऽसणं न भुंजती ॥ १३० ॥ ण य संखयमाहु जीवियं, तहविय बालजणो पगब्भइ। बाले पापेहिं मिज्जती, इति संखाय मुणी ण मज्जती ॥ १ ॥ छंदेण पले इमा पया, बहुमायाः मोहेण पाउडा। वियडेण पलंति माहणे, सीउण्हं वयसाऽहियासए ॥ २ ॥ कुजए अपराजिए जहा, अक्खेहिं कुसलेहिं दीवयं। कडमेव गहाय णो कलिं, नो तीयं नो चेव दावरं ॥ ३ ॥ एवं लोगंमि ताइणा, बुइए जे धम्मे अणुत्तरे। तं गिण्ह हियंति उत्तमं, कडमिव सेसऽवहाय पंडिए ॥ ४ ॥ उत्तर मणुयाण आहिया, गामधम्मा(म्म)इइ मे अणुस्सुयं। जंसी विरता समुट्ठिया, कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥ ५ ॥ जे एय चरंति आहियं, नाएणं महया महेसिणा। ते उट्ठिय ते समुट्ठिया, अन्नोऽन्नं सारंति धम्मओ ॥ ६ ॥ मा पेह पुरा पणामए, अभिकंखे उवहिं धुणित्तए। जे दूमण तेहिं णो णया, ते जाणंति समाहिमाहियं ॥ ७ ॥ णो काहिएँ होज्ज संजए, पासणिए ण य संपसारए। नच्चा धम्मं अणुत्तरं, कयकिरिए ण यावि(प्र० णयणावि)मामए ॥ ८ ॥ छन्नं च पसंस णो करे, न य उक्कोस पगास माहणे। तेसिं सुविवेगमाहिए, पणया जेहिं सुजोसिअं धुयं ॥ ९ ॥ अणिहे (अणहे पा०) सहिए सुसंवुडे, धम्मट्ठी उवहाणवीरिए। विहरेज्ज समाहिइंदिए, अत्तहिअं खु दुहेण लब्भइ ॥ १४० ॥ ण हि णूण पुरा अणुस्सुतं, (अवितहं पा०) अदुवा तं तह णो समुट्ठियं। मुणिणा सामाइआहितं, नाएणं जगसव्वदंसिणा ॥ १ ॥ एवं मत्ता महंतरं, धम्ममिणं सहिया बहू जणा। गुरुणो छंदाणुवत्तगा, विरया तिन्ना महोघमाहितं ॥ २ ॥ तिबेमि ॥ अ० २ उ० २। संवुडकम्मस्स भिक्खुणो, जं दुक्खं पुट्ठं अबोहिए। तं संजमओऽवचिज्जई, मरणं हेच्च वयंति पंडिया ॥ ३ ॥ जे विन्नवणाहिऽजोसिया, संतिन्नेहिं समं वियाहिया। तम्हा उड्ढंति पासहा (उड्ढं तिरियं अहे तहा पा०), अदक्खु कामाइ रोगवं ॥ ४ ॥ अग्गं वणिएहिं आहियं, धारंती राइणिया इहं। एवं परमा महव्वया, अक्खाया उ सराइभोयणा ॥ ५ ॥ जे इह सायाणुगा नरा, अज्झोववन्ना कामेहिं मुच्छिया। किवणेण समं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगब्भिया, नवि जाणंति समाहिमाहितं ॥ ६ ॥ वाहेण जहा व विच्छए, अबले होइ गवं पचोइए । से अंतसो अप्पथामए, नाइवहइ अबले विसीयति ॥ ७ ॥ एवं कामेसणं विऊ, अज्ज सुए पयहेज्ज संथवं । कामी कामे ण कामए, लद्धे वावि अलद्ध कण्हुई ॥ ८ ॥ मा पच्छ असाधुता भवे, अच्चेही अणुसास अप्पगं । अहियं च असाहु सोयती, से थणती परिदेवती बहुं ॥ ९ ॥ इह जीवियमेव पासहा, तरुण एवा(णे वा)ससयस्स तुट्टती । इत्तरवासे य बुज्झह, गिद्धनरा कामेसु मुच्छिया ॥ १५० ॥ जे इह आरंभनिस्सिया, आतदंडा(ड)एगंतलूसगा । गंता ते पावलोगयं, चिररायं आसुरियं दिसं ॥ १ ॥ ण य संखयमाहु जीवितं, तहविय बालजणो पगब्भई । पचुप्पन्नेण कारियं, को दट्ठुं परलोयमागते ? ॥ २ ॥ अदक्खुव दक्खुवाहियं, (तं)सद्दहसु अदक्खुदंसणा ! । हंदि हु सुनिरुद्धदंसणे, मोहणिज्जेण कडेण कम्मुणा ॥ ३ ॥ दुक्खी मोहे पुणो पुणो, निव्विंदेज्ज सिलोगपूयणं । एवं सहितेऽहिपासए, आयतुलं पाणेहिं संजए ॥ ४ ॥ गारंपिअ आवसे नरे, अणुपुव्वं पाणेहिं संजए । समता सव्वत्थ सुव्वते, देवाणं गच्छे सलोगयं ॥ ५ ॥ सोच्चा भगवाणुसासणं, सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं । सव्वत्थ विणीयमच्छरे, उञ्छं भिक्खु विसुद्धमाहरे ॥ ६ ॥ सव्वं नच्चा अहिट्ठए, धम्मट्ठी उवहाणवीरिए । गुत्ते जुत्ते सदाजए, आयपरे परमायतट्ठिते ॥ ७ ॥ वित्तं पसवो य नाइओ, तं बाले सरणंति मन्नइ । एते मम तेसुवी अहं, नो ताणं सरणं न विज्जई ॥ ८ ॥ अब्भागमितंमि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवंतिए । एगस्स गती य आगती, विदु मंता सरणं ण मन्नई ॥ ९ ॥ सव्वे सयकम्मकप्पिया, अवियत्तेण दुहेण पाणिणो । हिंडंति भयाउला सढा, जाइजरामरणेहिऽभिद्दुता ॥ १६० ॥ इणमेव खणं वियाणिया, णो सुलभं बोहिं च आहितं । एवं सहिएऽहिपासए (अहियासए पा०), आह जिणे इणमेव सेसगा ॥ १ ॥ अभविंसु पुरावि भिक्खुवो, आएसावि भवंति सुव्वता । एयाइं गुणाइं आहु ते, कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥ २ ॥ तिविहेणवि पाण मा हणे, आयहिते अणियाण संवुडे । एवं सिद्धा अणंतसो, संपइ जे अ अणागयाऽवरे ॥ ३ ॥ एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे । अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए- ॥ ४ ॥ त्तिबेमि ॥ उ० ३ श्रीवैतालीयाध्ययनं २ ॥ सूरं मण्णइ अप्पाणं, जाव जेयं न पस्सती । जुज्झंतं दढधम्माणं, सिसुपालो व महारहं ॥ ५ ॥ पयाता सूरा रणसीसे, संगामंमि उवट्ठिते । माया पुत्तं न याणाइ, जेएण परिविच्छए ॥ ६ ॥ एवं सेहेवि अप्पुट्ठे, भिक्खायरियाअकोविए । सूरं मण्णति अप्पाणं, जाव लूहं न सेवए ॥ ७ ॥ जया हेमंतमासंमि, सीतं फुसइ सव्वगं (प्र० सवायगं) तत्थ मंदा विसीयंति, रज्जहीणा व खत्तिया ॥ ८ ॥ पुट्ठे गिम्हाहितावेणं, विमणे सुपिवासिए । तत्थ मंदा विसीयंति, मच्छा अप्पोदए जहा ॥ ९ ॥ सदा दत्तेसणा दुक्खा, जायणा दुप्पणोल्हिया । कम्मत्ता दुब्भगा चेव, इच्चाहंसु पुढोजणा ॥ १७० ॥ एते सद्दे अचायंता, गामेसु णगरेसु वा (प्र० गामंसि नगरंसि य) । तत्थ मंदा विसीयंति, संगामंमिव भीरुया ॥ १ ॥ अप्पेगे खुधियं भिक्खुं, सुणी डंसति लूसए । तत्थ मंदा विसीयंति, तेउपुट्ठा व पाणिणो ॥ २ ॥ अप्पेगे पडिभासंति, पडिपंथियमागता । पडियारगता एते, जे एते एव जीविणो ॥ ३ ॥ अप्पेगे वइ जुंजंति, नगिणा पिंडोलगाहमा । मुंडा कंडूविणट्ठगा, उज्जल्ला असमाहिता ॥ ४ ॥ एवं विप्पडिवन्नेगे, अप्पणा उ अजाणया । तमओ ते तमं जंति, मंदा मोहेण पाउडा ॥ ५ ॥ पुट्ठो य दंसमसएहिं, तणफासमचाइया । न मे दिट्ठे परे लोए, जइ परं मरणं सिया ॥ ६ ॥ संतत्ता केसलोएणं, बंभचेरपराइया । तत्थ मंदा विसीयंति, मच्छा विट्टा (प्र० पविट्ठा) व केयणे ॥ ७ ॥ आयदंडसमायारे, मिच्छासंठियभावणा । हरिसप्पओसमावन्ना, केई लूसंतिऽनारिया ॥ ८ ॥ अप्पेगे पलियंते सिं, चारो चोरोत्ति सुव्वयं । बंधंति भिक्खुयं बाला, कसायवयणेहि य ॥ ९ ॥ तत्थ दंडेण संवीते, मुट्ठिणा अदु फलेण वा । नातीणं सरती बाले, इत्थी वा कुद्धगामिणी ॥ १८० ॥ एते भो ! कसिणा फासा, फरुसा दुरहियासया । हत्थी वा सरसंवित्ता, कीवा वसगया गिहं (तिवसट्टे गया गिहं पा०) ॥ १ ॥ तिबेमि । अ० ३ उ० १ ॥ अहिमे सुहुमा संगा, भिक्खुणं जे दुरुत्तरा । जत्थ एगे विसीयंति, ण चयंति जवित्तए ॥ २ ॥ अप्पेगे नायओ (प्र० नायगा) दिस्स, रोयंति परिवारिया । पोस णे ताय ! पुट्ठोऽसि, कस्स ताय ! जहासि(प्र० चयासि)णे ? ॥ ३ ॥ पिया ते थेरओ तात !, ससा ते खुड्डिया इमा । भायरो ते सगा तात !, सोयरा किं जहासि णे ? ॥ ४ ॥ मायरं पियरं पोस, एवं लोगो भविस्सति । एवं खु लोइयं ताय !, जे पालंति य मायरं ॥ ५ ॥ उत्तरा महुरुल्लावा, पुत्ता ते तात ! खुड्डया । भारिया ते णवा तात !, मा सा अन्नं जणं गमे ॥ ६ ॥ एहि ताय ! घरं जामो, मा य कम्मे सहा वयं । बितियंपि ताय ! पासामो, जामु ताव सयं गिहं ॥ ७ ॥ गंतुं ताय ! पुणो गच्छे, ण तेणासमणो सिया । अकामगं परिक्कम्मं, को ते वारेउमरिहति ? ॥ ८ ॥ जं किंचि अणगं तात !, तंपि सव्वं समीकतं । हिरण्णं ववहाराइ, तंपि दाहामु ते वयं ॥ ९ ॥ इच्चेव णं सुसेहंति, कालुणीयसमुट्ठिया । विबद्धो नाइसंगेहिं, ततोऽगारं पहावइ ॥ १९० ॥ जहा रुक्खं वणे जायं, मालुया पडिबंधई । एव णं पडिबंधंति, णातओ असमाहिणा ॥ १ ॥ विबद्धो नातिसंगेहिं, हत्थी वावी नवग्गहे । पिट्ठतो परिसप्पंति, सुयगोव्व अदूरए ॥ २ ॥ एते संगा मणूसाणं, पाताला व अतारिमा । कीवा जत्थ य किस्संति, नाइसंगेहिं मुच्छिया ॥ ३ ॥ तं च भिक्खू परिन्नाय, सव्वे संगा महासवा । जीवियं नावकंखिज्जा, सोच्चा धम्ममणुत्तरं ॥ ४ ॥ अहिमे (अहा इमे पा०) संति आवट्टा, कासवेणं पवेइया । बुद्धा जत्थावसप्पंति, सीयंति अबुहा जहिं ॥ ५ ॥ रायाणो रायऽमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया । निमंतयंति भोगेहिं, भिक्खुयं साहुजीविणं ॥ ६ ॥ हत्थऽस्सरहजाणेहिं, विहारगमणेहि य । भुंज भोगे इमे सऽग्घे, महरिसी ! पूजयामु तं ॥ ७ ॥ (१०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य । भुंजाहिमाइं भोगाइं, आउसो ! पूजयामु तं ॥ ८ ॥ जो तुमे नियमो चिण्णो, भिक्खुभावंमि सुव्वया !। अगारमावसंतस्स, सव्वो संविज्जए तहा ॥९॥ चिरं दूइज्जमाणस्स, दोसो दाणिं कुतो तव ? । इच्चेव णं निमंतेंति, नीवारेण व सूयरं ॥ २००॥ चोइया भिक्खचरियाए, अचयंता जवित्तए । तत्थ मंदा विसीयंति, उज्जाणंसि व दुब्बला ॥ १ ॥ अचयंता व लूहेणं, उवहाणेण तज्जिया । तत्थ मंदा विसीयंति, उज्जाणंसि जरग्गवा ॥ २ ॥ एवं निमंतणं लद्धुं, मुच्छिया गिद्ध इत्थीसु । अज्झोववन्ना कामेहिं, चोइज्जंता गया गिहं ॥ ३ ॥ तिबेमि । अ० ३ उ० ३ । जहा संगामकालंमि, पिट्ठतो भीरु वेहइ । वलयं गहणं णूमं, को जाणइ पराजयं ? ॥ ४ ॥ मुहुत्ताणं मुहुत्तस्स, मुहुत्तो होइ तारिसो । पराजियाऽवसप्पामो, इति भीरू उवेहई ॥५॥ एवं तु समणा एगे, अबलं नच्चाण अप्पगं । अणागयं भयं दिस्स, अवकप्पंतिमं सुयं ॥ ६ ॥ को जाणइ विऊवातं, इत्थीओ उदगाउ वा । चोइज्जंता पवक्खामो, ण णो अत्थि पकप्पियं ॥ ७ ॥ इच्चेव पडिलेहंति, वलया (प्र० वलाइ) पडिलेहिणो । वितिगिच्छसमावन्ना, पंथाणं च अकोविया ॥ ८ ॥ जे उ संगामकालंमि, नाया सूरपुरंगमा । णो ते पिट्ठमुवेहिंति, किं परं मरणं सिया ? ॥ ९ ॥ एवं समुट्ठिए भिक्खू, वोसिज्जाऽगारबंधणं । आरंभं तिरियं कट्टु, अत्तत्ताए परिव्वए ॥ २१० ॥ तमेगे परिभासंति, भिक्खुयं साहुजीविणं । जे एवं परिभासंति, अंतए ते समाहिए ॥ १ ॥ संबद्धसमकप्पा उ, अन्नमन्नेसु मुच्छिया । पिंडवायं गिलाणस्स, जं सारेह दलाह य ॥ २ ॥ एवं तुब्भे सरागत्था, अन्नमन्नमणुव्वसा । नट्ठसप्पहसब्भावा, संसारस्स अपारगा ॥ ३ ॥ अह ते परिभासेज्जा, भिक्खू मोक्खविसारए । एवं तुब्भे पभासंता, दुपक्खं चेव सेवह ॥ ४ ॥ तुब्भे भुंजह पाएसु, गिलाणो अभिहडंमि या । तं च बीओदगं भोच्चा, तमुद्दिस्सादि जं कडं ॥ ५ ॥ लित्ता तिव्वाभितावेणं, उज्झिआ असमाहिया । नातिकंडूइयं सेयं, अरुयस्सावरज्झती ॥ ६ ॥ तत्तेण अणुसिट्ठा ते, अपडिन्नेण जाणया । ण एस नियए मग्गे, असमिक्खा वतीकिती ॥ ७ ॥ एरिसा जा (प्र० ते) वई एसा, अग्गवेणुव्व करिसिता । गिहिणो अभिहडं सेयं, भुंजिउं ण उ भिक्खुणं ॥ ८ ॥ धम्मपन्नवणा जा सा, सारंभा ण विसोहिआ । ण उ एयाहिं दिट्ठीहिं, पुव्वमासि पगप्पिअं ॥ ९ ॥ सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, अचयंता जवित्तए । ततो वायं णिराकिच्चा, ते भुज्जोवि पगब्भिया ॥ २२० ॥ रागदोसाभिभूयप्पा, मिच्छत्तेणं अभिद्दुता । आउस्से सरणं जंति, टंकणा इव पव्वयं ॥ १ ॥ बहुगुणप्पगप्पाइं, कुज्जा अत्तसमाहिए । जेणऽन्ने णो विरुज्झेज्जा, तेण तं तं समायरे ॥ २ ॥ इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेइयं । कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए ॥ ३ ॥ संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिनिव्वुडे । उवसग्गे नियामित्ता, आमोक्खाए परिव्वएज्जाऽसि ॥ ४ ॥ त्तिबेमि । अ० ३ उ० ३ । आहंसु महापुरिसा, पुव्विं तत्ततवोधणा । उदएण सिद्धिमावन्ना, तत्थ मंदो विसीयति ॥ ५ ॥ अभुंजिया नमी विदेही, रामगुत्ते य भुंजिआ । बाहुए उदगं भोच्चा, तहा नारायणे रिसी ॥ ६ ॥ आसिले देविले चेव, दीवायण महारिसी । पारासरे दगं भोच्चा, बीयाणि हरियाणि य ॥ ७ ॥ एते पुव्वं महापुरिसा, आहिता इह संमता । भोच्चा बीओदगं सिद्धा, इति मेयमणुस्सुअं ॥ ८ ॥ तत्थ मंदा विसीअंति, वाहच्छिन्ना व गद्दभा । पिट्ठतो परिसप्पंति, पिट्ठसप्पी य संभमे ॥ ९ ॥ इहमेगे उ भासंति, (मन्नंति पा०) सातं सातेण विज्जती । जे तत्थ आरियं मग्गं, परमं च समाहिए (यं) ॥ २३० ॥ मा एयं अवमन्नंता, अप्पेणं लुंपहा बहुं । एतस्स (उ)अमोक्खाए, अओहारिव्व जूरह ॥ १ ॥ पाणाइवाते वट्टंता, मुसावादे असंजता । अदिन्नादाणे वट्टंता, मेहुणे य परिग्गहे ॥ २ ॥ एवमेगे उ पासत्था, पन्नवंति अणारिया । इत्थीवसं गया बाला, जिणसासणपरम्मुहा ॥ ३ ॥ जहा गंडं पिलागं वा, परिपीलेज्ज मुहुत्तगं । एवं विन्नवणित्थीसु, दोसो तत्थ कओ सिआ ? ॥ ४ ॥ जहा मंधादए नाम, थिमिअं भुंजती दगं । एवं विन्नवणित्थीसु, दोसो तत्थ कओ सिआ ? ॥ ५ ॥ जहा विहंगमा पिंगा, थिमिअं भुंजती दगं । एवं विन्नवणित्थीसु, दोसो तत्थ कओ सिआ ? ॥ ६ ॥ एवमेगे उ पासत्था, मिच्छादिट्ठी अणारिया । अज्झोववन्ना कामेहिं, पूयणा इव तरुणए ॥ ७ ॥ अणागयमपस्संता, पच्चुप्पन्नगवेसगा । ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउंमि (प्र० तीतंमि) जोव्वणे ॥ ८ ॥ जेहिं काले परिक्कंतं, न पच्छा परितप्पए । ते धीरा बंधणुम्मुक्का, नावकंखंति जीविअं ॥ ९ ॥ जहा नई वेयरणी, दुत्तरा इह संमता । एवं लोगंसि नारीओ, दुरुत्तरा अमईमया ॥ २४० ॥ जेहिं नारीण संजोगा, पूयणा पिट्ठतो कता । सव्वमेयं निराकिच्चा, ते ठिया सुसमाहिए ॥ १ ॥ एते ओघं तरिस्संति, समुद्दं ववहारिणो । जत्थ पाणा विसन्नासि, किच्चंती सयकम्मुणा ॥ २ ॥ तं च भिक्खू परिण्णाय, सुव्वते समिते चरे । मुसावायं च वज्जिज्जा, अदिन्नादाणं च वोसिरे ॥ ३ ॥ उड्ढमहे तिरियं वा, जे केई तसथावरा । सव्वत्थ विरतिं कुज्जा, संति निव्वाणमाहियं ॥ ४ ॥ इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेदितं । कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए ॥ ५ ॥ संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिनिव्वुडे । उवसग्गे नियामित्ता, आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ ६ ॥ त्तिबेमि ॥ उ० ४ उपसर्गाध्ययनं ३ ॥ जे मायरं च पियरं च, विप्पजहाय पुव्वसंजोगं । एगे सहिते चरिस्सामि, आरतमेहुणो विवित्तेसु (विवित्तेसि पा०) ॥ ७ ॥ सुहुमेणं तं परिक्कम्म, छन्नपएण इत्थिओ मंदा । उव्वायंपि ताउ जाणिंसु (जाणंति पा०) जहा लिस्संति भिक्खुणो एगे ॥ ८ ॥ पासे भिसं णिसीयंति, अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिंति । कायं अहेवि दंसंति, बाहू उद्धट्टु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कक्खमणुव्वजे ॥९॥ सयणासणेहिं जोगेहिं, इत्थिओ एगता णिमंतंति। एयाणि चेव से जाणे, पासाणि विरूवरूवाणि ॥२५०॥ नो तासु चक्खु संधेज्जा, नोवि य साहसं समभिजाणे। णो सहियंपि विहरेज्जा, एवमप्पा सुरक्खिओ होइ ॥१॥ आमंतिअ उस्सविया, भिक्खुं आयसा निमंतंति। एताणि चेव से जाणे, सद्दाणि विरूवरूवाणि ॥२॥ मणबंधणेहिं णेगेहिं, कलुणविणीयमुवगसित्ताणं। अदु मंजुलाइं भासंति, आणवयंति भिन्नकहाहिं ॥३॥ सीहं जहा व कुणिमेणं, निब्भयमेगचरंति पासेणं। एवित्थियाउ बंधंति, संवुडं एगतियमणगारं ॥४॥ अह तत्थ पुणो णमयंती, रहकारो व णेमिं आणुपुव्वीए। बद्धे मिए व पासेणं, फंदंतेवि ण मुच्चए ताहे ॥५॥ अह सेऽणुतप्पई पच्छा, भोच्चा पायसं व विसमिस्सं। एवं विवे(प्र० विवा)गमादाय, संवासो नवि कप्पए दविए ॥६॥ तम्हा उ वज्जए इत्थी, विसलित्तं व कंटगं नच्चा। ओए कुलाणि वसवत्ती, आघाते ण सेवि णिग्गंथे ॥७॥ जे एयं उंछं अणुगिद्धा, अन्नयरा हुंति कुसीलाणं। सुतवस्सिएवि से भिक्खू, नो विहरे सह णमित्थीसु ॥८॥ अवि धूयराहिं सुण्हाहिं, धातीहिं अदुव दासीहिं। महतीहिं वा कुमारीहिं, संथवं से न कुज्जा अणगारे ॥९॥ अदु णाइणं च सुहीणं वा, अप्पियं दट्ठु एगता होति। गिद्धा सत्ता कामेहिं, रक्खणपोसणे मणुस्सोऽसि ॥२६०॥ समणंपि दट्ठुदासीणं (समणं दट्ठूणुदासीणं पा०), तत्थवि ताव एगे कुप्पंति। अदुवा भोयणेहिं णत्थेहिं, इत्थीदोसं संकिणो होंति ॥१॥ कुव्वंति संथवं ताहिं, पब्भट्ठा समाहिजोगेहिं। तम्हा समणा ण समेंति, आयहियाए सण्णिसेज्जाओ ॥२॥ बहवे गिहाइं अवहट्टु, मिस्सीभावं पत्थुया (पण्णता पा०) य एगे। धुवमग्गमेव पवयंति, वायावीरियं कुसीलाणं ॥३॥ सुद्धं रवति परिसाए, अह रहस्संमि दुक्कडं करेंति। जाणंति य णं तहाविहा, माइल्ले महासढेऽयंति ॥४॥ सयं दुक्कडं च न वदति, आइट्ठोवि पकत्थति बाले। वेयाणुवीइ मा कासी, चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो ॥५॥ ओसियावि इत्थिपोसेसु, पुरिसा इत्थिवेयखेदन्ना। पण्णासमन्निता वेगे, नारीणं वसं उवकसंति ॥६॥ अवि हत्थपादछेदाए, अदुवा वद्धमंसउक्कंते। अवि तेयसाभितावणाणि, तच्छियखारसिंचणाइं च ॥७॥ अदु कण्णणासच्छेदं, कंठच्छेदणं तितिक्खंती। इति इत्थ पावसंतत्ता, नय बिंति पुणो न काहिंति ॥८॥ सुतमेतमेवमेगेसिं, इत्थीवेदेति हु सुयक्खायं। एवंपि ता वदित्ताणं, अदुवा कम्मुणा अवकरेंति ॥९॥ अन्नं मणेण चिंतेति, वाया अन्नं च कम्मुणा अन्नं। तम्हा ण सद्दह भिक्खू, बहुमायाओ इत्थिओ णच्चा ॥२७०॥ जुवती समणं बूया, विचित्तऽलंकारवत्थगाणि परिहित्ता। विरता चरिस्सऽहं रुक्खं, धम्ममाइक्ख णे भयंतारो! ॥१॥ अदु साविया पवाएणं, अहमंसि साहम्मिणी य समणाणं। जतुकुंभे जहा उवज्जोइ, संवासे विदू विसीएज्जा ॥२॥ जतुकुंभे जोइउवगूढे, आसुऽभितत्ते णासमुवयाइ। एवित्थियाहिं अणगारा, संवासेण णासमुवयंति ॥३॥ कुव्वंति पावगं कम्मं, पुट्ठा वेगेवमाहिंसु। नोऽहं करेमि पावंति, अंकेसाइणी ममेसत्ति ॥४॥ बालस्स मंदयं बीयं, जं च कडं अवजाणई भुज्जो। दुगुणं करेइ से पावं, पूयणकामो विसन्नेसी ॥५॥ संलोकणिज्जमणगारं, आयगयं निमंतणेणाहंसु। वत्थं च ताइ! पायं वा, अन्नं पाणगं पडिग्गाहे ॥६॥ णीवारमेवं बुज्झेज्जा, णो इच्छे अगारमागंतुं। बद्धे विसयपासेहिं, मोहमावज्जइ पुणो मंदे ॥७॥ त्तिबेमि ॥ अ० ४ उ० १ ॥ ओए सया ण रज्जेज्जा, भोगकामी पुणो विरज्जेज्जा। भोगे समणाण सुणेह, जह भुंजंति भिक्खुणो एगे ॥८॥ अह तं तु भेदमावन्नं, मुच्छितं भिक्खुं काममतिवट्टं। पलिभिंदिया णं तो पच्छा, पादुद्धट्टु मुद्धि पहणंति ॥९॥ जइ केसिआ णं मए भिक्खू, णो विहरे सह णमित्थीए। केसाणऽविह लुंचिस्सं, नन्नत्थ मए चरिज्जासि ॥२८०॥ अह णं से होई उवलद्धो, तो पेसंति तहाभूएहिं। अलाउच्छेदं पेहेहि, वग्गुफलाइं आहराहित्ति ॥१॥ दारूणि सागपागाए (अन्नपागाए पा०), पज्जोओ वा भविस्सती राओ। पाताणि य (प्र० पोताणि य) मे रयावेहि, एहि ता मे पिट्ठ ओमद्दे ॥२॥ वत्थाणि य मे पडिलेहेहि, अन्नं पाणं च आहराहित्ति। गंधं (गंथं पा०) च रओहरणं च, कासवगं च मे समणुजाणाहि ॥३॥ अदु अंजणिं अलंकारं, कुक्कयं मे पयच्छाहि। लोद्धं च लोद्धकुसुमं च, वेणुपलासियं च गुलियं च ॥४॥ कुट्ठं तगरं च अगरुं, संपिट्ठं सम्मं उसिरेणं। तेल्लं मुहभिंजाए (प्र० भिण्डलिजाए), वेणुफलाइं सन्निधानाए ॥५॥ नंदीचुण्णगाइं पाहराहि, छत्तोवाणहं च जाणाहि। सत्थं च सूवच्छेज्जाए, आणीलं च वत्थयं रयावेहि ॥६॥ सुफाणिं च सागपागाए, आमलगाइं दगाहरणं च। तिलगकरणिमंजणसलागं, घिंसु मे विहूणयं विजाणेहि ॥७॥ संडासगं च फणिहं च, सीहलिपासगं च आणाहि। आदंसगं च पयच्छाहि, दंतपक्खालणं पवेसाहि ॥८॥ पूयफलं तंबोलयं, सूईसुत्तगं च जाणाहि। कोसं च मोयमेहाए, सुप्पुक्खलगं च खारगालणं च ॥९॥ चंदालगं च करगं च, वच्चघरं च आउसो! खणाहि। सरपाययं च जायाए, गोरहगं च सामणेराए ॥२९०॥ घडिगं च सडिंडिमयं च, चेलगोलं कुमारभूयाए। वासं समभिआवण्णं, आवसहं च जाण भत्तं च ॥१॥ आसंदियं च नवसुत्तं, पाउल्लाइं संकमट्ठाए। अदु पुत्तदोहलट्ठाए, आणप्पा हवंति दासा वा ॥२॥ जाए फले समुप्पन्ने, गेण्हसु वा णं अहवा जहाहि। अहं पुत्तपोसिणो एगे, भारवहा हवंति उट्टा वा ॥३॥ राओवि उट्ठिया संता, दारगं च संठवंति धाई वा। सुहिरामणावि ते संता, वत्थधोवा हवंति हंसा वा ॥४॥ एवं बहुहिं कयपुव्वं, भोगत्थाए जेऽभियावन्ना। दासे मिइव पेसे वा, पसुभूतेव से ण वा केई ॥५॥ एवं खु तासु विन्नप्पं,

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संथवं संवासं च वज्जेज्जा। तज्जातिआ इमे कामा, वज्जकरा य एवमक्खाए ॥६॥ एयं भयं ण सेयाय, इइ से अप्पगं निरुंभित्ता। णो इत्थिं णो पसुं भिक्खू, णो सयं पाणिणा णिलिज्जेज्जा ॥ ७॥ सुविसुद्धलेसे मेहावी, परकिरिअं च वज्जए नाणी। मणसा वयसा कायेणं, सव्वफाससहे अणगारे ॥८॥ इच्चेवमाहु से वीरे, धुअरए धुअमोहे (धुअए जमग्गे पा०) से भिक्खू। तम्हा अज्झत्थविसुद्धे, सुविमुक्के (विहरे पा०) आमोक्खाए परिवएज्जासि ॥९॥ त्तिबेमि॥ उ० २ स्त्रीपरिज्ञाध्ययनं ४॥ पुच्छिस्सऽहं केवलियं महेसिं!, कहं भितावा णरगा पुरत्था ?। अजाणओ मे मुणि ! बूहि जाणं, कहिं नु बाला नरयं उविंति ?॥ ३००॥ एवं मए पुट्ठे महाणुभावे, इणमोऽब्बवी कासवे आसुपन्ने। पवेदइस्सं दुहमट्ठदुग्गं, आदीणियं दुक्कडियं (दुक्कडिणं पा०) पुरत्था ॥ १॥ जे केइ बाला इह जीवियट्ठी, पावाइं कम्माइं करंति रुद्दा। ते घोररूवे तमिसंधयारे, तिव्वाभितावे नरए पडंति ॥ २॥ तिव्वं तसे पाणिणो थावरे य, जे हिंसति आयसुहं पडुच्चा। जे लूसए होइ अदत्तहारी, ण सिक्खती सेयवियस्स किंचि ॥ ३॥ पागब्भि पाणे बहुणं तिवाति, अनिव्वते घातमुवेति बाले। णिहो णिसं गच्छति अंतकाले, अहोसिरं कट्टु उवेइ दुग्गं ॥ ४॥ हण छिंदह भिंदह णं दहेति, सद्दे सुणिंता परहम्मियाणं। ते नारगाओ भयभिन्नसन्ना, कंखंति कन्नाम दिसं वयामो ?॥ ५॥ इंगालरासिं जलियं सजोतिं, तत्तोवमं भूमिमणुक्कमंता। ते डज्झमाणा कलुणं थणंति, अरहस्सरा तत्थ चिरट्ठितीया ॥ ६॥ जइ ते सुया वेयरणी भिदुग्गा, णिसिओ जहा खुर इव तिक्खसोया। तरंति ते वेयरणीं भिदुग्गां, उसुचोइया सत्तिसु हम्ममाणा ॥ ७॥ कीलेहिं विज्झंति असाहुकम्मा, नावं उविंते सइविप्पहूणा। अन्ने तु सूलाहिं तिसूलियाहिं, दीहाहिं विद्धूण अहेकरंति ॥ ८॥ केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ, उदगंसि बोलंति महालयंसि। कलंबुयावालुय मुम्मुरे य, लोलंति पच्चंति अ तत्थ अन्ने ॥ ९॥ आसूरियं (प्र० असूरियं) नाम महाभितावं, अंधंतमं दुप्पतरं महंतं। उड्ढं अहेअं तिरियं दिसासु, समाहिओ (समूसिओ पा०) जत्थऽगणी झियाई ॥ ३१०॥ जंसी गुहाए जलणेऽतिउट्टे, अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो। सया य कलुणं पुण घम्मठाणं, गाढोवणीयं अतिदुक्खधम्मं ॥ १॥ चत्तारि अगणीओ समारभित्ता, जहिं कूरकम्माऽभितविंति बालं। ते तत्थ चिट्ठंतऽभितप्पमाणा, मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता ॥ २॥ संतच्छणं नाम महाहितावं, ते नारया जत्थ असाहुकम्मा। हत्थेहिं पाएहि य बंधिऊणं, फलगं व तच्छंति कुहाडहत्था ॥ ३॥ रुहिरे पुणो वच्चसमुस्सिअंगे, भिन्नुत्तमंगे परिवत्तयंता। पयंति णं णेरइए फुरंते, सजीवमच्छे व अयोकवल्ले ॥ ४॥ नो चेव ते तत्थ मसीभवंति, ण मिज्जती तिव्वभिवेयणाए। तमाणुभागं अणुवेदयंता, दुक्खंति दुक्खी इह दुक्कडेणं ॥ ५॥ तहिं च ते लोलणसंपगाढे, गाढं सुतत्तं अगणिं वयंति। न तत्थ सायं लहती भिदुग्गे, अरहिया(प्र० अरब्भिया)भितावा तहवी तविंति ॥ ६॥ से सुच्चई नगरवहे व सद्दे, दुहोवणीयाणि पयाणि तत्थ। उदिण्णकम्माण उदिण्णकम्मा, पुणो पुणो ते सरहं दुहेंति ॥ ७॥ पाणेहिं णं पाव विओजयंति, तं भे पवक्खामि जहातहेणं। दंडेहिं तत्था सरयंति बाला, सव्वेहिं दंडेहिं पुराकएहिं ॥ ८॥ ते हम्ममाणा णरगे पडंति, पुन्ने दुरूवस्स महाभितावे। ते तत्थ चिट्ठंति दुरूवभक्खी, तुट्टंति कम्मोवगया किमीहिं ॥ ९॥ सया कसिणं पुण घम्मठाणं, गाढोवणीयं अतिदुक्खधम्मं। अंदूसु पक्खिप्प विहत्तु देहं, वेहेण सीसं सेऽभितावयंति ॥ ३२०॥ छिंदंति बालस्स खुरेण नक्कं, उट्ठेवि छिंदंति दुवेवि कण्णे। जिब्भं विणिक्कस्स विहत्थिमित्तं, तिक्खाहिं सूलाहिऽभितावयंति ॥ १॥ ते तिप्पमाणा तलसंपुडंव, राइंदियं तत्थ थणंति बाला। गलंति ते सोणिअपूयमंसं, पज्जोइया खारपइद्धियंगा ॥ २॥ जइ ते सुता लोहितपूअपाई, बालागणी तेअगुणा परेणं। कुंभी महंताहियपोरसीया, समूसिता लोहियपूयपुण्णा ॥ ३॥ पक्खिप्प तासुं पययंति बाले, अट्टस्सरे ते कलुणं रसंते। तण्हाइया ते तउतंबतत्तं, पज्जिज्जमाणाऽट्टतरं रसंति ॥ ४॥ अप्पेण अप्पं इह वंचइत्ता, भवाहमे पुव्वसते सहस्से। चिट्ठंति तत्था बहुकूरकम्मा, जहा कडं कम्म तहासि भारे ॥ ५॥ समज्जिणित्ता कलुसं अणज्जा, इट्ठेहिं कंतेहि य विप्पहूणा। ते दुब्भिगंधे कसिणे य फासे, कम्मोवगा कुणिमे आवसंति ॥ ६॥ त्तिबेमि॥ अ० ५ उ० १॥ अहावरं सासयदुक्खधम्मं, तं भे पवक्खामि जहातहेणं। बाला जहा दुक्कडकम्मकारी, वेदंति कम्माइं पुरेकडाइं ॥ ७॥ हत्थेहिं पाएहि य बंधिऊणं, उदरं विकत्तंति खुरासिएहिं। गिण्हित्तु बालस्स विहत्तु देहं, बद्धं थिरं पिट्ठतो उद्धरंति ॥ ८॥ बाहू पकत्तंति य मूलतो से, थूलं वियासं मुहे आडहंति। रहंसि जुत्तं सरयंति बालं, आरुस्स विज्झंति तुदेण पिट्ठे ॥ ९॥ अयंव तत्तं जलियं सजोइ, तऊवमं भूमिमणुक्कमंता। ते डज्झमाणा कलुणं थणंति, उसुचोइया तत्ततजुगेसु जुत्ता ॥ ३३०॥ बाला बला भूमिमणुक्कमंता, पविज्जलं लोहपहं च तत्तं। जंसीऽभिदुग्गंसि पवज्जमाणा, पेसेव दंडेहिं पुराकरंति ॥ १॥ ते संपगाढंसि पवज्जमाणा, सिलाहिं हम्मंति निपातिणीहिं। संतावणी नाम चिरट्ठितीया, संतप्पती जत्थ असाहुकम्मा ॥ २॥ कंदूसु पक्खिप्प पयंति बालं, ततोवि दड्ढा पुण उप्पयंति। ते उड्ढकाएहिं पखज्जमाणा, अवरेहिं खज्जंति सणप्फएहिं ॥ ३॥ समूसियं नाम विधूमठाणं, जं सोयतत्ता कलुणं थणंति। अहोसिरं कट्टु विगत्तिऊणं, अयंव सत्थेहिं समोसवेंति ॥ ४॥ समूसिया तत्थ विसूणियंगा, पक्खीहिं खज्जंति अओमुहेहिं। संजीवणी नाम चिरट्ठितीया, जंसी पया हम्मइ पावचेया ॥ ५॥ तिक्खाहिं सूलाहिं निवाययंति (प्र० भितावयंति), वसागयं सावययं व लद्धं। ते सूलविद्धा कलुणं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थणंति, एगंतदुक्खं दुहओ गिलाणा ॥ ६ ॥ सयाजलं नाम निहं महंतं, जंसी जलंतो अगणी अकट्ठो। चिट्ठति बद्धा बहुकूरकम्मा, अरहस्सरा केइ चिरट्ठितीया ॥ ७॥ चिया महंतीउ
समारभित्ता, छुब्भंति ते तं कलुणं रसंतं। आवट्टती तत्थ असाहुकम्मा, सप्पी जहा पडियं जोइमज्झे ॥ ८॥ सदा कसिणं पुण घम्मठाणं, गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं । हत्थेहिं पाएहि
य बंधिऊणं, सत्तुव्व डंडेहिं समारभंति ॥ ९॥ भंजंति बालस्स वहेण पुट्ठी, सीसंपि भिंदंति अओघणेहिं। ते भिन्नदेहा फलगंव तच्छा, तत्ताहिं आराहिं णियोजयंति॥३४०॥ अभिजुंजिया
रुद्द असाहुकम्मा, उसुचोइया हत्थिवहं वहंति। एगं दुरूहित्तु दुवे ततो वा, आरुस्स विज्झंति ककाणओ से ॥१॥ बाला बला भूमिमणुक्कमंता, पविज्जलं कंटइलं महंतं। विवद्धतप्पेहिं विव-
ण्णचित्ते, समीरिया कोट्टबलिं करिंति ॥ २॥ वेतालिए नाम महाभितावे, एगायते पव्वयमंतलिक्खे । हम्मंति तत्था बहुकूरकम्मा, परं सहस्साण मुहुत्तगाणं ॥ ३ ॥ संवाहिया दुक्कडिणो
थणंति, अहो य राओ परितप्पमाणा । एगंतकूडे नरए महंते, कूडेण तत्था विसमे हता उ ॥ ४॥ भंजंति णं पुव्वमरी सरोसं, समुग्गरे ते मुसले गहेतुं । ते भिन्नदेहा रुहिरं वमंता, ओमु-
द्धगा धरणितले पडंति ॥ ५ ॥ अणासिया नाम महासियाला, पागब्भिणो तत्थ सयायकोवा । खज्जंति तत्था बहुकूरकम्मा, अदूरगा संकलियाहिं बद्धा ॥ ६ ॥ सयाजला नाम नदी
भिदुग्गा. पविज्जलं लोहविलीणतत्ता । जंसी भिदुग्गंसि पवज्जमाणा, एगायऽताणुक्कमणं करेंति ॥ ७॥ एयाइं फासाइं फुसंति बालं, निरंतरं तत्थ चिरट्ठितीयं । ण हम्ममाणस्स उ होइ
ताणं. एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं ॥ ८॥ जं जारिसं पुव्वमकासि कम्मं, तमेव आगच्छति संपराए। एगंतदुक्खं भवमज्जिणित्ता, वेदंति दुक्खी तमणंतदुक्खं ॥ ९॥ एताणि सोच्चा णर-
गाणि धीरे. न हिंसए किंचण सव्वलोए । एगंतदिट्ठी अपरिग्गहे उ, बुज्झिज्ज लोयस्स वसं न गच्छे ॥ ३५० ॥ एवं तिरिक्खे मणुयासु (म)रेसुं, चतुरन्तऽणंतं तयणुव्विवागं । स सव्वमेयं
इति वेदइत्ता. कंखेज्ज कालं धुयमायरेज्ज ॥ १ ॥ त्तिबेमि॥ उ० २ नरकविभक्त्यध्ययनं ५॥ पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य, अगारिणो या परतित्थिआ य। से केइ णेगंतहियं धम्ममाहु
(प्र० के इमं णितियं), अणेलिसं साहु समिक्खयाए॥ २॥ कहं च णाणं कह दंसणं से, सीलं कहं नायसुतस्स आसी ?। जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुतं बूहि जहा णिसंतं॥३॥
खेयन्नए से कुसलासुपन्ने (ले महेसी प्र०), अणंतनाणी य अणंतदंसी । जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥ ४॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे
थावर जे य पाणा । से णिच्चणिच्चेहिं समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥ ५॥ से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठितप्पा । अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते
अभए अणाऊ ॥ ६ ॥ से भूइपण्णे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू । अणुत्तरं तप्पति सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥ ७॥ अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी
कासव आसुपन्ने। इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि णं विसिट्ठे ॥ ८॥ से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वावि अणंतपारे । अणाइले वा अकसाइ मुक्के (भिक्खू पा०) सक्केव
देवाहिवई जुईमं ॥ ९॥ से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे । सुरालए वासि(प्र० वावि)मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥ ३६० ॥ सयं सहस्साण उ जोयणाणं,
तिकंडगे पंडगवेजयंते । से जोयणे णवणवते सहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १ ॥ पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति। से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसी रतिं वेद-
यंती महिंदा ॥ २ ॥ से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायती कंचणमट्ठवन्ने । अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥ ३ ॥ महीइ मज्झंमि ठिते णगिंदे, पन्नायते सूरियसुद्ध-
लेसे। एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥ ४ ॥ सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई महतो पव्वयस्स । एतोवमे समणे नायपुत्ते, जातीजसोदंसणनाणसीले ॥ ५ ॥
गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं। तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥६॥ अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइ। सुसुक्कसुक्कं अप-
गंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥ ७॥ अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता । सिद्धिं गते (प्र० गतिं) साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥ ८॥ रुक्खेसु णाते जह
सामली वा, जस्सिं रतिं वेययती सुवन्ना । वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ ९ ॥ थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे। गंधेसु वा चंदणमाहु
सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥३७०॥ जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे। खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते॥ १ ॥ हत्थीसु एरावणमाहु णाए,
सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा। पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह णायपुत्ते ॥ २ ॥ जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु । खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के,
इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ ३ ॥ दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति । तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ ४ ॥ ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा
सुहम्मा व सभाण सेट्ठा। निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥५॥ पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न सण्णिहिं कुव्वति आसुपन्ने । तरिउं समुद्दं व महाभवोघं, अभयं-
करे वीर अणंतचक्खू ॥६॥ कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा। एआणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ॥७॥ किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णा-
णियाणं पडियच्च ठाणं। से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए संजमदीहरायं ॥ ८॥ से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए । लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू (११)

Jain Education International For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

वारिय सव्ववारं ॥९॥ सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं, समाहितं अट्ठपदोवसुद्धं। तं सद्दहाणा (प्र० हंता) य जणा अणाऊ, इंदा व देवाहिव आगमिस्संति॥३८०॥ त्तिबेमि॥ वीरस्तुत्यध्ययनं
६॥ पुढवी य आऊ अगणी य वाऊ, तण रुक्ख बीया य तसा य पाणा। जे अंडया जे य जराउ पाणा, संसेयया जे रसयाभिहाणा॥ १॥ एयाइं कायाइं पवेदिताइं, एतेसु जाणे पडि-
लेह सायं। एतेण (प्र० हिं) कायेण (प्र० हि) य आयदंडे, एतेसु या विप्परियासुविंति॥२॥ जाईपहं अणुपरिवट्टमाणे, तसथावरेहिं विणिघायमेति। से जातिं जातिं बहुकूरकम्मे, जं
कुव्वती मिज्जति तेण बाले॥३॥ अस्सिं च लोए अदुवा परत्था, सयग्गसो वा तह अन्नहा वा। संसारमावन्न परं परं ते, बंधंति वेदंति य दुन्नियाणि॥४॥ जे मायरं वा पियरं च हिच्चा,
समणव्वए अगणिं समारभिज्जा। अहाहु से लोए कुसीलधम्मे, भूताइं जे हिंसति आयसाते॥५॥ उज्जालओ पाण निवातएज्जा, निव्वावओ अगणि निवायवेज्जा। तम्हा उ मेहावि समि-
क्ख धम्मं, ण पंडिए अगणि समारभिज्जा॥६॥ पुढवीवि जीवा आऊवि जीवा, पाणा य संपाइम संपयंति। संसेयया कट्ठसमस्सिया य, एते दहे अगणि समारभंते॥७॥ हरियाणि
भूताणि विलंबगाणि, आहार देहा य पुढो सियाई। जे छिंदती आयसुहं पडुच्च, पागब्भि पाणे बहुणं तिवाती॥८॥ जातिं च वुड्ढिं च विणासयंते, बीयाइं अस्संजय आयदंडे। अहाहु से लोए
अणज्जधम्मे, बीयाइ जे हिंसति आयसाते॥९॥ गब्भाइं मिज्जंति बुयाबुयाणा, णरा परे पंचसिहा कुमारा। जुवाणगा मज्झिम थेरगा य (पोरुसा य पा०), चयंति ते आउखए पलीणा
॥३९०॥ संबुज्झहा जंतवो! माणुसत्तं, दट्ठुं भयं बालिसेणं अलंभो। एगंतदुक्खे जरिए व लोए, सकम्मुणा विप्परियासुवेइ॥ १॥ इहेग मूढा पवयंति मोक्खं, आहारसंपज्जणवज्जणेणं
(आहारसपंचयवज्जणेणं, आहारओ पंचकवज्जणेणं पा०)। एगे य सीओदगसेवणेणं, हुएण एगे पवयंति मोक्खं॥ २॥ पाओसिणाणादिसु णत्थि मोक्खो, खारस्स लोणस्स अणासएणं।
ते मज्जमंसं लसणं च भोच्चा, अन्नत्थ वासं परिकप्पयंति॥३॥ उदगेण जे सिद्धिमुदाहरंति, सायं च पायं उदगं फुसंता। उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी, सिज्झिंसु पाणा बहवे दगंसि
॥४॥ मच्छा य कुम्मा य सिरीसिवा य, मग्गू य उट्टा (ट्टा)दगरक्खसा य। अट्ठाणमेयं कुसला वयंति, उदगेण जे सिद्धिमुदाहरंति॥५॥ उदयं जइ कम्ममलं हरेज्जा, एवं सुहं इच्छा-
मित्तमेव। अंधं व णेयारमणुस्सरित्ता, पाणाणि चेवं विणिहंति मंदा॥६॥ पावाइं कम्माइं पकुव्वतो हि, सीओदगं तू जइ तं हरिज्जा। सिज्झिंसु एगे दगसत्तघाती, मुसं वयंते जलसिद्धि-
माहु॥७॥ हुतेण जे सिद्धिमुदाहरंति, सायं च पायं अगणिं फुसंता। एवं सिया सिद्धि हवेज्ज तम्हा, अगणिं फुसंताण कुकम्मिणंपि॥८॥ अपरिक्ख दिट्ठं ण हु एव सिद्धी, एहिंति ते
घायमबुज्झमाणा। भूएहिं जाणं पडिलेह सातं, विज्जं गहायं तसथावरेहिं॥९॥ थणंति लुप्पंति तसंति कम्मी, पुढो जगा परिसंखाय भिक्खू। तम्हा विऊ विरतो आयगुत्ते, दट्ठुं तसे
या पडिसंहरेज्जा॥४००॥ जे धम्मलद्धं विणिहाय भुंजे, वियडेण साहट्टु य जे सिणाइं। जे धोवती लूसयतीव वत्थं, अहाहु से णागणियस्स दूरे॥ १॥ कम्मं परिन्नाय दगंसि धीरे,
वियडेण जीविज्ज य आदिमोक्खं। से बीयकंदाइ अभुंजमाणे, विरते सिणाणाइसु इत्थियासु॥२॥ जे मायरं च पियरं च हिच्चा, गारं तहा पुत्तपसुं धणं च। कुलाइं जे धावइ साउगाइं,
अहाहु से सामणियस्स दूरे॥ ३॥ कुलाइं जे धावइ साउगाइं, आघाति धम्मं उदराणुगिद्धे। अहाहु से आयरियाण सयंसे, जे लावएज्जा असणस्स हेऊ॥ ४॥ णिक्खम्म दीणे परभो-
यणंमि, मुहमंगलीए उदराणुगिद्धे। नीवारगिद्धेव महावराहे, अदूरए एहिइ घातमेव॥ ५॥ अन्नस्स पाणस्सिहलोइयस्स, अणुप्पियं भासति सेवमाणे। पासत्थयं चेव कुसीलयं च,
निस्सारए होइ जहा पुलाए॥ ६॥ अण्णातपिंडेणऽहियासएज्जा, णो पूयणं तवसा आवहेज्जा। सद्देहिं रूवेहिं असज्जमाणं, सव्वेहिं कामेहिं विणीय गेहिं॥७॥ सव्वाइं संगाइं अइच्च
धीरे, सव्वाइं दुक्खाइं तितिक्खमाणे। अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयंकरे भिक्खु अणाविलप्पा॥८॥ भारस्स जाता (प्र० जत्ता) मुणि भुंजएज्जा, कंखेज्ज पावस्स विवेग भिक्खू।
दुक्खेण पुट्ठे धुयमाइएज्जा, संगामसीसे व परं दमेज्जा॥९॥ अवि हम्ममाणे फलगावतट्ठी, समागमं कंखति अंतकस्स। णिधूय कम्मं ण पवंचुवेइ, अक्खक्खए वा सगडंतिबेमि
॥४१०॥ कुशीलपरिभाषाध्ययनं ७॥ दुहा वेयं सुयक्खायं, वीरियंति पवुच्चइ। किं नु वीरस्स वीरत्तं?, कहं चेयं पवुच्चई?॥ १॥ कम्ममेगे पवेदेंति, अकम्मं वावि सुव्वया। एतेहिं दोहिं
ठाणेहिं, जेहिं दीसंति मच्चिया॥२॥ पमायं कम्ममाहंसु, अप्पमायं तहाऽवरं। तब्भावादेसओ वावि, बालं पंडियमेव वा॥ ३॥ सत्थमेगे तु सिक्खंता (प्र० सिक्खंति), अतिवायाय पाणिणं।
एगे मंते अहिज्जंति, पाणभूयविहेडिणो॥४॥ माइणो (णओ चू०) कट्टु माया य, कामभोगे समारभे (आरंभाय तिवट्टइ पा०)। हंता छेत्ता पगब्भित्ता, आयसायाणुगामिणो॥५॥ मणसा
वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो। आरओ परओ वावि, दुहावि य असंजया॥ ६॥ वेराइं कुव्वई वेरी, तओ वेरेहिं रज्जती। पावोवगा य आरंभा, दुक्खफासा य अंतसो॥ ७॥ संपरायं
णियच्छंति, अत्तदुक्कडकारिणो। रागदोसस्सिया बाला, पावं कुव्वंति ते बहुं॥८॥ एयं सकम्मवीरियं, बालाणं तु पवेदितं। इत्तो अकम्मविरियं, पंडियाणं सुणेह मे॥९॥ दविए बंध-
णुम्मुक्के, सव्वओ छिन्नबंधणे। पणोल्ल पावकं कम्मं, सल्लं कंतति अंतसो (सल्लं कंतइ अप्पणो पा०)॥४२०॥ नेयाउयं सुयक्खायं, उवादाय समीहए। भुज्जो भुज्जो दुहावासं, असुहत्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहा तहा ॥ १ ॥ ठाणी विविहठाणाणि, चइस्संति ण संसओ। अणियते अयं वासे, णायएहिं सुहीहि य ॥ २ ॥ एवमादाय मेहावी, अप्पणो गिद्धिमुद्धरे। आरियं उवसंपज्जे, सव्वधम्ममकोवियं ॥३॥ सहसंमइए णच्चा, धम्मसारं सुणेत्तु वा। समुवट्ठिए उ अणगारे (प्र० उवट्ठिए य मेहावी), पच्चक्खाए य पावए ॥ ४ ॥ जंकिंचुवक्कमं जाणे (प्र० णच्चा), आउक्खेमस्स अप्पणो। तस्सेव अंतरा खिप्पं, सिक्खं सिक्खेज्ज पंडिए ॥५॥ जहा कुम्मे सअंगाइं, सए देहे समाहरे। एवं पावाइं मेधावी, अज्झप्पेण समाहरे ॥ ६ ॥ साहरे हत्थपाए य, मणं पंचेंदियाणि (प्र० सव्वेंदियाणि) य। पावकं च परीणामं, भासादोसं च तारिसं ॥७॥ अणुमाणं च मायं च, तं पडिन्नाय पंडिए। सातागारवणिहुए, उवसंते णिहं चरे (अइमाणं च मायं च, तं परिण्णाय पंडिए। सुयं मे इहमेगेसिं, एयं वीरस्स वीरियं ॥, आयतट्ठं सुआदाय, एवं वीरस्स वीरियं पा०) ॥ ८ ॥ पाणे य णाइवाएज्जा, अदिन्नंपिय णादए। सादियं ण मुसं बूया, एस धम्मे वुसीमओ ॥ ९ ॥ अतिक्कम्मंतिवायाए, मणसावि न पत्थए। सव्वओ संवुडे दंते, आयाणं सुसमाहरे ॥४३०॥ कडं च कज्जमाणं च, आगमिस्सं च पावगं। सव्वं तं णाणुजाणंति, आयगुत्ता जिइंदिया ॥ १ ॥ जे यावुद्धा महाभागा, वीरा असमत्तदंसिणो। असुद्धं तेसिं परक्कंतं, सफलं होइ सव्वसो ॥ २ ॥ जे य बुद्धा महाभागा, वीरा सम्मत्तदंसिणो। सुद्धं तेसिं परक्कंतं, अफलं होइ सव्वसो ॥ ३ ॥ तेसिंपि तवो ण (प्र० इ) सुद्धो, निक्खंता जे महाकुला। जन्ने वन्ने वियाणंति, न सिलोगं पवेज्जए ॥ ४ ॥ अप्पपिंडासि पाणासि, अप्पं भासेज्ज सुव्वए। खंतेऽभिनिव्वुडे दंते, वीतगिद्धी सदा जए ॥ ५ ॥ झाणजोगं समाहट्टु, कायं विउसेज्ज सव्वसो। तितिक्खं परमं णच्चा, आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ ६ ॥ त्तिबेमि ॥ वीर्याध्ययनं ८ ॥

कयरे धम्मे अक्खाए, माहणेण मतीमता ?। अंजु धम्मं जहातच्चं, जिणाणं तं सुणेह मे (जणगा तं सुणेह मे पा०) ॥७॥ माहणा खत्तिया वेस्सा, चंडाला अदु बोक्कसा। एसिया वेसिया सुद्दा, जे य आरंभणिस्सिया ॥८॥ परिग्गहनिविट्ठाणं, वेरं (पावं पा०) तेसिं पवड्ढई। आरंभसंभिया कामा, न ते दुक्खविमोयगा ॥९॥ आघायकिच्चमाहेउं, नाइओ विसएसिणो। अन्ने हरंति तं वित्तं, कम्मी कम्मेहिं किच्चती ॥४४०॥ माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा। नालं ते तव ताणाय, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥ १ ॥ एयमट्ठं सपेहाए, परमट्ठाणुगामियं। निम्ममो निरहंकारो, चरे भिक्खू जिणाहियं ॥ २ ॥ चिच्चा वित्तं च पुत्ते य, णाइओ य परिग्गहं। चिच्चाण अंतगं सोयं, (चिच्चाऽणंतगं सोयं पा०) निरवेक्खो परिव्वए ॥३॥ पुढवी उ अगणी वाऊ, तणरुक्खा सबीयगा। अंडया पोयजराऊ, रससंसेयउब्भिया ॥४॥ एतेहिं छहिं काएहिं, तं विज्जं परिजाणिया। मणसा कायवक्केणं, णारंभी ण परिग्गही ॥५॥ मुसावायं बहिद्धं च, उग्गहं च अजाइया। सत्थादाणाइं लोगंसि, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ६ ॥ पलिउंचणं च भयणं च, थंडिल्लुस्सयणाणि या। धूणादाणाइं लोगंसि, तं विज्जं परिजाणिया ॥७॥ धोयणं रयणं चेव, बत्थीकम्मं विरेयणं। वमणंजण पलीमंथं, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ८ ॥ गंधमल्लसिणाणं च, दंतपक्खालणं तहा। परिग्गहित्थिकम्मं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ९ ॥ उद्देसियं कीयगडं, पामिच्चं चेव आहडं। पूयं अणेसणिज्जं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥४५०॥ आसूणिमक्खिरागं च, गिद्धुवघायकम्मगं। उच्छोलणं च कक्कं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ १ ॥ संपसारी कयकिरिए, पसिणायतणाणि य। सागारियं च पिंडं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ २ ॥ अट्ठावयं न सिक्खिज्जा, वेहाईयं च णो वए। हत्थकम्मं विवायं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ३ ॥ पाणहाओ य छत्तं च, णालीयं वालवीयणं। परकिरियं अन्नमन्नं च, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ४ ॥ उच्चारं पासवणं, हरिएसु ण करे मुणी। वियडेण वावि साहट्टु, णावमज्जे(यमेज्जा) कयाइवि ॥५॥ परमत्ते अन्नपाणं, ण भुंजेज्ज कयाइवि। परवत्थं अचेलोऽवि, तं विज्जं परिजाणिया ॥६॥ आसंदी पलियंके य, णिसिज्जं च गिहंतरे। संपुच्छणं सरणं वा, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ७ ॥ जसं कित्तिं सलोयं च, जा य वंदणपूयणा। सव्वलोयंसि जे कामा, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ८ ॥ जेणेहं णिव्वहे भिक्खू, अन्नपाणं तहाविहं। अणुप्पयाणमन्नेसिं, तं विज्जं परिजाणिया ॥ ९ ॥ एवं उदाहु निग्गंथे, महावीरे महामुणी। अणंतनाणदंसी से, धम्मं देसितवं सुतं ॥ ४६० ॥ भासमाणो न भासेज्जा, णेव वंफेज्ज मम्मयं। मातिट्ठाणं विवज्जेज्जा, अणुचिंतिय वियागरे ॥ १ ॥ तत्थिमा तइया भासा, जं वदित्ताऽणुतप्पती। जं छन्नं तं न वत्तव्वं, एसा आणा णियंठिया ॥ २ ॥ होलावायं सहीवायं, गोयावायं च नो वदे। तुमं तुमंति अमणुन्नं, सव्वसो तं ण वत्तए ॥ ३ ॥ अकुसीले सया भिक्खू, णेव संसग्गियं भए। सुहरूवा तत्थुवस्सग्गा, पडिबुज्झेज्ज ते विऊ ॥ ४ ॥ नन्नत्थ अंतराएणं, परगेहे ण णिसीयए। गामकुमारियं किड्डं, नातिवेलं हसे मुणी ॥५॥ अणुस्सुओ (अणिस्सिओ पा०) उरालेसु, जयमाणो परिव्वए। चरियाए अप्पमत्तो, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ ६ ॥ हम्ममाणो ण कुप्पेज्ज, वुच्चमाणो न संजले। सुमणे अहियासिज्जा, ण य कोलाहलं करे ॥ ७ ॥ लद्धे कामे ण पत्थेज्जा, विवेगे एवमाहिए। आयरियाइं सिक्खेज्जा, बुद्धाणं अंतिए सया ॥ ८ ॥ सुस्सूसमाणो उवासेज्जा, सुप्पन्नं सुतवस्सियं। वीरा जे अत्तपन्नेसी, धितिमन्ता जिइंदिया ॥९॥ गिहे दीवमपासंता, पुरिसादाणिया नरा। ते वीरा बंधणुम्मुक्का, नावकंखंति जीवियं ॥४७०॥ अगिद्धे सद्दफासेसु, आरंभेसु अणिस्सिए। सव्वं तं समयातीतं, जमेतं लवियं बहु ॥ १ ॥ अइमाणं च मायं च, तं परिण्णाय पंडिए। गारवाणि य सव्वाणि, णिव्वाणं संधए

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुणी ॥२॥ तिबेमि, धर्माध्ययनं ९॥ आघं मईमं मणुवीय धम्मं, अंजू समाहिं तमिणं सुणेह। अपडिन्न भिक्खू उ समाहिपत्ते, अणियाण भूतेसु परिव्वएज्जा ॥३॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा। हत्थेहिं पाएहिं य संजमित्ता, अदिन्नमन्नेसु य णो गहेज्जा ॥४॥ सुयक्खायधम्मे वितिगिच्छतिण्णे, लाढे चरे आयतुले पयासु। आयं न कुज्जा इह जीवियट्ठी, चयं न कुज्जा सुतवस्सि भिक्खू ॥५॥ सव्विंदियाभिनिव्वुडे पयासु, चरे मुणी सव्वतो विप्पमुक्के। पासाहि पाणे य पुढोवि सत्ते, दुक्खेण अट्टे परितप्पमाणे ॥६॥ एतेसु बाले य (एवं तु पा०) पकुव्वमाणे, आवट्टती (आउट्टति प्रा०) कम्मसु पावएसु। अतिवायतो कीरति पावकम्मं, निउंजमाणे उ करेइ कम्मं ॥७॥ आदीणवित्तीव करेति पावं, (आदीण भूईवि करेति पाकं पा०), मंता उ एगंतसमाहिमाहु। बुद्धे समाहीय रते विवेगे, पाणातिवाता विरते ठियप्पा (ठियच्ची पा०) ॥८॥ सव्वं जगं तू समयाणुपेही, पियमप्पियं कस्सइ णो करेज्जा। उट्ठाय दीणो य पुणो विसन्नो, संपूयणं चेव सिलोयकामी ॥९॥ आहाकडं चेव निकाममीणे, नियामचारी य विसण्णमेसी। इत्थीसु सत्ते य पुढो य बाले, परिग्गहं चेव पकुव्वमाणे ॥४८०॥ वेराणुगिद्धे (आरंभसत्तो पा०) णिचयं करेति, इओ चुते स इह (प्र० से दुह)मट्टदुग्गं। तम्हा उ मेधावि समिक्ख धम्मं, चरे मुणी सव्वउ विप्प-मुक्के ॥१॥ आयं (छंदं पा०) ण कुज्जा इह जीवियट्ठी, असज्जमाणो य परिव्वएज्जा। णिसम्मभासी य विणीय गिद्धिं, हिंसन्नियं वाण कहं करेज्जा ॥२॥ आहाकडं वा ण णिकामएज्जा, णिकामयंते य ण संथवेज्जा। धुणे उरालं अणुवेहमाणे, चिच्चाण सोयं अणवेक्खमाणो ॥३॥ एगत्तमेयं अभिपत्थएज्जा, एवं पमोक्खो न मुसंति पासं। एसप्पमोक्खो अमुसे वरेवि, अकोहणे सच्चरते तवस्सी ॥४॥ इत्थीसु या आरय मेहुणाओ, परिग्गहं चेव अकुव्वमाणे। उच्चावएसुं विसएसु ताई, निस्संसयं भिक्खु समाहिपत्ते ॥५॥ अरइं रइं च अभिभूय भिक्खू, तणाइफासं तह सीयफासं। उण्हं च दंसं चडहियासएज्जा, सुब्भि व दुब्भि व तितिक्खएज्जा ॥६॥ गुत्तो वईए य समाहिपत्तो, लेसं समाहट्टु परिवएज्जा। गिहं न छाए णवि छाय-एज्जा, संमिस्सभावं पयहे पयासु॥७॥ जे केइ लोगंमि उ अकिरियआया, अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति। आरंभसत्ता गढिता य लोए, धम्मं ण जाणंति विमुक्खहेउं ॥८॥ पुढो य छंदा इह माणवा उ, किरियाकिरियं च पुढो य वायं। जायस्स बालस्स पकुव्व देहं (जायाण बालस्स पगब्भणाए पा०), पवड्ढती वेरमसंजतस्स ॥९॥ आउक्खयं चेव अबुज्झमाणे, ममाति से साहसकारि मंदे। अहो य राओ परितप्पमाणे, अट्टेसु मूढे अजरामरेव्व ॥४९०॥ जहाहि वित्तं पसवो य सव्वं, जे बंधवा जे य पिया य मित्ता। लालप्पती सेऽविय (गंधमुवेंति पा०) एइ मोहं, अन्ने जणा तंसि हरंति वित्तं ॥१॥ सीहं जहा खुड्डमिगा चरंता, दूरे चरंती परिसंकमाणा। एवं तु मेहावी समिक्ख धम्मं, दूरेण पावं परिवज्जएज्जा ॥२॥ संबुज्झमाणे उ णरे मतीमं, पावाउ अप्पाण निवट्टएज्जा। हिंसप्पसूयाइं दुहाइं मत्ता, वेराणुबंधीणि महब्भयाणि (णिव्वाणभूते य परिव्वएज्जा चू०) ॥३॥ मुसं न बूया मुणि अत्तगामी, णिव्वाणमेयं कसिणं समाहिं। सयं न कुज्जा न य कारवेज्जा, करंतमन्नंपि य णाणुजाणे ॥४॥ सुद्धे सिया जाए न दूसएज्जा, अमुच्छिए ण य अज्झोववन्ने। धितिमं विमुक्के ण य पूयणट्ठी, न सिलोयगामी य परिव्वएज्जा ॥५॥ निक्खम्म गेहाउ निरावकंखी, कायं विउस्सेज्ज नियाणछिन्ने। णो जीवियं णो मरणाभिकंखी, चरेज्ज भिक्खू वलया विमुक्के ॥६॥ त्तिबेमि, समाध्यध्ययनं १०॥ कयरे मग्गे अक्खाए, माहणेणं मई-मता ?। जं मग्गं उज्जु पावित्ता, ओहं तरति दुत्तरं ॥७॥ तं मग्गं णुत्तरं सुद्धं, सव्वदुक्खविमोक्खणं। जाणासि णं जहा भिक्खू !, तं णो बूहि महामुणी !॥८॥ जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा। तेसिं तु कयरं मग्गं, आइक्खेज्ज ? कहाहि णो ॥९॥ जइ वो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा। तेसिमं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे (तेसिं तु इमं मग्गं, आइक्खेज्ज सुणेह मे पा०)॥५००॥ अणुपुव्वेण महाघोरं, कासवेण पवेइयं। जमादाय इओ पुव्वं, समुद्दं ववहारिणो ॥१॥ अतारिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया। तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे ॥२॥ पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी। वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥३॥ अहावरा तसा पाणा, एवं छक्काय आहिया। एतावए (प्र० इत्ताव एव) जीवकाए, णावरे कोइ विज्जई (नावरे विज्जती काए पा०) ॥४॥ सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मतिमं पडिलेहिया। सव्वे अकंतदुक्खा य, अतो सव्वे न हिंसया ॥५॥ एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसति कंचण। अहिंसा समयं चेव, एतावंतं विजाणिया ॥६॥ उड्ढं अहे य तिरियं, जे केइ तसथावरा। सव्वत्थ विरतिं विज्जा, संति निव्वाणमाहियं ॥७॥ पभू दोसे निराकिच्चा (प्र० निरिक्खित्ता), ण विरुज्झेज्ज केणई। मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो ॥८॥ संवुडे से महापन्ने, धीरे दत्तेसणं चरे। एसणासमिए णिच्चं, वज्जयंते अणेसणं ॥९॥ भूयाइं च समारंभ, तमुद्दिस्सा (प्र० भूयाइं समारंभ, समुद्दिस्सा) य जं कडं। तारिसं तु ण गिण्हेज्जा, अन्नपाणं सुसंजए ॥५१०॥ पूईकम्मं न सेविज्जा, एस धम्मे वुसीमओ। जंकिंचि अभिकंखेज्जा, सव्वसो तं न कप्पए ॥१॥ हणंतं णाणुजाणेज्जा, आयगुत्ते जिइंदिए। ठाणाइं संति सड्ढीणं, गामेसु नगरेसु वा ॥२॥ तहा गिरं समारब्भ, अत्थि पुण्णंति णो वए। अहवा णत्थि पुण्णंति, एवमेयं महब्भयं ॥३॥ दाणट्ठया य जे पाणा, हम्मंति तसथावरा। तेसिं सारक्खणट्ठाए, तम्हा अत्थित्ति णो वए ॥४॥ जेसिं तं उवकप्पंति, अन्नपाणं

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहाविहं। तेसिं लाभंतरायंति, तम्हा णत्थित्ति णो वए ॥५॥ जे य दाणं पसंसंति, वहमिच्छंति पाणिणं। जे य णं पडिसेहंति, वित्तिच्छेयं करंति ते ॥६॥ दुहओवि ते ण भासंति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो। आयं रयस्स हेच्चाणं, निव्वाणं पाउणंति ते ॥७॥ निव्वाणं परमं बुद्धा, णक्खत्ताण व चंदिमा। तम्हा सदाजए दंते, निव्वाणं संधए मुणी ॥८॥ वुज्झमाणाण पाणाणं, किच्चंताण सकम्मुणा। आघाति साहु तं दीवं, पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥९॥ आयगुत्ते सयादंते, छिन्नसोए अणासवे। जे धम्मं सुद्धमक्खाति, पडिपुन्नमणेलिसं ॥५२०॥ तमेव अविजाणंता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो। बुद्धा मोत्ति य मन्नंता, अंते एते समाहिए ॥१॥ ते य बीओदगं चेव, तमुद्दिस्सा य जे कडं। भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयन्नाऽसमाहिया ॥२॥ जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही। मच्छेसणं झियायंति, झाणं ते कलुसाधमं ॥३॥ एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया। विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ॥४॥ सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मती। उम्मग्ग(गेण)गता दुक्खं, घाय(प्र० घन्त)मेसंति तं तहा ॥५॥ जहा आसाविणिं नावं, जाइअंधो दुरूहिया। इच्छई पारमागंतुं, अंतरा य विसीयति ॥६॥ एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया। सोयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महब्भयं ॥७॥ इमं च धम्ममादाय, कासवेण पवेदितं। तरे सोयं महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए (कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स, अगिलाए समाहिए पा०) ॥८॥ विरए गामधम्मेहिं, जे केई जगई जगा। तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥९॥ अइमाणं च मायं च, तं परिन्नाय पंडिए। सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ॥५३०॥ संधए (सद्दहे पा०) साहुधम्मं च, पावधम्मं णिराकरे। उवहाणवीरिए भिक्खू, कोहं माणं ण पत्थए (प्र० च वज्जए)॥१॥ जे य बुद्धा अतिक्कंता, जे य बुद्धा अणागया। संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगती जहा ॥२॥ अह(हे)णं व(भे)यमावन्नं, फासा उच्चावया फुसे। ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएण व महागिरी ॥३॥ संवुडे से महापन्ने, धीरे (बुद्धे) दत्तेसणं चरे। निव्वुडे कालमाकंखी, एवं (यं) केवलिणो मयं ॥४॥ तिबेमि, मोक्षमार्गाध्ययनं ११॥ चत्तारि समोसरणाणिमाणि, पावादुया जाइं पुढो वयंति। किरियं अकिरियं विणियंति तइयं, अन्नाणमाहंसु चउत्थमेव ॥५॥ अण्णाणिया ता कुसलावि संता, असंथुया णो वितिगिच्छतिन्ना। अकोविया आहु अकोवियेहिं, (प्र० अकोवियत्ते), अणाणुवीइत्तु मुसं वयंति ॥६॥ सच्चं असच्चं इति चिंतयंता, असाहु साहुत्ति उदाहरंता। जेमे जणा वेणइया अणेगे, पुट्ठावि भावं विणइंसु णाम ॥७॥ अणोवसंखा इति ते उदाहू, अट्ठे स ओभासइ अम्ह एवं। लवावसंकी य अणागएहिं, णो किरियमाहंसु अकिरियवादी ॥८॥ सम्मिस्सभावं च गिरा गहीए, से मुम्मुई होइ अणाणुवाई। इमं दुपक्खं इममेगपक्खं, आहंसु छलायतणं च कम्मं ॥९॥ ते एवमक्खंति अबुज्झमाणा, विरूवरूवाणि अकिरियवाई। जे मायइत्ता बहवे मणूसा, भमंति संसारमणोवदग्गं ॥५४०॥ णाइच्चो उएइ ण अत्थमेति, ण चंदिमा वड्ढति हायती वा। सलिला ण संदंति ण वंति वाया, वंझो णियतो (प्र० वज्झे ण एते) कसिणे हु लोए ॥१॥ जहाहि अंधे सह जोतिणावि, रूवाइं णो पस्सति हीणणेत्ते। संतंपि ते एवमकिरियवाई, किरियं ण पस्संति निरुद्धपन्ना ॥२॥ संवच्छरं सुविणं लक्खणं च, निमित्तदेहं च उप्पाइयं च। अट्ठंगमेयं बहवे अहित्ता, लोगंसि जाणंति अणागताइं ॥३॥ केई निमित्ता तहिया भवंति, केसिंचि तं विप्पडिएति णाणं(प्र० माणं)। ते विज्जभावं अणहिज्जमाणा, आहंसु विज्जापरिमोक्खमेव (जाणामु लोगंसि वयंति मंदा पा०) ॥४॥ ते एवमक्खंति समिच्च लोगं, तहा तहा (गया प्र०)समणा माहणा य। सयं कडं णऽन्नकडं च दुक्खं, आहंसु विज्जाचरणं पमोक्खं ॥५॥ ते चक्खु लोगंसिह णायगा उ, मग्गाणुसासंति हितं पयाणं। तहा तहा सासयमाहु लोए, जंसी पया माणव! संपगाढा ॥६॥ जे रक्खसा वा जमलोइया वा, जे वा सुरा गंधव्वा य काया। आगासगामी य पुढोसिया जे, पुणो पुणो विप्परियासुवेंति ॥७॥ जमाहु ओहं सलिलं अपारगं, जाणाहि णं भवगहणं दुमोक्खं। जंसी विसन्ना विसयंगणाहिं, दुहओऽवि लोयं अणुसंचरंति ॥८॥ न कम्मुणा कम्म खवेंति बाला, अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा। मेधाविणो लोभमयावतीता, संतोसिणो नो पकरेंति पावं(संतोसिणो लोभभयावतीता पा०) ॥९॥ ते तीयउप्पन्नमणागयाइं, लोगस्स जाणंति तहागयाइं। णेतारो अन्नेसिं अणन्नणेया, बुद्धा हु ते अंतकडा भवंति ॥५५०॥ ते णेव कुव्वंति ण कारवंति, भूताहिसंकाइ दुगुंछमाणा। सयाजता विप्पणमंति धीरा, विण्णत्ति (ण्णाय) धीरा य हवंति एगे ॥१॥ डहरे य पाणे वुड्ढे य पाणे, ते आत्तओ (तुल्लए) पासइ सव्वलोए। उव्वेहती लोगमिणं महंतं, बुद्धेऽपमत्तेसु परिव्वएज्जा ॥२॥ जे आयओ परओ वावि णच्चा, अलमप्पणो होंति अलं परेसिं। तं जोइभूतं च सया वसेज्जा, जे पाउकुज्जा अणुवीति धम्मं ॥३॥ अत्ताण जो जाणति जो य लोगं, गइं च जो जाणइ णागइं च। जो सासयं जाण असासयं च, जातिं(च) मरणं च जणोववायं ॥४॥ अहोऽवि सत्ताण विउट्टणं च, जो आसवं जाणति संवरं च। दुक्खं च जो जाणति निज्जरं च, सो भासिउमरिहइ किरियवादं ॥५॥ सद्देसु रूवेसु असज्जमाणो, गंधेसु रसेसु अदुस्समाणे। णो जीवितं णो मरणाहिकंखी, आयाणगुत्ते वलया विमुक्के ॥६॥ त्तिबेमि, समवसरणाध्ययनं १२॥ आहत्तहीयं तु पवेयइस्सं, नाणप्पकारं पुरिसस्स जातं। सओ अ धम्मं असओ असीलं, संतिं असंतिं करिसामि पाउं ॥७॥ अहो य राओ अ समुट्ठिएहिं, तहागएहिं पडिलब्भ धम्मं। समाहिमाघातमजोसयंता, सत्थारमेवं फरुसं वयंति ॥८॥ विसोहियं ते अणुकाहयंते, जे आतभावेण वियागरेज्जा। अट्ठाणिए होइ बहूगुणाणं, जे णाणसंकाइ मुसं वदेज्जा ॥९॥ जे यावि पुट्ठा पलिउंचयंति, (१२)

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयाणमट्ठं खलु वंचयित्ता (यन्ति)। असाहुणो ते इह साहुमाणी, मायण्णि एसंति अणंतघातं (प्र० घंतं) ॥५६०॥ जे कोहणे होइ जगट्ठभासी, विओसियं जे उ उदीरएज्जा। अंधे व से दंडपहं गहाय, अविओसिए धासति पावकम्मी ॥ १॥ जे विग्गहीए अन्नायभासी, न से समे होइ अझंझपत्ते। उ(ओ)वायकारी य हरीमणे य, एगंतदिट्ठी (एगंतसट्ठी पा०) य अमाइरूवे ॥ २॥ से पेसले सुहुमे पुरिसजाए, जच्चन्निए चेव सुउज्जुयारे। बहुंपि अणुसासिए जे तहच्चा, समे हु से होइ अझंझपत्ते ॥ ३॥ जे आवि अप्पं वसुमंति मत्ता, संखाय वायं अपरिक्ख कुज्जा। तवेण वाऽहं सहिउत्ति मत्ता, अण्णं जणं पस्सति बिंबभूयं ॥ ४॥ एगंतकूडेण उ से पलेइ, ण विज्जती मोणपयंसि गोत्ते। जे माणणट्ठेण विउक्कसेज्जा, वसुमन्नतरेण अबुज्झमाणे ॥५॥ जो माहणो खत्तियजायए वा, तहुग्गपुत्ते तह लेच्छई वा। जो पव्वईए परदत्तभोई, गोत्ते ण जे थब्भति(थंभति) माणबद्धे ॥ ६॥ न तस्स जाई व कुलं व ताणं, णण्णत्थ विज्जाचरणं सुचिण्णं। णिक्खम्म से सेवइऽगारिकम्मं (प्र० मग्गं), ण से पारए होइ विमोयणाए ॥७॥ णिक्किंचणे भिक्खु सुलूहजीवी, जे गारवं होइ सलोगगामी। आजीवमेयं तु अबुज्झमाणो, पुणो पुणो विप्परियासुवेंति ॥८॥ जे भासवं भिक्खु सुसाहुवादी, पडिहाणवं होइ विसारए य। आगाढपण्णे सुविभावियप्पा, अन्नं जणं पन्नया (प्र० पन्नसा) परिहवेज्जा ॥९॥ एवं ण से होइ समाहिपत्ते, जे पन्नवं भिक्खु विउक्कसेज्जा। अहवाऽवि जे ला(प्र० लो)भमयावलित्ते, अन्नं जणं खिंसति बालपन्ने ॥५७०॥ पन्नामयं चेव तवोमयं च, णिन्नामए गोयमयं च भिक्खू। आजीवगं चेव चउत्थमाहु, से पंडिए उत्तमपोग्गले से ॥ १॥ एयाइं मयाइं विगिंच धीरा, ण ताणि सेवंति सुधीरधम्मा। ते सव्वगोत्तावगया महेसी, उच्चं अगोत्तं च गतिं वयंति ॥ २॥ भिक्खू मुयच्चे तह (प्र० सूय) दिट्ठधम्मे, गामं च णगरं च अणुपविस्सा। से एसणं जाणमणेसणं च, अन्नस्स पाणस्स अणाणुगिद्धे ॥ ३॥ अरतिं रतिं च अभिभूय भिक्खू, बहूजणे वा तह एगचारी। एगंतमोणेण वियागरेज्जा, एगस्स जंतो गतिरागती य ॥ ४॥ सयं समेच्चा अदुवाऽवि सोच्चा, भासेज्ज धम्मं हितयं पयाणं। जे गरहिया सणियाणप्पओगा, ण ताणि सेवंति सुधीरधम्मा ॥५॥ केसिंचि तक्काइ अबुज्झ भावं, खुद्दंपि गच्छेज्ज असद्दहाणे। आउस्स कालाइयारं वधाए, लद्धाणुमाणे य परेसु अट्ठे ॥ ६॥ कम्मं च छंदं च विगिंच धीरे, विणइज्ज उ सव्वओ आय (प्र० सुव्वओ, हा, पाय०) भावं। रूवेहिँ लुप्पंति भयावहेहिं, विज्जं गहाया तसथावरेहिं ॥ ७॥ न पूयणं चेव सिलोयकामी, पियमप्पियं कस्सइ णो करेज्जा। सव्वे अणट्ठे परिवज्जयंते, अणाउले या अकसाइ भिक्खू ॥ ८॥ आहत्तहीयं समुपेहमाणे, सव्वेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं। णो जीवियं णो मरणाहिकंखी, परिव्वएज्जा वलया विमुक्के ॥ ९॥ त्तिबेमि, याथातथ्याध्ययनं १३॥ गंथं विहाय इह सिक्खमाणो, उट्ठाय सुबंभचेरं वसेज्जा। ओवायकारी विणयं सुसिक्खे, जे छेए विप्पमायं न कुज्जा ॥५८०॥ जहा दियापोतमपत्तजातं, सावासगा पविउं मन्नमाणं। तमचाइयं तरुणमपत्तजातं, ढंकाइ अव्वत्तगमं हरेज्जा ॥१॥ एवं तु सेहंपि अपुट्ठधम्मं, निस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा। दियस्स छायं व अपत्तजायं, हरिंसु णं पावधम्मा अणेगे ॥२॥ ओसाणमिच्छे मणुए समाहिं, अणोसिए णंतकरिंति णच्चा। ओभासमाणे दवियस्स वित्तं, ण णिक्कसे बहिया आसुपन्नो ॥ ३॥ जे ठाणओ य सयणासणे य, परक्कमे यावि सुसाहुजुत्ते। समितीसु गुत्तीसु य आयपन्ने, वियागरिंते य पुढो वएज्जा ॥ ४॥ सद्दाणि सोच्चा अदु भेरवाणि, अणासवे तेसु परिव्वएज्जा। निहं च भिक्खू न पमाय कुज्जा, कहंकहं वा वितिगिच्छतिन्ने ॥ ५॥ डहरेण वुड्ढेणऽणुसासिए उ, रातिणिएणावि समव्वएणं। सम्मं तयं (समंतगं पा०) थिरतो णाभिगच्छे, णिज्जंतए वावि अपारए से ॥ ६॥ विउट्टितेणं समयाणुसिट्ठे, डहरेण वुड्ढेण उ चोइए य (प्र० सु)। अच्चु(प्र० अब्भु)ट्ठियाए घडदासिए वा, अगारिणं वा समयाणुसिट्ठे ॥ ७॥ ण तेसु कुज्झे ण य पव्वहेज्जा, ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा। तहा करिस्संति पडिस्सुणेज्जा, सेयं खु मेयं ण पमाय कुज्जा ॥८॥ वणंसि मूढस्स जहा अमूढा, मग्गाणुसासंति हितं पयाणं। तेणेव (तेणावि) मज्झं इणमेव सेयं, जं मे बुहा समणुसासयंति ॥९॥ अहा तेण मूढेण अमूढगस्स, कायव्व पूया सविसेसजुत्ता। एओवमं तत्थ उदाहु वीरे, अणुगम्म अत्थं उवणेति सम्मं ॥ ५९० ॥ णेता जहा अंधकारंसि राओ, मग्गं ण जाणाति अपस्समाणे। से सूरिअस्स अब्भुग्गमेणं, मग्गं वियाणाइ पगासियंसि ॥ १ ॥ एवं तु सेहेवि अपुट्ठधम्मे, धम्मं न जाणाइ अबुज्झमाणे। से कोविए जिणवयणेण पच्छा, सूरोदए पासति चक्खुणेव ॥ २॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा। सयाजए तेसु परिव्वएज्जा, मणप्पओसं अविकंपमाण ॥३॥ कालेण पुच्छे समियं पयासु, आइक्खमाणो दवियस्स वित्तं। तं सोयकारी (य) पुढो पवेसे, संखा इमं केवलियं समाहिं ॥४॥ अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण तायी, एएसु या संति निरोहमाहु। ते एवमक्खंति तिलोगदंसी, ण भुज्जमेयंति पमायसंगं ॥५॥ निसम्म से भिक्खु समीहियट्ठं, पडिभाणवं होइ विसारए य। आयाणअट्ठी वोदाणमोणं, उवेच्च सु(प्र०मु)द्धेण उवेति मोक्खं (सुद्धेण न उवेइ मारं पा०) ॥ ६॥ संखाइ धम्मं च वियागरंति, बुद्धा हु ते अंतकरा भवंति। ते पारगा दोण्हवि मोयणाए, संसोधितं पण्हमुदाहरंति ॥ ७॥ णो छायए णोऽविय लूसएज्जा, माणं ण सेवेज्ज पगासणं च। ण यावि पन्ने परिहास कुज्जा, ण याऽऽसियावाय वियागरेज्जा ॥८॥ भूताभिसंकाइ दुगुंछमाणे, ण णिव्वहे मंतपदेण गोयं। ण किंचि

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छे मणुए पयासुं, असाहुधम्माणि ण संवएज्जा ॥९॥ हासंपि णो संधति पावधम्मे, ओए तहीयं फरुसं वियाणे। णो तुच्छए णो य विकंथइज्जा, अणाइले या अकसाइ भिक्खू ॥६००॥ संकेज्ज याऽसंकितभाव भिक्खू, विभज्जवायं च वियागरेज्जा। भासादुयं धम्मसमुट्ठितेहिं, वियागरेज्जा समया सुपन्ने ॥१॥ अणुगच्छमाणे वितहं विजाणे, तहा तहा साहु अकक्कसेणं। ण कत्थई भास विहिंसइज्जा, निरुद्धगं वावि न दीहइज्जा ॥२॥ समालवेज्जा पडिपुन्नभासी, निसामिया समियाअट्ठदंसी। आणाइ सुद्धं वयणं भिउंजे, अभिसंधए पावविवेग भिक्खू ॥३॥ अहाबुइयाइं सुसिक्खएज्जा, जइज्जया णातिवेलं वदेज्जा। से दिट्ठिमं दिट्ठि ण लूसएज्जा, से जाणई भासिउं तं समाहिं ॥४॥ अलूसए णो पच्छन्नभासी, णो सुत्तमत्थं च करेज्ज ताई। सत्थारभत्ती अणुवीइ वायं, सुयं च सम्मं पडिवाययंति (प्र० येज्जा) ॥५॥ से सुद्धसुत्ते उवहाणवं च, धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ। आदेज्जवक्के कुसले वियत्ते, स अरिहइ भासिउं तं समाहिं ॥६॥ तिबेमि, ग्रन्थाध्ययनं १४॥ जमतीतं पडुप्पन्नं, आगमिस्सं च णायओ। सव्वं मन्नति तं ताई, दंसणावरणंतए ॥७॥ अंतए वितिगिच्छाए, से जाणति अणेलिसं। अणेलिसस्स अक्खाया, ण से होइ तहिं तहिं ॥८॥ तहिं तहिं सुयक्खायं, से य सच्चे सुआहिए। सया सच्चेण संपन्ने, मित्तिं भूएहिं कप्पए ॥९॥ भूएहिं न विरुज्झेज्जा, एस धम्मे बुसीमओ। बुसिमं जगं परिन्नाय, अस्सिं जीवितभावणा ॥६१०॥ भावणाजोगसुद्धप्पा, जले णावा व आहिया। नावा व तीरसंपन्ना, सव्वदुक्खा तिउट्टई ॥१॥ तिउट्टई उ मेधावी, जाणं लोगंसि पावगं। तुट्टंति पावकम्माणि, नवं कम्ममकुव्वओ ॥२॥ अकुव्वओ णवं णत्थि, कम्मं नाम विजाणइ। विन्नाय (प्र० णच्चाण) से महावीरे, जेण जाई ण मिज्जई ॥३॥ ण मिज्जई महावीरे, जस्स नत्थि पुरेकडं। वाउव्व जालमच्चेति, पिया लोगंसि इत्थिओ ॥४॥ इत्थिओ जे ण सेवंति, आइमोक्खा हु ते जणा। ते जणा बंधणुम्मुक्का, नावकंखंति जीवियं ॥५॥ जीवितं पिट्ठओ किच्चा, अंतं पावंति कम्मुणा। कम्मुणा समुहीभूता, जे मग्गमणुसासई ॥६॥ अणुसासणं पुढो पाणी, वसुमं पूयणासु(स)ते। अणासए जते (वे सया चू०) दंते, दढे आरयमेहुणे ॥७॥ णीवारे व ण लीएज्जा, छिन्नसोए अणाविले। अणाइले सया दंते, संधिं पत्ते अणेलिसं ॥८॥ अणेलिसस्स खेयन्ने, ण विरुज्झिज्ज केणइ। मणसा वयसा चेव, कायसा चेव चक्खुमं ॥९॥ से हु चक्खू मणुस्साणं, जे कंखाए य अंतए। अंतेण खुरो वहती, चक्कं अंतेण लोट्टती ॥६२०॥ अंताणि धीरा सेवंति, तेण अंतकरा इह। इह माणुस्सए ठाणे, धम्ममाराहिउं णरा ॥१॥ णिट्टियट्ठा व देवा वा, उत्तरीए इयं सुयं। सुयं च मेयमेगेसिं (प्र० हिं), अमणुस्सेसु णो तहा ॥२॥ अंतं करंति दुक्खाणं, इहमेगेसिं आहियं। आघायं पुण एगेसिं, दुल्लभेऽयं समुस्सए ॥३॥ इओ विद्धंसमाणस्स, पुणो संबोहि दुल्लभा। दुल्लहाओ तहच्चाओ, जे धम्मट्ठं वियागरे ॥४॥ जे धम्मं सुद्धमक्खंति, पडिपुन्नमणेलिसं। अणेलिसस्स जं ठाणं, तस्स जम्मकहा कओ? ॥५॥ कओ कयाइ मेधावी, उप्पज्जंति तहागया। तहागया अप्पडिन्ना, चक्खू लोगस्सऽणुत्तरा ॥६॥ अणुत्तरे य ठाणे से (प्र० य), कासवेण पवेदिते। जं किच्चा णिव्वुडा एगे, निट्ठं पावंति पंडिया ॥७॥ पंडिए वीरियं लद्धुं, निग्घायाय पवत्तगं। धुणे पुव्वकडं कम्मं, णवं वाऽवि ण कुवती ॥८॥ ण कुव्वती महावीरे, अणुपुव्वकडं रयं। रयसा संमुहीभूता, कम्मं हेच्चाण जं मयं ॥९॥ जं मयं सव्वसाहूणं, तं मयं सल्लगत्तणं। साहइत्ताण तं तिन्ना, देवा वा अभविंसु ते ॥६३०॥ अभविंसु पुरा धी(वी)रा, आगमिस्सावि सुव्वता। दुन्निबोहस्स मग्गस्स, अंतं पाउकरा तिन्ने ॥६३१॥ त्तिबेमि, आदानीयाध्ययनं १५॥ अहाह भगवं-एवं (से ×) दंते दविए वोसट्ठकाएत्ति वा १ समणेत्ति वा २ भिक्खूत्ति वा ३ णिग्गंथेत्ति वा ४। पडिआह-भंते! कहं नु दंते दविए वोसट्ठकाएत्ति वच्चे माहणेत्ति वा समणेत्ति वा भिक्खूत्ति वा णिग्गंथेत्ति वा? तं नो बूहि महामुणी!, इतिविरए सव्वपावकम्मेहिं पिज्जदोसकलह० अब्भक्खाण० पेसुन्न० परपरिवाय० अरतिरति० मायामोस० मिच्छादंसणसल्लविरए समिए सहिए सयाजए णो कुज्झे णो माणी माहणेत्ति वच्चे १, एत्थवि समणे अणिस्सिए अणियाणे आदाणं च अतिवायं च मुसावायं च बहिद्धं च कोहं च माणं च मायं च लोहं च पिज्जं च दोसं च इच्चेव जओ जओ आदाणं अप्पणो पदोसहेऊ तओ तओ आदाणातो पुव्वं पडिविरते विरए पाणातिवायाओ सिआ दंते दविए वोसट्ठकाए समणेत्ति वच्चे २, एत्थवि भिक्खू अणुन्नए विणीए नामए दंते दविए वोसट्ठकाए संविधुणीय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अज्झप्पजोगसुद्धादाणे उवट्ठिए ठिअप्पा संखाए परदत्तभोई भिक्खूत्ति वच्चे ३, एत्थवि णिग्गंथे एगे एगविऊ बुद्धे संछिन्नसोए सुसंजते सुसमिते सुसामाइए आयवाय-पत्ते विऊ दुहओवि सोयपलिच्छिन्ने णो पूयासक्कारलाभट्ठी धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवन्ने समि(म)यं चरे दंते दविए वोसट्ठकाए निग्गंथेत्ति वच्चे ४, से एवमेव जाणह जमहं भयंतारो ॥सू० १॥ त्तिबेमि, गाथाध्ययनं १६॥ प्रथमः श्रुतस्कन्धः॥ 卐 ❁ 卐 सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु पोंडरीए णामज्झयणे, तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते-से जहाणामए पुक्खरिणी सिया बहुउदगा बहुसेया बहुपुक्खला लद्धट्ठा पुंडरीकिणी पासादीया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तीसे णं पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया, अणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला वण्णमंता गंधमंता रसमंता फासमंता पासादीया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा, तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झ-

मुनि दीपरत्नसागर
Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

देसभाए एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए, अणुपुव्वुट्ठिए उस्सिते रुइले वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते पासादीए जाव पडिरूवे, सव्वावंति च णं तीसे पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया अणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला जाव पडिरूवा, सव्वावंति च णं तीसे णं पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगं महं पउमवरपोंडरीए बुइए अणुपुव्वुट्ठिए जाव पडिरूवे ॥२॥ अह पुरिसे पुरित्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणीं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं ऊसियं जाव पडिरूवं। तए णं से पुरिसे एवं वयासी-अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पंडिते वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामित्तिकट्टु इति बुया (प्र० वुच्चा) से पुरिसे अभिक्कमेति तं पुक्खरिणीं, जावं जावं च णं अभिक्कमेइ तावं तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं अपत्ते पउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि निसण्णे, पढमे पुरिसजाए ! ॥३॥ अहावरे दोच्चे पुरिसजाए, अह पुरिसे दक्खिणाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं (प्र० महन्तं) एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं पासादीयं जाव पडिरूवं, तं च एत्थ एगं पुरिसजातं पासति पहीणतीरं अपत्तपउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि णिसन्नं, तए णं से पुरिसे एवं वयासी-अहो णं इमे (प्र० अयं) पुरिसे अखेयन्ने अकुसले अपंडिए अवियत्ते अमेहावी बाले णो मग्गत्थे णो मग्गविऊ णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू जन्नं एस पुरिसे, अहं खेयन्ने कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामि, णो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्निक्खेवियव्वं जहा णं एस पुरिसे मन्ने, अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पंडिए वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामित्तिकट्टु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं, जावं जावं च णं अभिक्कमेइ तावं तावं च णं महंते उदए महंते सेए पहीणे तीरं अपत्ते पउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि (प्र० जाव) णिसन्ने दोच्चे पुरिसजाते ॥ ४ ॥ अहावरे तच्चे पुरिसजाते, अह पुरिसे पच्चत्थिमाओ (एवं चत्तारि णेयव्वा प्र०) दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं एगं महं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं जाव पडिरूवं, ते तत्थ दोन्नि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं अपत्ते पउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए जाव सेयंसि णिसन्ने, तए णं से पुरिसे एवं वयासी- अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना अकुसला अपंडिया अवियत्ता अमेहावी बाला णो मग्गत्था णो मग्गविऊ णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू, जं णं एते पुरिसा एवं मन्ने-अम्हे एतं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिविस्सामो, नो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्निक्खेवेतव्वं जहा णं एए पुरिसा मन्ने, अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पंडिए वियत्ते मेहावी अबाले मग्गत्थे मग्गविऊ मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामित्तिकट्टु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं जावं जावं च णं अभिक्कमे तावं तावं च णं महंते उदए महंते सेए जाव अंतरा पोक्खरिणीए सेयंसि णिसन्ने, तच्चे पुरिसजाए ॥ ५ ॥ अहावरे चउत्थे पुरिसजाए, अह पुरिसे उत्तराओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं, तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं अणुपुव्वुट्ठियं जाव पडिरूवं ते तत्थ तिन्नि पुरिसजाते पासति पहीणे तीरं अपत्ते जाव सेयंसि णिसन्ने, तए णं से पुरिसे एवं वयासी-अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू जण्णं एते पुरिसा एवं मन्ने-अम्हे एतं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामो णो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्निक्खेवेयव्वं जहा णं एते पुरिसा मन्ने, अहमंसि पुरिसे खेयन्ने जाव मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामित्तिकट्टु इति वुच्चा से पुरिसे तं पुक्खरिणिं जावं जावं च णं अभिक्कमे तावं तावं च णं महंते उदए महंते सेए जाव णिसन्ने, चउत्थे पुरिसजाए ॥ ६ ॥ अह भिक्खू लूहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव गतिपरक्कमण्णू अन्नतराओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासति तं महं एगं पउमवरपोंडरीयं जाव पडिरूवं, ते तत्थ चत्तारि पुरिसजाए पासति पहीणे तीरं अपत्ते पउमवरपोंडरीयं णो हव्वाए णो पाराए अंतरा पुक्खरिणीए सेयंसि णिसन्ने (प्र० विसन्ने), तए णं से भिक्खू एवं वयासी-अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव णो मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू, जं एते पुरिसा एवं मन्ने अम्हे एयं पउमवरपोंडरीयं उन्निक्खिविस्सामो, णो य खलु एयं पउमवरपोंडरीयं एवं उन्निक्खेवेतव्वं जहा णं एते पुरिसा मन्ने, अहमंसि भिक्खू लूहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव मग्गस्स गतिपरक्कमण्णू, अहमेयं पउमवरपोंडरीयं उण्णिक्खिविस्सामि(×त्तिकट्टु) इति वुच्चा से भिक्खू णो अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं, तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा सद्दं कुज्जा-उप्पयाहि खलु भो पउमवरपोंडरीया! उप्पयाहि०, अह से उप्पतिते पउमवरपोंडरीए ॥७॥ किट्टिए नाए समणाउसो!, अट्ठे पुण से जाणितव्वे भवति, भंतेत्ति समणं भगवं महावीरं निग्गंथा य निग्गंथीओ य वंदंति नमंसंति वंदेत्ता नमंसित्ता एवं वयासी-किट्टिए नाए समणाउसो!, अट्ठं पुण से ण जाणामो समणाउसोत्ति, समणे भगवं महावीरे ते य बहवे निग्गंथे य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी-हंत समणाउसो! आइक्खामि विभावेमि किट्टेमि पवेदेमि सअट्ठं सहेउं सनिमित्तं भुज्जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुज्जो उवदंसेमि ॥८॥ से बेमि लोयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! सा पुक्खरिणी बुइया, कम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उदए बुइए, कामभोगे य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सेए बुइए, जणं जाणवयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते बहवे पउमवरपोंडरीया बुइया, रायाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एगे महं पउमवरपोंडरीए बुइए, अन्नउत्थिया य खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! ते चत्तारि पुरिसजाया बुइया, धम्मं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से भिक्खू बुइए, धम्मतित्थं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से तीरे बुइए, धम्मकहं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से सद्दे बुइए, निव्वाणं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से उप्पाए बुइए, एवमेयं च खलु मए अप्पाहट्टु समणाउसो ! से एवमेयं बुइयं ॥९॥ इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा० संतेगतिया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोगं (प्र०लोगत्तं) उववन्ना, तंजहा- आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोत्ता वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे रहस्समंता वेगे सुवन्ना वेगे दुव्वन्ना वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे, तेसिं च णं मणुयाणं एगे राया भवइ, महया(प्र० महा)-हिमवंतमलयमंदरमहिंदसारे अच्चंतविसुद्धरायकुलवंसप्पसूते निरंतररायलक्खणविराइयंगमंगे बहुयणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुदिए मुद्धाभिसित्ते माउपिउसुजाए दयप्पिए सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे नरपवरे पुरिसपवरे पुरिससीहे पुरिसआसीविसे पुरिसवरपोंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधणबहुजातरूवरतए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूते पडिपुण्णकोसकोट्ठागाराउहागा(प्र० ग)रे बलवं दुब्बलपच्चामित्ते ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तू निहयसत्तू मलियसत्तू उद्धियसत्तू निज्जियसत्तू पराइयसत्तू ववगयदुब्भिक्खमारिभयविप्पमुक्कं रायवन्नओ जहा उववाइए जाव पसंतडिंबडमरं रज्जं पसाहेमाणे विहरति। तस्स णं रन्नो परिसा भवइ- उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता इक्खागाइ इक्खागाइपुत्ता नाया नायपुत्ता कोरव्वा कोरव्वपुत्ता भट्टा भट्टपुत्ता माहणा माहणपुत्ता लेच्छई लेच्छइपुत्ता पसत्थारो पसत्थपुत्ता सेणावई सेणावइपुत्ता, तेसिं च णं एगतीए सड्ढी भवइ कामं तं समणा वा माहणा वा संपहारिंसु गमणाए, तत्थ अन्नतरेणं धम्मेणं पन्नत्तारो वयं इमेणं धम्मेणं पन्नवइस्सामो, से एवमायाणह भयंतारो जहा मए एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ, तंजहा- उड्ढं पादतला अहे केसग्गमत्थया तिरियं तयपरियंते जीवे एस आयापज्जवे कसिणे एस जीवे जीवति एस मए णो जीवइ, सरीरे धरमाणे धरइ विणट्ठंमि य णो धरइ, एयंतं जीवियं भवति, आदहणाए परेहिं निज्जइ, अगणिझामिए सरीरे कवोतवन्नाणि अट्ठीणि भवंति, आसंदीपंचमा पुरिसा गामं पच्चागच्छंति, एवं असंते असंविज्जमाणे जेसिं तं असंते असंविज्जमाणे तेसिं तं सुयक्खायं भवति, अन्नो भवति जीवो अन्नं सरीरं, तम्हा, ते एवं नो विपडिवेदेंति- अयमाउसो ! आया दीहेति वा हस्सेति वा परिमंडलेति वट्टेति वा तंसेति वा चउरंसेति वा आयतेति वा छलंसिएति वा अट्ठंसेति वा किण्हेति वा णीलेति वा लोहियहालिद्दे (प्र० जाव) सुक्किल्लेति वा सुब्भिगंधेति वा दुब्भिगंधेति वा तित्तेति वा कडुएति वा कसाएति वा अंबिलेति वा (प्र० जाव) महुरेति वा कक्खडेति वा मउएति वा गुरुएति वा लहुएति वा सिएति वा उसिणेति वा निद्धेति वा लुक्खेति वा, एवं असंते असंविज्जमाणे जेसिं तं सुयक्खायं भवति- अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, तम्हा, ते णो एवं उवलब्भंति से जहाणामए केइ पुरिसे कोसीओ असिं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! असी अयं कोसी, एवमेव णत्थि केइ पुरिसे अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेत्तारो (प्र० उवदंसेइ) अयमाउसो ! आया इयं सरीरं, से जहाणामए केइ पुरिसे मुंजाओ इसियं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! मुंजे इयं इसियं, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदंसेत्तारो अयमाउसो ! आया इयं सरीरं, से जहानामए केइ पुरिसे मंसाओ अट्ठिं अभिनिव्वट्टत्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! मंसे अयं अट्ठी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदंसेत्तारो अयमाउसो ! आया इयं सरीरं, से जहाणामए केइ पुरिसे करयलाओ आमलगं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो । करतले अयं आमलए एमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदंसेत्तारो अयमाउसो ! आया इयं सरीरं, से जहाणामए केइ पुरिसे दहिओ नवनीयं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! नवनीयं अयं तु दही, एवमेव णत्थि केइ पुरिसे जाव सरीरं, से जहाणामए केइ पुरिसे तिलेहिंतो तिल्लं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! तेल्लं अयं पिन्नाए, एवमेव जाव सरीरं, से जहाणामए केइ पुरिसे इक्खूतो खोतरसं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! खोतरसे अयं छोए एवमेव जाव सरीरं, से जहाणामए केइ पुरिसे अरणीतो अग्गिं अभिनिव्वट्टित्ताणं उवदंसेज्जा अयमाउसो ! अरणी अयं अग्गी एवमेव जाव सरीरं, एवं असंते असंविज्जमाणे जेसिं तं सुयक्खायं भवति, तं० अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, तम्हा ते मिच्छा, से हंता तं हणह खणह छणह डहह पयह आलुंपह विलुंपह सहसाक्कारेह विपरामुसह, एतावताव जीवे णत्थि परलोए, ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तं०- किरियाइ वा अकिरियाइ वा सुक्कडेइ वा दुक्कडेइ वा कल्लाणेइ वा पावएइ वा साहुइ वा असाहुइ वा सिद्धीइ वा असिद्धीइ वा निरएइ वा अनिरएइ वा, एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारभंति भोयणाए, एवं एगे पागब्भिया णिक्खम्म मामगं धम्मं पन्नवेंति तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा साहु सुयक्खाए समणेति वा माहणेति वा (१३)

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

कामं खलु आउसो! तुमं पूययामि, तंजहा-असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कंबलेण वा पायपुंछणेण वा, तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु तत्थेगे पूयणाए निकाइंसु, पुव्वमेव तेसिं णायं भवति-समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता (प्र० अपत्ता)अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो पावं कम्मं णो करिस्सामो समुट्ठाए ते अप्पणा अप्पडिविरया भवंति, सयमाइयंति अन्नेवि आदियावेंति अन्नंपि आयतंतं समणुजाणंति, एवमेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववन्ना लुद्धा रागदोसव-सट्टा, ते णो अप्पाणं समुच्छेदेंति ते णो परं समुच्छेदेंति ते णो अण्णाइं पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समुच्छेदेंति, पहीणा पुव्वसंजोगं आयरियं मग्गं असंपत्ता इति ते णो हव्वाए णो पाराए अंतरा कामभोगेसु विसन्ना इति पढमे पुरिसजाए तज्जीवतच्छरीरएत्ति आहिए ॥१०॥ अहावरे दोच्चे पुरिसजाए पंचमहब्भूतिएत्ति आहिज्जइ, इह खलु पाइणं वा ६ संतेगतिया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोयं उववन्ना, तंजहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे एवं जाव दुरूवा वेगे, तेसिं च णं महं एगे राया भवइ महया० एवं चेव णिरवसेसं जाव सेणावइपुत्ता, तेसिं च णं एगतिए सड्ढी भवति कामं तं समणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए, तत्थ अन्नयरेणं धम्मेणं पन्नत्तारो वयं इमेणं धम्मेणं पन्नवइस्सामो से एवमायाणह भयंतारो ! जहा मए एस धम्मे सुअक्खाए (प्र० जाव) सुपन्नत्ते भवति ॥ इह खलु पंच महब्भूता, जेहिं नो विज्जइ (प्र० तो कज्जइ) किरियाति वा अकिरियाइ वा सुक्कडेति वा दुक्कडेति वा कल्लाणेति वा पावएति वा साहुति वा असाहुति वा सिद्धीति वा असिद्धीति वा (प्र० जाव) णिरएति वा अणिरएति वा अवि अंतसो तणमायमवि, तं च पिहुद्देसेणं पुढोभूतसमवातं जाणेज्जा, तंजहा-पुढवी एगे महब्भूते आऊ दुच्चे महब्भूते तेऊ तच्चे महब्भूते वाऊ चउत्थे महब्भूते आगासे पंचमे महब्भूते, इच्चेते पंच महब्भूया अणिम्मिया अणिम्माविता अकडा णो कित्तिमा णो कडगा अणाइया अणिहणा अवंझा अपुरोहिता सतंता सासता आयछट्ठा, पुण एगे एवमाहु-सतो णत्थि विणासो असतो णत्थि संभवो, एतावताव जीवकाए, एतावताव अत्थिकाए, एतावताव सव्वलोए, एतं मुहं लोगस्स करणयाए, अवियंतसो तणमायमवि, से किणं किणावेमाणे हणं घायमाणे पयं पयावेमाणे अवि अंतसो पुरिसमवि कीणित्ता घायइत्ता एत्थंपि जाणाहि णत्थित्थ दोसो, ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तंजहा-किरियाइ वा जावऽणिरएइ वा, एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारभंति भोयणाए, एवमेव ते अणारिया विप्पडिवन्ना ते सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा जाव इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु (प्र० जाव) विसण्णा, दोच्चे पुरिसज्जाए पंचमहब्भूतिएत्ति आहिए ॥ ११ ॥ अहावरे तच्चे पुरिसजाए ईसरकारणिए इति आहिज्जइ, इह खलु पादीणं वा ६ संतेगतिया मणुस्सा भवंति अणुपुव्वेणं लोयं उववन्ना, तं०-आरिया वेगे जाव तेसिं च णं महंते एगे राया भवइ जाव सेणावइपुत्ता, तेसिं च णं एगतीए सड्ढी भवइ, कामं तं समणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए जाव जहा मए एस धम्मे सुअक्खाए सुपन्नत्ते भवइ ॥ इह खलु धम्मा पुरिसादिया पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससंभूया पुरिसपज्जोतिता पुरिसअभिसमण्णागया पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, से जहाणामए गंडे सिया सरीरे जाए सरीरे संवुड्ढे सरीरे अभिसमण्णागए सरीरमेव अभिभूय चिट्ठति एवमेव धम्मा पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, से जहाणामए अरई सिया सरीरे जाया सरीरे संवुड्ढा सरीरे अभि-समण्णगया सरीरमेव अभिभूय चिट्ठति एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, से जहाणामए वम्मिए सिया पुढविजाए पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, से जहाणामए रुक्खे सिया पुढविजाए पुढविसंवुड्ढे पुढविअभिसमण्णागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठति एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, से जहाणामए पुक्खरिणी सिया पुढविजाया जाव पुढविमेव अभिभूय चिट्ठति एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, से जहाणामए उदगपुक्खले सिया उदगजाए जाव उदगमेव अभिभूय चिट्ठति एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभि-भूय चिट्ठंति, से जहाणामए उदगबुब्बुए सिया उदगजाए जाव उदगमेव अभिभूय चिट्ठति एवमेव धम्मावि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति, जंपिय इमं समणाणं णिग्गं-थाणं उद्दिट्ठं पणीयं वियंजियं दुवालसंगं गणिपिडयं, तंजहा-आयारो सूयगडो जाव दिट्ठिवातो, सव्वमेयं मिच्छा ण एयं तहियं ण एयं आहातहियं, इमं सच्चं इमं तहियं इमं आहा-तहियं, ते एवं सन्नं कुव्वंति, ते एवं सन्नं संठवेंति, ते एवं सन्नं सोवट्ठवयंति, तमेवं ते तज्जाइयं दुक्खं णातिउट्टंति सउणी पंजरं जहा, ते णो एवं विप्पडिवेदेंति, तंजहा-किरियाइ वा जाव अणिरएइ वा, एवामेव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए, एवामेव ते अणारिया विप्पडिवन्ना एवं सद्दहमाणा जाव इति ते णो हव्वाए णो पाराए, अंतरा कामभोगेसु विसण्णेति, तच्चे पुरिसजाए ईसरकारणिएत्ति आहिए ॥१२॥ अहावरे चउत्थे पुरिसजाए णियतिवाइएत्ति आहिज्जइ, इह खलु पाईणं वा ६ तहेव जाव सेणावइपुत्ता वा, तेसिं च णं एगतीए सड्ढी भवइ, कामं तं समणा य माहणा य संपहारिंसु गमणाए जाव मए एस धम्मे सुअक्खाए सुपन्नत्ते भवइ, इह खलु दुवे पुरिसा भवंति एगे पुरिसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किरियमाइक्खइ एगे पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ जे य पुरिसे किरियमाइक्खइ जे य पुरिसे णोकिरियमाइक्खइ दोवि ते पुरिसा तुल्ला एगट्ठा कारणमावन्ना, बाले पुण एवं विप्पडिवेदेंति
कारणमावन्ने अहमंसि दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा अहमेयमकासि परो वा जं दुक्खइ वा सोयइ वा जूरइ वा तिप्पइ वा पीडइ वा
परितप्पइ वा परो एवमकासि, एवं से बाले सकारणं वा परकारणं वा एवं विप्पडिवेदेंति कारणमावन्ने, मेहावी पुण एवं विप्पडिवेदेंति कारणमावन्ने-अहमंसि दुक्खामि वा सोयामि वा
जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा णो अहं एवमकासि परो वा जं दुक्खइ वा जाव परितप्पइ वा णो परो एवमकासि, एवं से मेहावी सकारणं वा परकारणं वा एवं
विप्पडिवेदेंति कारणमावन्ने, से बेमि पाईणं वा ६ जे तसथावरा पाणा ते एवं संघायमागच्छंति ते एवं विपरियासमावज्जंति ते एवं विवेगमागच्छंति ते एवं विहाणमागच्छंति ते एवं संगति-
यंति उवेहाए, णो एवं विप्पडिवेदेंति, तंजहा-किरियाति वा जाव अणिरएति वा, एवं ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारंभेहिं विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारभंति भोयणाए, एवमेव ते अणा-
रिया विप्पडिवन्ना तं सद्दहमाणा जाव इति ते णो हव्वाए णो पाराए अंतरा कामभोगेसु विसण्णा, चउत्थे पुरिसजाए णियइवाइएत्ति आहिए॥ इच्चेते चत्तारि पुरिसजाया णाणापन्ना
णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाअज्झवसाणसंजुत्ता पहीणपुव्वसंजोगा आरियं मग्गं असंपत्ता इति ते णो हव्वाए णो पाराए अंतरा कामभोगेसु विसण्णा॥१३॥
से बेमि पाईणं वा ६ संतेगतिया मणुस्सा भवंति, तंजहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे रहस्समंता वेगे सुवन्ना वेगे दुवन्ना वेगे सुरूवा वेगे
दुरूवा वेगे, तेसिं च णं जणजाणवयाइं (प्र० खेत्तवत्थूणि) परिग्गहियाइं भवंति, तं०-अप्पयरा वा भुज्जयरा वा, तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिता
सतो वावि एगे णायओ (अणायओ) य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिता असतो वावि एगे णायओ (अणायओ) य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समु-
ट्ठिता, जे ते सतो वा असतो वा णायओ य अणायओ य उवगरणं च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिता पुव्वमेव तेहिं णायं भवइ, तंजहा-इह खलु पुरिसे अन्नमन्नं ममट्ठाए एवं
विप्पडिवेदेंति, तंजहा-खेत्तं मे वत्थू मे हिरण्णं मे सुवन्नं मे धणं मे धण्णं मे कंसं मे दूसं मे विपुलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतेयं मे सद्दा मे
रूवा मे गंधा मे रसा मे फासा मे, एते खलु मे कामभोगा अहमवि एतेसिं, से मेहावी पुव्वामेव अप्पणो एवं समभिजाणेज्जा, तंजहा-इह खलु मम अन्नयरे दुक्खे रोयातंके समुप्प-
ज्जेज्जा अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुन्ने अमणामे दुक्खे णो सुहे से हंता भयंतारो! कामभोगाइं मम अन्नयरं दुक्खं रोयातंकं परियाइयह अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अम-
णुन्नं अमणामं दुक्खं णो सुहं, ताऽहं दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा इमाओ मे अण्णयराओ दुक्खाओ रोगातंकाओ पडिमोयह अणि-
ट्ठाओ अकंताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुन्नाओ अमणामाओ दुक्खाओ णो सुहाओ, एवामेव णो लद्धपुव्वं भवइ, इह खलु कामभोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा, पुरिसे वा
एगता पुव्विं कामभोगे विप्पजहति, कामभोगा वा एगता पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति, अन्ने खलु कामभोगा अन्नो अहमंसि, से किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो?
इति संखाए णं वयं च कामभोगेहिं विप्पजहिस्सामो, से मेहावी जाणेज्जा बहिरंगमेतं, इणमेव उवणीयतरागं, तंजहा-माया मे पिता मे भाया मे भगिणी मे भज्जा मे पुत्ता मे धूता
मे पेसा मे नत्ता मे सुण्हा मे सुही मे पिया मे सहा मे सयणसंगंथसंथुया मे, एते खलु मम णायओ अहमवि एतेसिं, एवं से मेहावी पुव्वामेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा, इह खलु
मम अन्नयरे दुक्खे रोयातंके समुप्पज्जेज्जा अणिट्ठे जाव दुक्खे णो सुहे, से हंता भयंतारो! णायओ इमं मम अन्नयरं दुक्खं रोयातंकं परियाइयह अणिट्ठं जाव णो सुहं, ताऽहं
दुक्खामि वा सोयामि वा जाव परितप्पामि वा, इमाओ मे अन्नयरातो दुक्खाओ रोयातंकाओ परिमोएह अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ, एवमेव णो लद्धपुव्वं भवइ, तेसिं वावि भयं-
ताराणं मम णाययाणं अन्नयरे दुक्खे रोयातंके समुप्पज्जेज्जा अणिट्ठे जाव णो सुहे, से हंता अहमेतेसिं भयंताराणं णाययाणं इमं अन्नयरं दुक्खं रोयातंकं परियाइयामि अणिट्ठं जाव णो
सुहं मा मे दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु वा, इमाओ णं अण्णयराओ दुक्खातो रोयातंकाओ परिमोएमि अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ, एवमेव णो लद्धपुव्वं भवइ, अन्नस्स दुक्खं अन्नो न
परियाइयति अन्नेण कडं अन्नो नो पडिसंवेदेति पत्तेयं जायति पत्तेयं मरइ पत्तेयं चयइ पत्तेयं उववज्जइ पत्तेयं झंझा पत्तेयं सन्ना पत्तेयं मन्ना एवं विन्नू वेदणा, इह (इ) खलु णाति-
संजोगा णो ताणाए वा णो सरणाए वा, पुरिसे वा एगता पुव्विं णातिसंजोए विप्पजहति, णातिसंजोगा वा एगता पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति, अन्ने खलु णातिसंजोगा अन्नो अहमंसि, से
किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहिं णातिसंजोगेहिं मुच्छामो?, इति संखाए णं वयं णातिसंजोगं विप्पजहिस्सामो, से मेहावी जाणेज्जा बहिरंगमेयं, इणमेव उवणीयतरागं, तंजहा-हत्था मे पाया
मे बाहा मे ऊरू मे उदरं मे सीसं मे सीलं मे आऊ मे बलं मे वण्णो मे तया मे छाया मे सोयं मे चक्खू मे घाणं मे जिब्भा मे फासा मे ममाइज्जइ, वयाउ पडिजूरइ, तंजहा-आउओ

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ जाव फासाओ सुसंधितो संधी विसंधीभवइ, वलियतरंगे गाए भवइ, किण्हा केसा पलिया भवंति, तंजहा-जंपि य इमं सरीरगं उरालं आहारोवइयं एयंपि य अणुपुव्वेणं विप्पजहियव्वं भविस्सति, एयं संखाए से भिक्खू भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोगं जाणेज्जा, तं०-जीवा चेव अजीवा चेव, तसा चेव थावरा चेव॥१४॥ इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगइया माहणावि सारंभा सपरिग्गहा, जे इमे तसा थावरा पाणा ते सयं समारभंति अन्नेणवि समारंभावेंति अण्णंपि समारभंतं समणुजाणंति, इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा, संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा ते सयं परिगिण्हंति अन्नेणवि परिगिण्हावेंति अन्नंपि परिगिण्हंतं समणुजाणंति, इह खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा अहं खलु अणारंभे अपरिग्गहे, जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा एतेसिं चेव निस्साए बंभचेरवासं वसिस्सामो, कस्स णं तं हेउं?, जहा पुव्वं तहा अवरं जहा अवरं तहा पुव्वं, अंजू एते अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव, जे खलु गारत्था सारंभा सपरिग्गहा संतेगतिया समणा माहणावि सारंभा सपरिग्गहा दुहतो पावाइं कुव्वंति इति संखाए दोहिवि अंतेहिं अदिस्समाणो इति भिक्खू रीएज्जा, से बेमि पाईणं वा ६ जाव एवं से परिण्णायकम्मे, एवं से ववेयकम्मे, एवं से विअंतकारए भवतीति मक्खायं ॥ १५ ॥ तत्थ खलु भगवता छज्जीवनिकाया हेऊ पण्णत्ता, तंजहा-पुढवीकाए जाव तसकाए, से जहाणामए मम अस्सायं दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा आउट्टिज्जमाणस्स वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परियाविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि, इच्चेवं जाण सव्वे जीवा सव्वे भूता सव्वे पाणा सव्वे सत्ता दंडेण वा जाव कवालेण वा आउट्टिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परियाविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति, एवं नच्चा सव्वे पाणा जाव सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा, से बेमि जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहंता भगवंतो सव्वे ते एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति-सव्वे पाणा जाव सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेतव्वा ण परितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा एस धम्मे धुवे णीतिए सासए समिच्च लोगं खेयन्नेहिं पवेदिए, एवं से भिक्खू विरते पाणातिवायातो जाव विरते परिग्गहातो णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा णो अंजणं णो वमणं णो धूवणे णो तं परिआविएज्जा॥ से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसंते परिनिव्वुडे णो आसंसं पुरतो करेज्जा इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण वा विन्नाएण वा इमेण वा सुचरियतवनियमबंभचेरवासेण इमेण वा जायामायावत्तिएणं धम्मेणं इओ चुए पेच्चा देवे सिया कामभोगाण वसवत्ती सिद्धे वा अदुक्खमसु(भासु)भे एत्थवि सिया एत्थवि णो सिया, से भिक्खू सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गंधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहिं अमुच्छिए विरए कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ इति से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते से भिक्खू, जे इमे तसथावरा पाणा भवंति ते णो सयं समारंभइ णो वऽण्णेहिं समारंभावेति अन्ने समारभंतेऽवि न समणुजाणति इति से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते से भिक्खू, जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा ते णो सयं परिगिण्हति णो अन्नेणं परिगिण्हावेति अन्नं परिगिण्हंतंपि ण समणुजाणति इति से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते, से भिक्खू जंपिय इमं संपराइयं कम्मं कज्जइ णो तं सयं करेति णो अण्णाणं कारवेति अन्नंपि करेंतं ण समणुजाणइ इति, से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते, से भिक्खू जाणेज्जा असणं वा ४ अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समारंभ समुद्दिस्स कीतं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टुद्देसियं तं चेतियं सिया, तं अह पुण एवं जाणेज्जा विज्जति तेसिं परक्कमे जस्सट्ठाए चेइअं सिआ तंजहा-अप्पणो पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं धाईणं णातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाणं पुढोपहेणाए सामासाए पातरासाए सन्निही सन्निचए कज्जइ इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए णो सयं भुंजइ णो अण्णेणं भुंजावेति अन्नंपि भुंजंतं ण समणुजाणइ इति, से महतो आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरते॥ तत्थ भिक्खू परकडं परणिट्ठितमुग्गमुप्पायणेसणासुद्धं सत्थाईयं सत्थपरिणामियं अविहिंसियं एसियं वेसियं सामुदाणियं पत्तमसणं कारणट्ठा पमाणजुत्तं अक्खोवंजणवणलेवणभूयं संजमजायामायावत्तियं बिलमिव पन्नगभूतेणं अप्पाणेणं आहारं आहारेज्जा अन्नं अन्नकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले, से भिक्खू मायन्ने अन्नयरं दिसं अणुदिसं वा पडिवन्ने धम्मं आइक्खे विभए किट्टे उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए, संतिविरतिं उवसमं निव्वाणं सोयवियं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणतिवातियं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूताणं जाव सत्ताणं अणुवाइं किट्टए धम्मं, से भिक्खू धम्मं किट्टमाणे

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णो अन्नस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो वत्थस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो सयणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो अन्नेसिं विरूवरूवाणं कामभोगाणं हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा, नन्नत्थ कम्मनिज्जरट्ठाए धम्ममाइक्खेज्जा॥ इह खलु तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया, जे तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया ते एवं सव्वोवगता ते एवं सव्वोवसंता ते एवं सव्वत्ताए परिनिव्वुडत्तिबेमि॥ एवं से भिक्खू धम्मट्ठी धम्मविऊ णियागपडिवण्णे से जहेयं बुतियं अदुवा पत्ते पउमवरपोंडरीयं अदुवा अपत्ते पउमवरपोंडरीयं, एवं से भिक्खू परिण्णायकमे परिण्णायसंगे परिण्णायगेहवासे उवसंते समिए सहिए सया जए सेवं वयणिज्जे (प्र० वत्तव्वे) तंजहा-समणेति वा माहणेति वा खंतेति वा दंतेति वा गुत्तेति वा मुत्तेति वा इसीति वा मुणीति वा कतीति वा विऊति भिक्खूति वा लूहेति वा तीरट्ठीति वा चरणकरणपारविउत्तिबेमि॥१६॥ पौण्डरीकाध्ययनं १ (१६)॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु किरियाठाणे णामज्झयणे पण्णत्ते, तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु संजूहेणं दुवे ठाणे एवमाहिज्जंति, तंजहा-धम्मे चेव अधम्मे चेव, उवसंते चेव अणुवसंते चेव॥ तत्थ णं जे से पढमस्स ठाणस्स अहम्मपक्खस्स विभंगे तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते, इह खलु पाईणं वा ६ संतेगतिया मणुस्सा भवंति, तंजहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे रहस्समंता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे, तेसिं च णं इमं एतारूवं दंडसमादाणं संपेहाए, तंजहा-णेरइएसु वा तिरिक्खजोणिएसु वा मणुस्सेसु वा देवेसु वा जे यावन्ने तहप्पगारा पाणा विन्नू वेयणं वेयंति तेसिंपि य णं इमाइं तेरस किरियाठाणाइं भवंतीतिमक्खायं, तंजहा-अट्ठादंडे १ अणट्ठादंडे २ हिंसादंडे ३ अकम्हादंडे ४ दिट्ठीविपरियासियादंडे ५ मोसवत्तिए ६ अदिन्नादाणवत्तिए ७ अज्झत्थवत्तिए ८ माणवत्तिए ९ मित्तदोसवत्तिए १० मायावत्तिए ११ लोभवत्तिए १२ ईरियावहिए १३॥१७॥ पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं वा मित्तहेउं वा णागहेउं वा भूतहेउं वा जक्खहेउं वा तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरति अण्णेणवि णिसिरावेति अण्णंपि णिसिरंतं समणुजाणइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, पढमे दंडसमादाणे अट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिए॥१८॥ अहावरे दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवंति ते णो अच्चाए णो अजिणाए णो मंसाए णो सोणियाए एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए णहाए ण्हारूणिए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए णो हिंसिंसु मेत्ति णो हिंसंति मेत्ति णो हिंसिस्संति मेत्ति णो पुत्तपोसणयाए णो पसुपोसणयाए णो अगारपरिवूहणताए णो समणमाहणवत्तणाहेउं णो तस्स सरीरगस्स किंचि विप्परियादित्ता भवंति, से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवति अणट्ठादंडे, से जहाणामए केइ पुरिसे जे इमे थावरा पाणा भवंति, तंजहा-इक्कडाइ वा कढिणाइ वा जंतुगाइ वा परगाइ वा मोक्खाइ वा तणाइ वा कुसाइ वा कुच्छगाइ वा पव्वगाइ वा पलालाइ वा, ते णो पुत्तपोसणाए णो पसुपोसणाए णो अगारपडिवूहणयाए (प्र० पोसणयाए) णो समणमाहणपोसणयाए णो तस्स सरीरगस्स किंचि विप्परियादित्ता भवंति, से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता उज्झिउं बाले वेरस्स आभागी भवति अणट्ठादंडे, से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा णूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा तणाइं ऊसविय ऊसविय सयमेव अगणिकायं णिसिरति अण्णेणवि अगणिकायं णिसिरावेति अण्णंपि अगणिकायं णिसिरंतं समणुजाणइ अणट्ठादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जन्ति आहिज्जइ, दोच्चे दंडसमादाणे अणट्ठादंडवत्तिएत्ति आहिए॥१९॥ अहावरे तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे ममं वा ममिं वा अन्नं वा अन्निं वा हिंसिंसु वा हिंसइ वा हिंसिस्सइ वा तं दंडं तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव णिसिरति अण्णेणवि णिसिरावेति अन्नंपि णिसिरंतं समणुजाणइ हिंसादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, तच्चे दंडसमादाणे हिंसादंडवत्तिएत्ति आहिए॥२०॥ अहावरे चउत्थे दंडसमादाणे अकस्मात्दण्डवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे कच्छंसि वा जाव वण(प्र० पव्वय)विदुग्गंसि वा मियवत्तिए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता एए मियत्तिकाउं अन्नयरस्स मियस्स वहाइ उसुं आयामेत्ताणं णिसिरेज्जा, स मियं वहिस्सामित्तिकट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा चडगं वा लावगं वा कवोयगं वा कविं वा कविंजलं वा विंधित्ता भवइ, इह खलु से अन्नस्स अट्ठाए अण्णं फुसति अकम्हादंडे, से जहाणामए केइ पुरिसे सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कंगूणि वा परगाणि वा रालाणि वा णिलिज्जमाणे अन्नयरस्स तणस्स वहाए सत्थं णिसिरेज्जा, से सामगं (प्र० मयणगं मुगुणगं) तणगं कुमुदुगं वीहीऊसियं कलेसुयं तणं छिंदिस्सामित्तिकट्टु सालिं वा वीहिं वा कोद्दवं वा कंगुं वा परगं वा रालयं वा छिंदित्ता भवइ, इति खलु से अन्नस्स अट्ठाए अन्नं फुसति अकम्हादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, चउत्थे दंडसमादाणे अकम्हादंडवत्तिए आहिए॥२१॥ अहावरे पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं वा पिईहिं वा भाईहिं वा भगिणीहिं वा (१४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org
मुनि दीपरत्नसागर

भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा धूताहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे मित्तं अमित्तमेव मन्नमाणे मित्ते हयपुव्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादंडे, से जहाणामए केइ पुरिसे गामघायंसि वा णगरघायंसि वा खेड० कव्वड० मडंबघायंसि वा दोणमुहघायंसि वा पट्टणघायंसि वा आसमघायंसि वा सन्निवेसघायंसि वा निगमघायंसि वा रायहाणिघायंसि वा अतेणं तेणमिति मन्नमाणे अतेणे हयपुव्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादंडे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, पंचमे दंडसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादंडवत्तिएत्ति आहिए ॥ २२ ॥ अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा णाइहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं वा सयमेव मुसं वयति अण्णेणवि मुसं वाएइ मुसं वयंतंपि अण्णं समणुजाणइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिएत्ति आहिए ॥ २३ ॥ अहावरे सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे आयहेउं वा जाव परिवारहेउं वा सयमेव अदिन्नं आदियइ अण्णेणवि अदिण्णं आदियावेइ अदिन्नं आदियंतं अन्नं समणुजाणइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिएत्ति आहिए ॥२४॥ अहावरे अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे णत्थिणं केइ किंचि विसंवादेंति सयमेव हीणे दीणे दुट्ठे दुम्मणे ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ, तस्स णं अज्झत्थया आसंसइया (प्र० असंसइया) चत्तारि ठाणा एवमाहिज्जइ (ज्जंति), तं०-कोहे माणे माया लोहे, अज्झत्थमेव कोहमाणमायालोहे, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिएत्ति आहिए ॥२५॥ अहावरे णवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे जातिमएण वा कुलमएण वा बलमएण वा रूवमएण वा तवमएण वा सुयमएण वा लाभमएण वा इस्सरियमएण वा पन्नामएण वा अन्नतरेण वा मयट्ठाणेणं मत्ते समाणे परं हीलेति निंदेति खिंसति गरहति परिभवइ अवमण्णेति, इत्तरिए अयं, अहमंसि पुण विसिट्ठजाइकुलबलाइगुणोववेए, एवं अप्पाणं समुक्कस्से, देहच्चुए कम्मबितिए अवसे पयाइ, तंजहा-गब्भाओ गब्भं ४ जम्माओ जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं चंडे थद्धे चवले माणी यावि भवइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, णवमे किरियाठाणे माणवत्तिएत्ति आहिए ॥२६॥ अहावरे दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिएत्ति आहिज्जइ, से जहाणामए केइ पुरिसे माईहिं वा पितीहिं वा भाईहिं वा भइणीहिं वा भज्जाहिं वा धूयाहिं वा पुत्तेहिं वा सुण्हाहिं वा सद्धिं संवसमाणे तेसिं अन्नयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेति, तंजहा-सीओदगवियडंसि वा कायं उच्छोलित्ता भवति, उसिणोदगवियडेण वा कायं ओसिंचित्ता भवति, अगणिकाएणं कायं उवडहित्ता भवति, जोत्तेण वा वेत्तेण वा णेत्तेण वा तयाइ वा लयाए वा (अन्नयरेण वा दवरएण) पासाइं उद्दालित्ता भवति, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए संवसमाणे दुम्मणा भवति, पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए दंडपासी दंडगुरुए दंडपुरक्कडे अहिए इमंसि लोगंसि संजलणे कोहणे पिट्ठिमंसि यावि भवति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जति, दसमे किरियट्ठाणे मित्तदोसवत्तिएति आहिए ॥ २७ ॥ अहावरे एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिएत्ति आहिज्जइ, जे इमे भवंति-गूढायारा तमोकसिया उलुगपत्तहुया पव्वयगुरुया ते आयरियावि संता अणारियाओ भासाओ विपउज्जंति, अन्नहासंतं अप्पाणं अन्नहा मन्नंति, अन्नं पुट्ठा अन्नं वागरंति, अन्नं आइक्खियव्वं अन्नं आइक्खंति, से जहाणामए केइ पुरिसे अंतोसल्ले तं सल्लं णो सयं णिहरति णो अन्नेण णिहरावेति णो पडिविद्धंसेइ, एवमेव निण्हवेइ, अविउट्टमाणे अंतोअंतो रियइ, एवमेव माई मायं कट्टु णो आलोएइ णो पडिक्कमेइ णो णिंदइ णो गरहइ णो विउट्टइ णो विसोहेइ णो अकरणाए अब्भुट्ठेइ णो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जइ, माई अस्सिं लोए पच्चायाइमाइ परंसि लोए (पुणो पुणो) पच्चायाइ निंदइ गरहइ (प्र० गहाय) पसंसइ णिच्चरइ ण नियट्टइ णिसिरियं दंडं छाएति, माई असमाहडसुहलेस्से यावि भवइ, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, एक्कारसमे किरियट्ठाणे मायावत्तिएत्ति आहिए ॥ २८ ॥ अहावरे बारसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिएत्ति आहिज्जइ, जे इमे भवंति, तंजहा-आरन्निया आवसहिया गामंतिया कण्हुईरहस्सिया णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूतजीवसत्तेहिं ते अप्पणो सच्चामोसाइं एवं विउंजंति, अहं ण हंतव्वो अन्ने हंतव्वा अहं ण अज्जावेयव्वो अन्ने अज्जावेयव्वा अहं ण परिघेतव्वो अन्ने परिघेतव्वा अहं ण परितावेयव्वो अण्णे परितावेयव्वा अहं ण उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा, एवामेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया गरहिया अज्झोववन्ना जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुंजित्तु भोगभोगाइं कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवंति, ततो विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमूयत्ताए जाइमूयत्ताए पच्चायंति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, दुवालसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिएत्ति आहिए ॥ इच्चेयाइं दुवालस किरियट्ठाणाइं दविएण समणेण वा माहणेण वा सम्मं सुपरिजाणिअव्वाइं भवंति ॥२९॥ अहावरे तेरसमे किरियट्ठाणे ईरियावहिएत्ति

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहिज्जइ, इह खलु अत्तत्ताए संवुडस्स अणगारस्स ईरियासमियस्स भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमियस्स उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठाव-
णियासमियस्स मणसमियस्स वयसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वयगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिंदियस्स गुत्तबंभयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स आउत्तं चिट्ठमाणस्स आउत्तं
णिसीयमाणस्स आउत्तं तुयट्टमाणस्स आउत्तं भुंजमाणस्स आउत्तं भासमाणस्स आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गिण्हमाणस्स वा णिक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हणि-
वायमवि अत्थि विमाया सुहुमा किरिया ईरियावहिया नाम कज्जइ, सा पढमसमए बद्धा पुट्ठा बितीयसमए वेइया तईयसमए णिज्जिण्णा सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया णिज्जिण्णा
सेयकाले अकम्मे यावि भवति, एवं खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्जंति आहिज्जइ, तेरसमे किरियट्ठाणे ईरियावहिएत्ति आहिज्जइ॥ से बेमि जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आग-
मिस्सा अरिहंता भगवंतो सव्वे ते एयाइं चेव तेरस किरियट्ठाणाइं भासिंसु वा भासेंति वा भासिस्संति वा पन्नविंसु वा पन्नविंति वा पन्नविस्संति वा, एवं चेव तेरसमं किरियट्ठाणं
सेविंसु वा सेवंति वा सेविस्संति वा ॥३०॥ अदुत्तरं च पुरिसविजयं विभंगमाइक्खिस्सामि, इह खलु णाणापण्णाणं णाणाछंदाणं णाणासीलाणं णाणादिट्ठीणं णाणारुईणं णाणारंभाणं
णाणाज्झवसाणसंजुत्ताणं णाणाविहपावसुयज्झयणं एवं भवइ, तंजहा- भोमं उप्पायं सुविणं अंतलिक्खं अंगं सरं लक्खणं वंजणं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं
गोणलक्खणं मिंढलक्खणं कुक्कुडलक्खणं तित्तिरलक्खणं वट्टगलक्खणं लावयलक्खणं चक्कलक्खणं छत्तलक्खणं चम्मलक्खणं दंडलक्खणं असिलक्खणं मणिलक्खणं कागिणि-
लक्खणं सुभगाकरं दुब्भगाकरं गब्भकरं मोहणकरं आहव्वणिं पागसासणिं दव्वहोमं खत्तियविज्जं चंदचरियं सूरचरियं सुक्कचरियं बहस्सइचरियं उक्कापायं दिसादाहं मियचक्कं वायसप-
रिमंडलं पंसुवुट्ठिं केसवुट्ठिं मंसवुट्ठिं रुहिरवुट्ठिं वेतालिं अद्धवेतालिं ओसोवणिं तालुग्घाडणिं सोवागिं सोवरिं दामिलिं कालिंगिं गोरिं गंधारिं ओवतणिं उप्पयणिं जंभणिं थंभणिं लेसणिं
आमयकरणिं विसल्लकरणिं पक्कमणिं अंतद्धाणिं आयमिणिं, एवमाइआओ विज्जाओ अन्नस्स हेउं पउंजंति पाणस्स हेउं पउंजंति वत्थस्स हेउं पउंजंति लेणस्स हेउं पउंजंति सयणस्स
हेउं पउंजंति, अन्नेसिं वा विरूवरूवाणं कामभोगाणं हेउं पउंजंति, तिरिच्छं ते विज्जं सेवेंति, ते अणारिया विप्पडिवन्ना कालमासे कालं किच्चा अन्नयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं
ठाणाइं उववत्तारो भवंति, ततोऽवि विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमअंधयाए पच्चायंति ॥ ३१ ॥ से एगइओ आयहेउं वा णायहेउं वा सयणहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं वा
नायगं वा सहवासियं वा णिस्साए अदुवा अणुगामिए १ अदुवा उवचरए २ अदुवा पडिपहिए ३ अदुवा संधिच्छेदए ४ अदुवा गंठिच्छेदए ५ अदुवा उरब्भिए ६ अदुवा सोवरिए ७
अदुवा वागुरिए ८ अदुवा साउणिए ९ अदुवा मच्छिए १० अदुवा गोघायए ११ अदुवा गोवालए १२ अदुवा सोवणिए (प्र० सेयणए) १३ अदुवा सोवणियंतिए १४, से एगइओ
आणुगामियभावं पडिसंधाय तमेव अणुगामियाणुगामियं हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ,
से एगइओ उवचरयभावं पडिसंधाय तमेव उवचरियं हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ,
से एगइओ पाडिपहियभावं पडिसंधाय तमेव पाडिपहे ठिच्चा हंता छेत्ता भेत्ता लुंपइत्ता विलुंपइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता
भवइ, से एगइओ संधिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव संधिं छेत्ता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ गंठिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव
गंठिं छेत्ता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ उरब्भियभावं पडिसंधाय उरब्भं वा अण्णतरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ,
एसो अभिलावो सव्वत्थ, से एगइओ सोयरियभावं पडिसंधाय महिसं वा अण्णतरं वा तसं पाणं जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ वागुरियभावं पडिसंधाय मियं वा अण्णतरं वा
तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ सउणियभावं पडिसंधाय सउणिं वा अण्णतरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ मच्छियभावं पडिसंधाय
मच्छं वा अण्णतरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ गोघायभावं पडिसंधाय तमेव गोणं वा अण्णयरं वा तसं पाणं हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ
गोवालभावं पडिसंधाय तमेव गोवालं (प्र० गोणं) वा परिजविय परिजविय हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ सोवणियभावं पडिसंधाय तमेव सुणगं वा अन्नयरं वा तसं पाणं
हंता जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ सोवणियंतियभावं पडिसंधाय तमेव मणुस्सं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हंता जाव आहारं आहारेति, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं
उवक्खाइत्ता भवइ ॥३२॥ से एगइओ परिसामज्झओ उट्ठित्ता अहमेयं हणामित्तिकट्टु तित्तिरं वा वट्टगं वा लावगं वा कवोयगं वा कविंजलं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हंता जाव
उवक्खाइत्ता भवइ ॥ से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएण सस्साइं झामेइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णेणवि अगणिकाएणं सस्साइं झामावेइ अगणिकाएणं सस्साइं झामंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेति अन्नेणवि कप्पावेति कप्पंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति स महया जाव भवइ, से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा गद्दभसालाओ वा कंटकबोंदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ अन्नेणवि झामावेइ झामंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति से महया जाव भवइ, से एगइओ केणइ आयाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा कुंडलं वा (प्र० गुणं वा) मणिं वा मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ अन्नेणवि अवहरावइ अवहरंतंपि अन्नं समणुजाणइ इति से महया जाव भवइ, से एगइओ केणइवि आदाणेणं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेणं अदुवा सुराथालएणं समणाण वा माहणाण वा छत्तगं वा दंडगं वा भंडगं वा मत्तगं वा लट्ठिं वा भिसिगं वा चेलगं वा चिलिमिलिगं वा चम्मयं वा छेयणगं वा चम्मकोसियं वा सयमेव अवहरति जाव समणुजाणइ इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ णो वितिगिंछइ तं०-गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएणं ओसहीओ झामेइ जाव अन्नंपि झामंतं समणुजाणइ इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवति, से एगइओ णो वितिगिंछइ, तं०-गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ अन्नेणवि कप्पावेति अन्नंपि कप्पंतं समणुजाणइ०, से एगइओ णो वितिगिंछइ तं०-गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा अट्टसालाओ वा जाव गद्दभसालाओ वा कंटकबोंदियाहिं पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएणं झामेइ जाव समणुजाणइ०, से एगइओ णो वितिगिंछइ, तं०-गाहावतीण वा गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ०, से एगइओ णो वितिगिंछइ तं०-समणाण वा माहणाण वा छत्तगं वा दंडगं वा जाव चम्मच्छेदणगं वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवइ, से एगइओ समणं वा माहणं वा दिस्सा णाणाविहेहिं पावकम्मेहिं० अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ, अदुवा णं अच्छराए आफालित्ता भवइ, अदुवा णं फरुसं वदित्ता भवइ, कालेणवि से अणुपविट्ठस्स असणं वा पाणं वा जाव णो दवावेत्ता भवइ, जे इमे भवन्ति वोनमंता भारक्कंता अलसगा वसलगा किवणगा समणगा पव्वयंति ते इणमेव जीवितं धिज्जीवितं संपडिबूहेंति, नाइ ते परलोगस्स अट्ठाए किंचिवि सिलीसंति, ते दुक्खंति ते सोयंति ते जूरंति ते तिप्पंति ते पिट्टंति ते परितप्पंति ते दुक्खणजूरणसोयणतिप्पणपिट्टणपरितिप्पणवहबंधणपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति, ते महया आरंभेणं ते महया समारंभेणं ते महया आरंभसमारंभेणं विरूवरूवेहिं पावकम्मकिच्चेहिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजित्तारो भवंति, तंजहा-अन्नं अन्नकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सिरसा ण्हाए कंठेमालाकडे आविद्धमणिसुवन्ने कप्पियमालामउली पडिबद्धसरीरे वग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे अहतवत्थपरिहिए चंदणोक्खित्तगायसरीरे महतिमहालियाए कूडागारसालाए महतिमहालयंसि सीहासणंसि इत्थीगुम्मसंपरिवुडे सव्वराइएणं जोइणा झियायमाणेणं महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुपवाइयरवेणं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्टंति, भणह देवाणुप्पिया! किं करेमो? किं आहरेमो? किं उवणेमो? किं आचिट्ठामो! किं भे हियइच्छियं? किं भे आसगस्स सयइ?, तमेव पासित्ता अणारिया एवं वयंति-देवे खलु अयं पुरिसे, देवसिणाए खलु अयं पुरिसे, देवजीवणिज्जे खलु अयं पुरिसे, अन्नेवि य णं उवजीवंति, तमेव पासित्ता आरिया वयंति-अभिक्कंतकूरकम्मे खलु अयं पुरिसे अतिधुन्ने अइयायरक्खे दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लहबोहियाए यावि भविस्सइ, इच्चेयस्स ठाणस्स उट्ठिया वेगे अभिगिज्झंति अणुट्ठिया वेगे अभिगिज्झंति अभिझंझाउरा अभिगिज्झंति, एस ठाणे अणारिए अकेवले अप्पडिपुन्ने अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अनिव्वाणमग्गे अणिज्जाणमग्गे असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू एस खलु पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए॥३३॥ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ, इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा-आयरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे णीयागोया वेगे कायमंता वेगे रहस्समंता वेगे सुवन्ना वेगे दुवन्ना वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे, तेसिं च णं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाइं भवंति, एसो आलावगो जहा पोंडरीए तहा णेतव्वो तेणेव अभिलावेण जाव सव्वोवसंता सव्वत्ताए परिनिव्वुडेत्तिबेमि, एस ठाणे आरिए केवले जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू, दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥३४॥ अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ, जे इमे भवंति आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया कण्हईरहस्सिता जाव ते तओ विप्पमुच्चमाणा

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुज्जो एलमूयत्ताए तमूत्ताए पच्चायंति, एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू, एस खलु तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभंगे एवमाहिए ॥३५॥ अहावरे पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ-इह खलु पाईणं वा ४ संतेगतिया मणुस्सा भवंति-गिहत्था महिच्छा महारंभा महापरिग्गहा अधम्मिया अधम्माणुया (ण्णा) अधम्मिट्ठा अधम्मक्खाई अधम्मपायजीविणो अधम्मप(वि)लोई अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदायारा अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, हण छिंद भिंद विगत्तगा लोहियपाणी चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचणवंचणमायाणियडिकूडकवडसाइसंपओगबहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडियाणंदा असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए जाव सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कोहाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया, सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दणवण्णगगंधविलेवणसद्दफरिसरसरूवगंधमल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियासयणासणजाणवाहणभोगभोयणपवित्थरविहीओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कयविक्कयमासद्धमासरूवगसंववहाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ हिरण्णसुवण्णधणधण्णमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कूडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ पयणपयावणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कुट्टणपिट्टणतज्जणताडणवहबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, जे आवण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा जे अणारिएहिं कज्जंति ततो अप्पडिविरया जावज्जीवाए, से जहाणामए केइ पुरिसे कलममसूरतिलमुग्गमासनिप्फावकुलत्थआलिसंदगपलिमंथगमादिएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजंति एवमेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवट्टगलावगकवोतकविंजलमियमहिसवराहगाहगोहकुम्मसरिसिवमादिएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजंति, जावि य से बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा-दासेइ वा पेसेइ वा भयएइ वा भाइल्लेइ वा कम्मकरएइ वा भोगपुरिसेइ वा तेसिंपि य णं अन्नयरंसि वा अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं निवत्तेइ, तंजहा-इमं दंडेह इमं मुंडेह इमं तज्जेह इमं तालेह इमं अंदुयबंधणं करेह इमं नियलबंधणं करेह इमं हड्डिबंधणं करेह इमं चारगबंधणं करेह इमं नियलजुयलसंकोइयमोडियं करेह इमं हत्थच्छिन्नयं करेह इमं पायच्छिन्नयं करेह इमं कन्नच्छिण्णयं करेह इमं नक्कओट्ठसीसमुहच्छिन्नयं करेह वेयगच्छहियं अंगच्छहियं पक्खाफोडियं करेह इमं णयणुप्पाडियं करेह इमं दंसणुप्पाडियं० वसणुप्पडियं० जिब्भुप्पाडियं० ओलंबियं करेह घंसियं करेह घोलियं करेह सूलाइयं करेह सूलाभिन्नयं करेह खारवत्तियं करेह वज्झवत्तियं करेह सीहपुच्छियगं करेह वसभपुच्छियगं करेह दवग्गि(प्र० कडग्गि०)दड्ढयगं० कागणिमंसखावियगं० भत्तपाणनिरुद्धगं० इमं जावज्जीवं वहबंधणं करेह इमं अन्नयरेणं असुभेणं कुमारेणं मारेह, जावि य से अब्भिंतरिया परिसा भवइ, तंजहा-मायाइ वा पियाइ वा भायाइ वा भगिणीइ वा भज्जाइ वा पुत्ताइ वा धूताइ वा सुण्हाइ वा, तेसिंपि य णं अन्नयरंसि अहालहुगंसि अवराहंसि सयमेव गरुयं दंडं णिवत्तेइ, सीओदगवियडंसि उच्छोलित्ता भवइ जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिए परंसि लोगंसि, ते दुक्खंति सोयंति जूरंति तिप्पंति पिट्टंति परितप्पंति ते दुक्खणसोयणजूरणातिप्पणपिट्टणपरितप्पणवहबंधणपरिकिलेसाओ अपडिविरया भवंति, एवमेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववन्ना जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाइं वा अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं भुंजित्तु भोगभोगाइं पविसुइत्ता वेरायतणाइं संचिणित्ता बहूइं पावाइं कम्माइं. उस्सन्नाइं संभारकडेण कम्मणा से जहाणामए अयगोलेइ वा सेलगोलेइ वा उदगंसि पक्खित्ते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ एवमेव तहप्पगारे पुरिसजाते वज्जबहुले धूतबहुले पंकबहुले वेरबहुले अप्पत्तियबहुले दंभबहुले णियडिबहुले साइबहुले अयसबहुले उस्सन्नतसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमइवइत्ता अहे णरगतलपइट्ठाणे भवइ ॥३६॥ ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधकारतमसा (णिच्चंधतमसा पा०) ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसप्पहा मेदवसामंसरुहिरपूयपडलचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा कण्हा अगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा णरएसु वेयणाओ, णो चेव णरएसु नेरइया णिद्दायंति वा पयलायंति वा सुइं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभंते, ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कडुयं कक्कसं चंडं दुक्खं दुग्गं तिव्वं दुरहियासं णेरइया वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥३७॥ से जहाणामए रुक्खे सिया पव्वयग्गे जाए मूले छिन्ने अग्गे गरुए जओ णिण्णं जओ विसमं जओ दुग्गं तओ पवडति एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भातो गब्भं जम्मातो जम्मं माराओ मारं णरगाओ णरगं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिए णेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवइ, एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू, पढमस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥३८॥ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिज्जइ-इह खलु पाइणं वा ४ संतेगतिया मणुस्सा भवंति, तंजहा-अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणंदा सुसाहू सव्वतो पाणातिवायाओ पडिविरया जावजीवाए जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सावज्जा (१५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only मुनि दीपरत्नसागर www.jainelibrary.org

अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति ततो विपडिविरता जावजीवाए, से जहाणामए अणगारा भगवंतो ईरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिया उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिया मणसमिया वयसमिया कायसमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिणिव्वुडा अणासवा अग्गंथा छिन्नसोया निरुवलेवा कंसपाइव मुक्कतोया संखो इव णिरंजणा जीव इव अपडिहयगती गगणतलंपिव निरालंबणा वाउरिव अपडिबद्धा सारदसलिलं व सुद्धहियया पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा कुम्मो इव गुत्तिंदिया विहग इव विप्पमुक्का खग्गिविसाणं व एगजाया भारंडपक्खीव अप्पमत्ता कुंजरो इव सोंडीरा वसभो इव जातत्थामा सीहो इव दुद्धरिसा मंदरो इव अप्पकंपा सागरो इव गंभीरा चंदो इव सोमलेसा सूरो इव दित्ततेया जच्चकंचणगं (प्र० कणगं) व जातरूवा वसुंधरा इव सव्वफासविसहा सुहुयहुयासणोविव तेयसा जलंता, णत्थि णं तेसिं भगवंताणं कत्थवि पडिबंधे भवइ, से पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहेइ वा, जन्नं जन्नं दिसं इच्छंति तन्नं तन्नं दिसं अपडिबद्धा सुइभूया लहुभूया अप्पग्गंथा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, तेसिं णं भगवंताणं इमा एतारूवा जायामायावित्ती होत्था, तंजहा-चउत्थे भत्ते छट्ठे भत्ते अट्ठमे भत्ते दसमे भत्ते दुवालसमे भत्ते चउदसमे भत्ते अद्धमासिए भत्ते मासिए भत्ते दोमासिए तिमासिए चाउम्मासिए पंचमासिए छम्मासिए अदुत्तरं च णं उक्खित्तचरया णिक्खित्तचरया उक्खित्तणिक्खित्तचरगा अंतचरगा पंतचरगा लूहचरगा समुदाणचरगा संसट्ठचरगा असंसट्ठचरगा तज्जातसंसट्ठचरगा दिट्ठलाभिया अदिट्ठलाभिया पुट्ठलाभिया अपुट्ठलाभिया भिक्खलाभिया अभिक्खलाभिया अन्नायचरगा उवनिहिया संखादत्तिया परिमितपिंडवाइया सुद्धेसणिया अंताहारा पंताहारा अरसाहारा विरसाहारा लूहाहारा तुच्छाहारा अंतजीवी पंतजीवी आयंबिलिया पुरिमड्ढिया निव्विगइया अमज्जमंसासिणो णो णियामरसभोई ठाणाइया पडिमाठाणाइया उक्कडुआसणिया णेसज्जिया वीरासणिया दंडायतिया लगंडसाइणो अप्पाउडा अगत्तया अकंडुया अणिट्ठूहा धुतकेसमंसुरोमनहा सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्का चिट्ठंति, ते णं एतेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणंति २ बहुबहु आबाहंसि उप्पन्नंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खन्ति पच्चक्खाइत्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदिंति अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणभावे अदंतवणगे अच्छत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लद्धावलद्धे माणावमाणणाओ हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहंति, तमट्ठं आराहित्ता चरमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं अणंतं अणुत्तरं निव्वाघातं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेंति, समुप्पाडित्ता ततो पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति, एगच्चाए पुण एगे भयंतारो भवंति, अवरे पुण पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंजहा-महड्ढिएसु महज्जुतिएसु महापरक्कमेसु महाजसेसु महाबलेसु महाणुभावेसु महासुक्खेसु, ते णं तत्थ देवा भवंति महड्ढिया महज्जुतिया जाव महासुक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडयलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगंधपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चाए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवंति, एस ठाणे आयरिए जाव सव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतसम्मे सुसाहू, दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए ॥३९॥ अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभंगे एवमाहिज्जइ-इह खलु पाईणं वा ४ संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा-अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरता जावजीवाए एगच्चाओ अप्पडिविरया जाव जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरितावणकरा कज्जंति ततोऽवि एगच्चाओ अप्पडिविरया, से जहाणामए समणोवासगा भवंति अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसवसंवरवेयणाणिज्जराकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसला असहेज्ज(ज्जा)देवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं, निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, इणमेव निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा अचियत्तंतेउरपरघरपवेसा चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणा, बहूहिं सीलव्वयगुण-

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति पाउणित्ता आबाहंसि उप्पन्नंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खायंति बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाएत्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेन्ति बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंजहा-महड्ढिएसु महज्जुइएसु जाव महासुक्खेसु सेसं तहेव जाव एस ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे साहू, तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभंगे एवं आहिए, अविरइं पडुच्च बाले आहिज्जइ, विरइं पडुच्च पंडिए आहिज्जइ, विरयाविरइं पडुच्च बालपंडिए आहिज्जइ, तत्थ णं जा सा सव्वतो अविरई एस ठाणे आरंभट्ठाणे अणारिए जाव असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू, तत्थ णं जा सा सव्वतो विरई एस ठाणे अणारंभट्ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू, तत्थ णं जा सा सव्वओ विरयाविरई एस ठाणे आरंभणोआरंभट्ठाणे एस ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ॥४०॥ एवमेव समणुगम्ममाणा इमेहिं चेव दोहिं ठाणेहिं समोअरंति, तंजहा-धम्मे चेव अधम्मे चेव, उवसंते चेव अणुवसंते चेव, तत्थ णं जे से पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए, तत्थ णं इमाइं तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं भवंतीति मक्खायाइं, तंजहा-किरियावाईणं अकिरियावाईणं अन्नाणियवाईणं वेणइयवाईणं, तेऽवि परिनिव्वाणमाहंसु, तेऽवि मोक्खमाहंसु तेऽवि लवंति सावगा! तेऽवि लवंति सावइत्तारो ॥४१॥ ते सव्वे पावाउया आदिकरा धम्माणं णाणापन्ना णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाज्झवसाणसंजुत्ता एगं महं मंडलिबंधं किच्चा सव्वे एगओ चिट्ठंति, पुरिसे य सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुन्नं अओमएणं संडासएणं गहाय ते सव्वे पावाउए आइगरे धम्माणं णाणापन्ने जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी-हंभो पावाउया! आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाअज्झवसाणसंजुत्ता! इमं ताव तुब्भे सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुन्नं गहाय मुहुत्तयं मुहुत्तगं पाणिणा धरेह, णो बहुसंडासगं संसारियं कुज्जा णो बहुअग्गिथंभणियं कुज्जा णो बहुसाहम्मियवेयावडियं कुज्जा णो बहुपरधम्मियवेयावडियं कुज्जा उज्जुया णियागपडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा पाणिं पसारेह, इति वुच्चा से पुरिसे तेसिं पावादुयाणं तं सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुन्नं अओमएणं संडासएणं गहाय पाणिंसु णिसिरति, तए णं ते पावादुया आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ता पाणिं पडिसाहरंति, तए णं से पुरिसे ते सव्वे पावाउए आदिगरे धम्माणं जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी-हंभो पावादुया! आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ता! कम्हा णं तुब्भे पाणिं पडिसाहरह?, पाणिं नो डहिज्जा, दड्ढे किं भविस्सइ?, दुक्खं, दुक्खंति मन्नमाणा पडिसाहरह?, एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे, पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे, तत्थ णं जे ते समणा माहणा एवमातिक्खंति जाव परूवेंति-सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेत्तव्वा परितावेयव्वा किलामेतव्वा उद्दवेतव्वा, ते आगंतुछेयाए ते आगंतुभेयाए जाव ते आगंतुजाइजरामरणजोणिजम्मणसंसारपुणब्भवगब्भवासभवपवंचकलंकलीभागिणो भविस्संति, ते बहूणं दंडणाणं बहूणं मुंडणाणं तज्जणाणं तालणाणं अंदुबंधणाणं जाव घोलणाणं माइमरणाणं पिइमरणाणं भाइमरणाणं भगिणीमरणाणं भज्जापुत्तधूतसुण्हामरणाणं दारिद्दाणं दोहग्गाणं अप्पियसंवासाणं पियविप्पओगाणं बहूणं दुक्खदोम्मणस्साणं आभागिणो भविस्संति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं भुज्जो भुज्जो अणुपरियट्टिस्संति, ते णो सिज्झिस्संति णो बुज्झिस्संति जाव णो सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति, एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे, तत्थ णं जे ते समणा माहणा एवमाइक्खंति जाव परूवेंति-सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परिघेत्तव्वा० ण उद्दवेयव्वा ते णो आगंतुछेयाए ते णो आगंतुभेयाए जाव जाइजरामरणजोणिजम्मणसंसारपुणब्भवगब्भवासभवपवंचकलंकलीभागिणो भविस्संति, ते णो बहूणं दंडणाणं मुंडणाणं जाव बहूणं दुक्खदोम्मणस्साणं णो भागिणो भविस्संति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं भुज्जो भुज्जो णो अणुपरियट्टिस्संति, ते सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति ॥४२॥ इच्चेतेहिं बारसहिं किरियाठाणेहिं वट्टमाणा जीवा णो सिज्झिंसु णो बुज्झिंसु णो मुच्चिंसु णो परिणिव्वाइंसु जाव णो सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा णो करेंति वा णो करिस्संति वा, एयंसि चेव तेरसमे किरियाठाणे वट्टमाणा जीवा सिज्झिंसु बुज्झिंसु मुच्चिंसु परिणिव्वाइंसु जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा करंति वा करिस्संति वा। एवं से भिक्खू आयट्ठी आयहिते आयगुत्ते आयजोगे आयपरक्कमे आयरक्खिए आयाणुकंपए आयनिप्फेडए आयाणमेव पडिसाहरेज्जासित्तिबेमि ॥४३॥ क्रियास्थानाध्ययनं २ (१८)॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु आहारपरिण्णाणामज्झयणे, तस्स णं अयमट्ठे, इह खलु पाईणं वा ४ सव्वतो सव्वावंति च णं लोगंसि चत्तारि बीयकाया एवमाहिज्जंति, तंजहा-अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया, (वणस्सइकाइयाणं पंचविहा बीजवक्कंती एवमाहिज्जइ, तंजहा-अग्गमूलपोरुक्खंधबीयरुहा छट्ठावि एगेंदिया संमुच्छिमा बीया जायंते पा०) तेसिं च णं अहा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीएणं अहावगासेणं इहेगतिया सत्ता पुढवीजोणिया पुढवीसंभवा पुढवीवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु रुक्खत्ताए विउट्टंति. ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउसरीरं तेउसरीरं वाउसरीरं वणस्सइसरीरं, णाणाविहाण तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणयं सारूवियकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं पुढविजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपुग्गलविउव्विता ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतित्ति मक्खायं ॥४४॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा पुढवीजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं पुढवीजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउतेउवाउवणस्सइसरीरं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विप्परिणामियं सारूविकडं संतं, अवरेवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा णाणारसा णाणाफासा णाणासंठाणसंठिया णाणाविहसरीरपुग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतीति मक्खायं॥ ४५ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा (प्र० रुक्खारुक्ख) रुक्खजोणिएसु रुक्ख(प्र० रुक्खारुक्ख)त्ताए विउट्टंति ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउतेउवाउवणस्सइसरीरं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति परिविद्धत्थं तं सरीरं पुव्वाहारियं तयाहारियं विपरिणामियं सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावन्ना जाव ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतीति मक्खायं ॥४६॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगइया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा रुक्खजोणिएसु रुक्खेसु मूलत्ताए कंदत्ताए खंधत्ताए तयत्ताए सालत्ताए पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फलत्ताए बीयत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं आउतेउवाउवणस्सइ० णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरं अचित्तं कुव्वंति परिविद्धत्थं तं सरीरगं जाव सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं मूलाणं कंदाणं खंधाणं तयाणं सालाणं पवालाणं जाव बीयाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा जाव णाणाविहसरीरपुग्गलविउव्विया ते जीवा कम्मोववन्नगा भवंतीति मक्खायं ॥४७॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता रुक्खजोणिया रुक्खसंभवा रुक्खवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोववन्नगा कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं अज्झारोहत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं रुक्खाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव सारूविकडं संतं, अवरेवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारुहाणं सरीरा णाणावन्ना जाव मक्खायं॥ ४८ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा रुक्खजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा पुढवीसरीरं जाव सारूविकडं संतं, अवरेवि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावन्ना जाव मक्खायं ॥४९॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु (प्र० अज्झोरुहेसु) अज्झारोहत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारंति पुढवीसरीरं आउसरीरं जाव सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सरीरा णाणावन्ना जाव मक्खायं ॥ ५० ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाणं अज्झारोहाणं सिणेहमाहारेंति जाव अवरेऽवि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाणं मूलाणं जाव बीयाणं सरीरा णाणावन्ना जाव मक्खायं ॥ ५१ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता पुढवीजोणिया पुढवीसंभवा जाव णाणाविहजोणियासु पुढवीसु तणत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं पुढवीणं सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा कम्मोववन्ना भवंतीति मक्खायं ॥५२॥ एवं पुढवीजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति जाव मक्खायं ॥५३॥ एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति, तणजोणियं तणसरीरं च आहारेंति जाव मक्खायं, एवं तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति ते जीवा जाव एवमक्खायं, एवं ओसहीणवि चत्तारि आलावगा॥ एवं हरियाणवि चत्तारि आलावगा ॥५४॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता पुढवीजोणिया पुढवीसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहजोणियासु पुढवीसु आयत्ताए वायत्ताए कायत्ताए कूहणत्ताए कंदुकत्ताए उव्वेहणियत्ताए निव्वेहणियत्ताए सच्छत्ताए छत्तगत्ताए वासाणियत्ताए कूरत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढवीणं सिणेहमाहारेंति ते जीवा आहारिंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं पुढवीजोणियाणं आयत्ताणं जाव कूराणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं, एगो चेव आला-वगो. सेसा तिण्णि णत्थि। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु रुक्खत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति ते जीवा आहारिंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारि गमा अज्झारुहाणवि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदग-जोणिया उदगसंभवा जाव कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए अवगत्ताए पणगत्ताए सेवालत्ताए कलंबुगत्ताए हडत्ताए कसेरुगत्ताए कच्छभाणियत्ताए उप्पलत्ताए पउमत्ताए कुमुयत्ताए नलिणत्ताए सुभगत्ताए सोगंधियत्ताए पोंडरीयमहापोंडरीयत्ताए सयपत्तत्ताए सहस्सपत्तत्ताए एवं कल्हारकोंकणयत्ताए अरविंदत्ताए तामरसत्ताए भिसभिसमुणालपुक्खलत्ताए पुक्खलच्छिभगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं, एगो चेव आलावगो।५५। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता तेसिं चेव पुढवीजो-णिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारुहेहिं अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं, पुढवीजोणिएहिं तणेहिं तणजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं एवं ओसहीहिवि तिन्नि आलावगा, एवं हरिएहिवि तिन्नि आलावगा, पुढवीजोणिएहिवि आएहिं काएहिं जाव कूरेहिं उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं एवं अज्झारुहेहिवि तिण्णि तणेहिंपि तिण्णि आलावगा, ओसहीहिंपि तिण्णि, हरिए-हिंपि तिण्णि, उदगजोणिएहिं उदएहिं अवएहिं जाव पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति। ते जीवा तेसिं पुढवीजोणियाणं उदगजोणियाणं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहजो-णियाणं तणजोणियाणं ओसहीजोणियाणं हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झारुहाणं तणाणं ओसहीणं हरियाणं मूलाणं जाव बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कुरवा(कूरा)णं उदगाणं अवगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजो-णियाणं हरियजोणियाणं मूलजोणियाणं कंदजोणियाणं जाव बीयजोणियाणं आयजोणियाणं कायजोणियाणं जाव कूरजोणियाणं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव पुक्खल-च्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं।५६। अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं मणुस्साणं, तंजहा- कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं आरियाणं मिलक्खुयाणं. तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए एत्थ णं मेहुणवत्तियाए णामं संजोगे समुप्पज्जइ, ते दुहओवि सिणेहं संचिणंति, तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए णपुंसगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा माओउयं पिउसुक्कं तं तदुभयं संसट्टं कलुसं किब्बिसं तंपढमत्ताए आहारमाहारेंति, ततो पच्छा जं से माया णाणा-विहाओ रसविहीओ आहारमाहारेति ततो एगदेसेणं ओयमाहारेंति आणुपुव्वेण वुड्ढा पलिपागमणुपवन्ना ततो कायातो अभिनिवट्टमाणा इत्थिं वेगया जणयंति पुरिसं वेगया जणयंति णपुंसगं वेगया जणयंति, ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति, अणुपुव्वेणं वुड्ढा ओयणं कुम्मासं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव सारूवि-कडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं मणुस्सगाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरद्दीवगाणं आरियाणं मिलक्खूणं सरीरा णाणावण्णा भवंतीति मक्खायं ॥५७॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं जलचराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा-मच्छाणं जाव सुंसुमाराणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडा तहेव जाव ततो एगदेसेणं ओयमाहारेंति, आणुपुव्वेणं वुड्ढा पलिपागमणुपवन्ना ततो कायाओ अभिनिवट्टमाणा अंडं वेगया जणयंति पोयं वेगया जणयंति, से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगया जणयंति पुरिसं वेगया जणयंति नपुंसगं वेगया जणयंति, ते जीवा डहरा समाणा माउसिणेहमाहारेंति अणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सतिकायं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं जलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छाणं सुंसुमाराणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं चउप्पयथ-लयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा-एगखुराणं दुखुराणं गंडीपदाणं सणप्फयाणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य कम्म जाव मेहुणवत्तिए णामं संजोगे समुप्पज्जइ, ते दुहओ सिणेहं संचिणंति, तत्थ णं जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति, ते जीवा माओउयं पिउसुक्कं एवं जहा मणुस्साणं इत्थिंपि वेगया जणयंति पुरिसंपि० नपुंस-गंपि०, ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीरं सप्पिं आहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं एगखुराणं जाव सणप्फयाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख-(१६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोणियाणं, तंजहा-अहीणं अयगराणं आसालियाणं महोरगाणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिस जाव एत्थ णं मेहुण० एवं तं चेव, नाणत्तं अंडं वेगइया जणयंति पोयं वेगइया जणयंति, से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगइया जणयंति पुरिसंपि० णपुंसगंपि०, ते जीवा डहरा समाणा वाउकायमाहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरपाणे, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख० अहीणं जाव महोरगाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा जाव मक्खायं। अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा-गोहाणं नउलाणं सीहाणं सरडाणं सल्लाणं सरवाणं खराणं घरकोइलियाणं विस्संभराणं मुसगाणं मंगुसाणं पयलाइयाणं बिरालियाणं जोहाणं चउप्पाइयाणं, तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए पुरिसस्स य जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पपंचिंदियथलयरतिरिक्खाणं तं०-गोहाणं जाव मक्खायं। अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा-चम्मपक्खीणं लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं तेसिं च णं अहाबीएणं अहावगासेणं इत्थीए जहा उरपरिसप्पाणं नाणत्तं ते जीवा डहरा समाणा माउगात्तसिणेहमाहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सतिकायं तसथावरे य पाणे, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चम्मपक्खीणं जाव मक्खायं। ५८। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पोग्गलाणं सरीरेसु वा सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अणुसूयत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अणुसूयगाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। एवं दुरूवसंभवत्ताए। एवं खुरदुगत्ताए। ५९। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया जाव कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा तं सरीरगं वायसंसिद्धं वा वायसंगहियं वा वायपरिग्गहियं उड्ढवाएसु उड्ढभागीभवति अहेवाएसु अहेभागीभवति तिरियवाएसु तिरियभागीभवति, तंजहा-ओसा हिमए महिया करए हरतणुए सुद्धोदए, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारिंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं ओसाणं जाव सुद्धोदगाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणिया उदगसंभवा जाव कम्मणियाणेणं तत्थवुक्कमा तसथावरजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणियाणं जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सरीरा णाणावन्ना जाव मक्खायं। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता उदगजोणियाणं जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कम्मा उदगजोणिएसु उदएसु तसपाणत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं उदगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। ६०। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अगणिकायत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अगणीणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं, सेसा तिन्नि आलावगा जहा उदगाणं। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणियाणं जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुंक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा वाउक्कायत्ताए विउट्टंति, जहा अगणीणं तहा भाणियव्वा चत्तारि गमा। ६१। अहावरं पुरक्खायं इहेगतिया सत्ता णाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पुढवीत्ताए सक्करत्ताए वालुयत्ताए, इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ-'पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे। अय तउय तंब सीसग रुप्प सुवण्णे य वइरे ॥ ६३२॥ हरियाले हिंगुलए मणोसिला सासगंजणपवाले। अब्भपडलब्भवालुय बायरकाए मणिविहाणा ॥ ६३३॥ गोमेज्जए य रुयए अंके फलिहे य लोहियक्खे य। मरगयमसारगल्ले भुयमोयग इंदणीले य ॥ ६३४॥ चंदण गेरुय हंसगब्भ पुलए सोगंधिए य बोद्धव्वे। चंदप्पभ वेरुलिए जलकंते सूरकंते य ॥ ६३५॥ एयाओ एएसु भाणियव्वाओ गाहाओ जाव सूरकंतत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीरं जाव संतं, अवरेऽवि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं पुढवीणं जाव सूरकंताणं

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं, सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाणं।६२। अहावरं पुरक्खायं सव्वे पाणा सव्वे भूता सव्वे जीवा सव्वे सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवुक्कमा सरीरजोणिया सरीरसंभवा सरीरवुक्कमा सरीराहारा कम्मोवगा कम्मनियाणा कम्मगतीया कम्मठिइया कम्मणा चेव विप्परियासमुवेंति। से एवमायाणह से एवमायाणित्ता आहारगुत्ते सहिए समिए सयाजएत्तिबेमि।६३। आहारपरिन्नाऽध्ययनं ३ (१९)॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु पच्चक्खाणकिरियाणामज्झयणे, तस्स णं अयमट्ठे पण्णत्ते आया अपच्चक्खाणी यावि भवति आया अकिरियाकुसले यावि भवति आया मिच्छासंठिए यावि भवति आया एगंतदंडे यावि भवति आया एगंतबाले यावि भवति आया एगंतसुत्ते यावि भवति (प्र० से बाले) आया अवियारमणवयणकायवक्के यावि भवति आया अप्पडिहयअपच्चक्खायपावकम्मे यावि भवति एस खलु भगवता अक्खाए असंजते अविरते अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते, से बाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि ण पस्सति, पावे य से कम्मे कज्जइ।६४। तत्थ चोयए पन्नवगं एवं वयासि-असंतएणं मणेणं पावएणं असंतियाए वतीए पावियाए असंतएणं काएणं पावएणं अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावकम्मे णो कज्जइ, कस्स णं तं तेउं?, चोयए एवं बवीति-अन्नयरेणं मणेणं पावएणं मणवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरीए वतिए पावियाए वतिवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरेणं काएणं पावएणं कायवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, हणंतस्स समणक्खस्स सवियारमणवयकायवक्कस्स सुविणमवि पासओ एवंगुणजातीयस्स पावे कम्मे कज्जइ। पुणरवि चोयए एवं बवीति-तत्थ णं जे ते एवमाहंसु-असंतएणं मणेणं पावएणं असंतियाए वतिए पावियाए असंतएणं काएणं पावएणं अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयणकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ, तत्थ णं जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु। तत्थ पन्नवए चोयगं एवं वयासी-(प्र० असंतएणं कज्जइ)तं सम्मं जं मए पुव्वं वुत्तं, असंतएणं मणेणं पावएणं असंतियाए वतिए पावियाए असंतएणं काएणं पावएणं अहणंतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयणकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जति, तं सम्मं, कस्स णं तं हेउं?; आचार्य आह-तत्थ खलु भगवया छजीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तंजहा-पुढवीकाइया जाव तसकाइया, इच्चेएहिं छहिं जीवणिकाएहिं आया अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे निच्चं पसढविउवातचित्तदंडे, तंजहा-पाणातिवाए जाव परिग्गहे कोहे जाव मिच्छादंसणसल्ले। आचार्य आह-तत्थ खलु भगवया वहए दिट्ठंते पण्णत्ते, से जहाणामए वहए सिया गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खणं निद्दाय पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामि (अप्पणो अक्खणयाए तस्स वा पुरिसस्स छिद्दं अलभमाणे णो वहेइ तं जया मे खणो भविस्सइ तस्स पुरिसस्स छिद्दं लभिस्सामि तया मे स पुरिसे अवस्सं वहेयव्वे भविस्सइ, एवं मणो पहारेमाणे पा०) पहारेमाणे से किं नु नाम से वहए तस्स गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खणं निद्दाय पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामिं पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे भवति?, एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरे?, चोयए-हंता भवति। आचार्य आह-जहा से वहए तस्स गाहावइस्स वा तस्स गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खणं निद्दाय पविसिस्सामि खणं लद्धूणं वहिस्सामित्ति पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे. एवमेव बालेवि सव्वेसिं पाणाणं जाव सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे, तं०-पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, एवं खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते यावि भवइ, से बाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि ण पस्सइ पावे य से कम्मे कज्जइ। जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स जाव तस्स वा रायपुरिसस्स पत्तेयं पत्तेयं चित्तसमादाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे भवइ एवमेव बाले सव्वेसिं पाणाणं जाव सव्वेसिं सत्ताणं पत्तेयं पत्तेयं चित्तसमादाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूते मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे भवइ।६५। णो इणट्ठे समट्ठे [चोदकः] इह खलु बहवे पाणा० जे इमेणं सरीरसमुस्सएणं णो दिट्ठा वा सुया वा नाभिमया वा विन्नाया वा जेसिं णो पत्तेयं पत्तेयं चित्तसमायाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूते मिच्छासंठिते निच्चं पसढविउवायचित्तदंडे तं०-पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले।६६। आचार्य आह-तत्थ खलु भगवया दुवे दिट्ठंता पण्णत्ता,तं०-सन्निदिट्ठंते य असन्निदिट्ठंते य, से किं तं सन्निदिट्ठंते?, जे इमे सन्निपंचिंदिया पज्जत्तगा एतेसि णं छजीवनिकाए पडुच्च तं०-पुढवीकायं जाव तसकायं, से एगइओ पुढवीकाएणं किच्चं करेइवि कारवेइवि, तस्स णं एवं भवइ-एवं खलु अहं पुढवीकाएणं किच्चं करेमिवि कारवेमिवि, णो चेव णं से एवं भवइ इमेण वा इमेण वा, से एतेणं पुढवीकाएणं किच्चं करेइवि कारवेइवि से णं तातो पुढवीकायाओ असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यावि भवइ, एवं जाव तसकाएत्ति भाणियव्वं, से एगइओ छजीवनिकाएहिं किच्चं करेइवि कारवेइवि, तस्स णं एवं भवइ-एवं खलु अहं छजीवनिकाएहिं किच्चं करेमिवि कारवेमिवि, णो चेव णं से एवं भवइ-इमेहिं वा इमेहिं वा, से य तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं जाव कारवेइवि, से य तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे तं०-पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, एस खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सुविणमवि अपस्सओ पावे य से कम्मे कज्जइ, से तं सण्णिदिट्ठंते। से किं तं असन्निदिट्ठंते ?, जे इमे असन्निणो पाणा तं०-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा वेगइया तसा पाणा, जेसिं णो तक्काइ वा सन्नाति वा पन्नाति वा मणेइ वा वईइ वा सयं वा करणाए अन्नेहिं वा कारावेत्तए करंतं वा समणुजाणित्तए, तेऽवि णं बाला सव्वेसिं पाणाणं जाव सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूता मिच्छासंठिया निच्चं पसढविउवातचित्तदंडा तं०-पाणाइवाते जाव मिच्छादंसणसल्ले, इच्चेव जाव णो चेव मणो णो चेव वई पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए परितप्पणयाए ते दुक्खणसोयणजावपरितप्पणवहबंधणपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति। इति खलु से असन्निणोऽवि सत्ता अहोनिसिं पाणातिवाए उवक्खाइज्जंति जाव अहोनिसिं परिग्गहे उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति, सव्वजोणियावि खलु सत्ता सन्निणो हुच्चा असन्निणो होंति असन्निणो हुच्चा सन्निणो होंति होच्चा सन्नी अदुवा असन्नी, तत्थ से अविविचित्ता अविधूणित्ता असंमुच्छित्ता अणणुतावित्ता असन्निकायाओ वा सन्निकायं संकमंति सन्निकायाओ वा असन्निकायं संकमंति सन्निकायाओ वा सन्निकायं संकमंति असन्निकायाओ वा असन्निकायं संकमंति, जे एए सन्नी वा असन्नी वा सव्वे ते मिच्छायारा निच्चं पसढविउवायचित्तदंडा, (प्र० १७५०) तं०-पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, एवं खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयप्पच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबाले एगंतसुत्ते से बाले अविआरमणवयणकायवक्के सुविणमवि ण पासइ पावे य से कम्मे कज्जइ। ६७। चोदकः-से किं कुव्वं किं कारवं कहं संजयविरयप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे भवइ ?, आचार्य आह-तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकाया हेऊ पण्णत्ता, तंजहा-पुढवीकाइया जाव तसकाइया, से जहाणामए मम अस्सातं डंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारं दुक्खं भयं पडिसंवेदेमि, इच्चेवं जाण सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता दंडेण वा जाव कवालेण वा आतोडिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा तालिज्जमाणा वा जाव उवद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारं दुक्खं भयं पडिसंवेदेंति, एवं णच्चा सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता न हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा, एस धम्मे धुवे णिइए सासए समिच्च लोगं खेयन्नेहिं पवेदिए, एवं से भिक्खू विरते पाणाइवायातो जाव मिच्छादंसणसल्लाओ, से भिक्खू णो दंतपक्खालणेणं दंते पक्खालेज्जा णो अंजणं णो वमणं णो धूवणित्तं पिआइते, से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे जाव अलोभे उवसंते परिनिव्वुडे, एस खलु भगवया अक्खाए संजयविरयपडिहयपच्चखायपावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतपंडिए भवइत्तिबेमि ।६८। प्रत्याख्यानाध्ययनं ४ (२०)॥ आदाय बंभचेरं च, आसुपन्ने इमं वइं। अस्सिं धम्मे अणायारं, नायरेज्ज कयाइवि॥६३६॥ अणादीयं परिन्नाय, अणवदग्गेति वा पुणो। सासयमसासए वा, इति दिट्ठिं न धारए ॥७॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं, ववहारो ण विज्जई। एएहिं दोहिं ठाणेहिं, अणायारं तु जाणए ॥८॥ समुच्छि(ज्जि)हिंति सत्थारो, सव्वे पाणा अणेलिसा। गंठिगा वा भविस्संति, सासयंति व णो वए ॥९॥ एएहिं दोहिं ठाणेहिं० ॥६४०॥ जे केइ खुद्दगा पाणा, अदुवा संति महालया। सरिसं तेहिं वेरंति, असरिसंती य णो वदे ॥ १ ॥ एएहिं दोहिं० ॥ २ ॥ अहाकम्माणि (प्र० अहाकडाणि) भुंजंति, अण्णमण्णे सकम्मुणा। उवलित्तेत्ति जाणिज्जा, अणुवलित्तेत्ति वा पुणो ॥ ३ ॥ एएहिं दोहिं० ॥ ४ ॥ जमिदं ओरालमाहारं, कम्मगं च तहेव य (तमेव तं)। सव्वत्थ वीरियं अत्थि, णत्थि सव्वत्थ वीरियं ॥५॥ एएहिं दोहिं० ॥ ६ ॥ णत्थि लोए अलोए वा, णेवं सन्नं निवेसए। अत्थि लोए अलोए वा, एवं सन्नं निवेसए ॥ ७ ॥ णत्थि जीवा अजीवा वा, णेवं०। अत्थि जीवा अजीवा वा, एवं० ॥ ८ ॥ णत्थि धम्मे अधम्मे वा, णेवं०। अत्थि धम्मे अधम्मे वा, एवं० ॥९॥ णत्थि बंधे व मोक्खे वा, णेवं०। अत्थि बंधे व मोक्खे वा, एवं० ॥६५०॥ णत्थि पुण्णे व पावे वा, णेवं०। अत्थि पुण्णे व पावे वा, एवं० ॥१॥ णत्थि आ(प्र०-त्था)सवे संवरे वा, णेवं०। अत्थि आ(प्र० त्था)सवे संवरे वा, एवं० ॥ २ ॥ णत्थि वेयणा णिज्जरा वा, णेवं०। अत्थि वेयणा णिज्जरा वा, एवं० ॥ ३ ॥ णत्थि किरिया अकिरिया वा, णेवं०। अत्थि किरिया अकिरिया वा, एवं० ॥ ४ ॥ णत्थि कोहे व माणे वा, णेवं०। अत्थि कोहे व माणे वा, एवं० ॥५॥ णत्थि माया व लोभे वा, णेवं०। अत्थि माया व लोभे वा, एवं० ॥६॥ णत्थि पेज्जे व दोसे वा, णेवं०। अत्थि०, एवं० ॥७॥ णत्थि चाउरंते संसारे, णेवं०। अत्थि चाउरंते संसारे, एवं० ॥८॥ णत्थि देवो व देवी वा, णेवं०। अत्थि देवो व देवी वा, एवं० ॥ ९ ॥ णत्थि सिद्धी असिद्धी वा, णेवं०। अत्थि सिद्धी असिद्धी वा, एवं० ॥ ६६० ॥ णत्थि सिद्धी नियं ठाणं, णेवं०। अत्थि सिद्धी नियं ठाणं, एवं० ॥१॥ णत्थि साहू असाहू

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, णेवं०। अत्थि साहू असाहू वा, एवं० ॥ २ ॥ णत्थि कल्लाण पावे वा, णेवं०। अत्थि कल्लाण पावे वा, एव० ॥ ३ ॥ कल्लाणे पावए वावि, ववहारो ण विज्जइ। जं वेरं तं न जाणंति,
समणा बाल पंडिया ॥ ४ ॥ असेसं अक्खयं वावि, सव्वदुक्खेति (प्र० हि) वा पुणो। वज्झा पाणा न वज्झत्ति, इति वायं न नीसरे ॥ ५ ॥ दीसंति समियायारा (निभियप्पाणो० पा०),
भिक्खुणो साहुजीविणो। एए (प्र० तेवि) मिच्छोवजीवंति, इति दिट्ठिं न धारए ॥ ६ ॥ दक्खिणाए पडिलंभो, अत्थि वा णत्थि (प्र० अत्थि णत्थित्ति) वा पुणो। ण वियागरेज्ज
मेहावी, संतिमग्गं च वूहए ॥ ७ ॥ इच्चेएहिं ठाणेहिं, जिणदिट्ठेहिं संजए। धारयंते उ अप्पाणं, आमोक्खाए परिवएज्जासि ॥ ६६८ ॥ त्तिबेमि, अनाचाराध्ययनं ५ (२१) ॥ पुराकडं
अद्द ! इमं सुणेह, एगन्तयारी समणे पुरासी। से भिक्खुणो उवणेत्ता अणेगे, आइक्खति ण्हिं पुढो वित्थरेणं ॥ १ ॥ साऽऽजीविया पट्ठविताऽथिरेणं, सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे। आइ-
क्खमाणो बहुजन्नमत्थं, न संधयाती अवरेण पुव्वं ॥ ६७० ॥ एगंतमेवं अदुवावि इण्हिं, दोऽवऽण्णमन्नं न समेति जम्हा। पुव्विं च इण्हिं च अणागतं वा, एगंतमेवं पडिसंधयाति ॥ १ ॥
समिच्च लोगं तसथावराणं, खेमंकरे समणे माहणे वा। आइक्खमाणोवि सहस्समज्झे, एगंतयं सारयती तहऽच्चे ॥ २ ॥ धम्मं कहंतस्स उ णत्थि दोसो, खंतस्स दंतस्स जितिंदियस्स।
भासाय दोसे य विवज्जगस्स, गुणे य भासाय णिसेवगस्स ॥ ३ ॥ महव्वए पंच अणुव्वए य, तहेव पंचासव संवरे य। विरतिं इहस्सामणियंमि पन्ने (पुण्णे पा०), लवावसक्की समणेत्तिबेमि
॥ ४ ॥ सीओदगं सेवउ बीयकायं, आहायकम्मं तह इत्थियाओ। एगंतचारिस्सिह अम्ह धम्मे, तवस्सिणो णाभिसमेति पावं ॥ ५ ॥ सीतोदगं वा तह बीयकायं, आहायकम्मं तह इत्थियाओ।
एयाइं जाणं पडिसेवमाणा, अगारिणो अस्समणा भवंति ॥ ६ ॥ सिया य बीओदग इत्थियाओ, पडिसेवमाणा समणा भवंतु। अगारिणोऽवी समणा भवंतु, सेवंति उ(प्र० जं)तेऽवि तह-
प्पगारं ॥ ७ ॥ जे यावि बीओदगभोति भिक्खू, भिक्खं विहं जायति जीवियट्ठी। ते णातिसंजोगमविप्पहाय, कायोवगा णंतकरा भवंति ॥ ८ ॥ इमं वयं तु तुम पाउकुव्वं, पावाइणो गरिहसि
सव्व एव। पावाइणो पुढो किट्टयंता, सयं सयं दिट्ठि करेंति पाउ ॥ ९ ॥ ते अन्नमन्नस्स उ गरहमाणा, अक्खंति भो समणा माहणा य। सतो य अत्थी असतो य णत्थी, गरहामो दिट्ठिं
ण गरहामो किंचि ॥ ६८० ॥ ण किंचि रूवेणऽभिधारयामो, सदिट्ठिमग्गं तु करेमु पाउं। मग्गे इमे किट्टिएँ आरिएहिं, अणुत्तरे सप्पुरिसेहिं अंजू ॥ १ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा
य जे थावर जे य पाणा। भूयाहिसंकाभि दुगुंछमाणा, णो गरहती वुसिमं किंचि लोए ॥ २ ॥ आगंतगारे आरामगारे, समणे उ भीते ण उवेति वासं। दक्खा हु संती बहवे मणुस्सा, ऊणा-
तिरित्ता य लवालवा य ॥ ३ ॥ मेहाविणो सिक्खिय बुद्धिमंता, सुत्तेहिं अत्थेहि य णिच्छयण्णा (प्र० णिच्छियन्नू)। पुच्छिंसु मा णे अणगार अन्ने (प्र० एगे), इति संकमाणो ण उवेति
तत्थ ॥ ४ ॥ णो कामकिच्चा ण य बालकिच्चा, रायाभिओगेण कुओ भएण ?। वियागरेज्जा पसिणं न वावि, सकामकिच्चेणिह आरियाणं ॥ ५ ॥ गंता च तत्था अदुवा अगंता, वियागरेज्जा
समियाऽऽसुपन्ने। अणारिया दंसणओ परित्ता, इति संकमाणो ण उवेति तत्थ ॥ ६ ॥ पन्नं जहा वणिए उदयट्ठी, आयस्स हेउं पगरेति संगं। तऊवमे समणे नायपुत्ते, इच्चेव मे होति मती
वियक्का ॥ ७ ॥ नवं न कुज्जा विहुणे पुराणं, चिच्चाऽमइं ताइय साह एवं। एतो(प्र० त्ता)वया बंभवतित्ति वुत्तो, तस्सोदयट्ठी समणेत्तिबेमि ॥ ८ ॥ समारभंते वणिया भूयगामं, परिग्गहं
चेव ममायमाणा। ते णातिसंजोगमविप्पहाय, आयस्स हेउं पगरंति संगं ॥ ९ ॥ वित्तेसिणो मेहुणसंपगाढा, ते भोयणट्ठा वणिया वयंति। वयं तु कामेसु अज्झोववन्ना, अणारिया पेमर-
सेसु गिद्धा ॥ ६९० ॥ आरंभगं चेव परिग्गहं च, अविउस्सिया णिस्सिय आयदंडा। तेसिं च से उदए जं वयासी, चउरंतणंताय दुहाय णेह ॥ १ ॥ णेगंत ण(प्र० णि)च्चंतिव ओदए
सो, वयंति ते दो विगुणोदयंमि। से उदए सातिमणंतपत्ते, तमुदयं साहयइ ताइ णाई ॥ २ ॥ अहिंसयं सव्वपयाणुकंपी, धम्मे ठियं कम्मविवेगहेउं। तमायदंडेहिं समायरंता, अबोहीए
ते पडिरूवमेयं ॥ ३ ॥ पिन्नागपिंडीमवि विद्ध सूले, केई पएज्जा पुरिसे इमेत्ति। अलाउयं वावि कुमारएत्ति, स लिप्पती पाणिवहेण अम्हं ॥ ४ ॥ अहवावि विद्धुण मिलक्खु सूले, पिन्नाग-
बुद्धीइ नरं पएज्जा। कुमारगं वावि अलाबुयंति, न लिप्पइ पाणिवहेण अम्हं ॥ ५ ॥ पुरिसं च विद्धुण कुमारगं वा, सूलंमि केइ पए जायतेए। पिन्नायपिंडं सतिमारुहेत्ता, बुद्धाण तं कप्पति
पारणाए ॥ ६ ॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए णियए भिक्खुयाणं। ते पुन्नखंधं सुमहं जिणित्ता, भवंति आरोप्प महंतसत्ता ॥ ७ ॥ अजोगरूवं इह संजयाणं, पावं तु पाणाण
पसज्झ काउं। अबोहिए दोण्हवि तं असाहु, वयंति जे यावि पडिस्सुणंति ॥ ८ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, विन्नाय लिंगं तसथावराणं। भूयाभिसंकाइ दुगुंछमाणे, वदे करेज्जा व कुओ
विहऽत्थी ? ॥ ९ ॥ पुरिसेत्ति विन्नत्ति न एवमत्थि, अणारिए से पुरिसे तहा हु। को संभवो ? पिन्नगपिंडियाए, वायावि एसा बुइया असच्चा ॥ ७०० ॥ वायाभियोगेण जमावहेज्जा,
णो तारिसं वाय(प्र० भास)मुदाहरिज्जा। अट्ठाणमेयं वयणं गुणाणं, णो (प्र० जे) दिक्खिए बूयमुरालमेयं ॥ १ ॥ लद्धे अ(प्र० इ)ट्ठे अहो एव तुब्भे, जीवाणुभागे सुविचिंतिए व। पुव्वं समुद्दं
अवरं च पुट्ठे, उलोइए पाणितले ठिए वा ॥ २ ॥ जीवाणुभागं सुविचिंतयंता, आहारिया अन्नविहीय सोहिं। न वियागरे छन्नपओपजीवि, एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥ ३ ॥ सिणाय-
गाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए नियए भिक्खुयाणं। असंजए लोहियपाणि से ऊ, णियच्छति गरिहमिहेव लोए ॥ ४ ॥ थूलं उरब्भं इह मारियाणं, उद्दिट्ठभत्तं च पगप्पएत्ता। (१७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं लोणतेल्लेण उवक्खडेत्ता, सपिप्पलीयं पगरंति मंसं ॥५॥ तं भुंजमाणा पिसितं पभूतं, णो उवलिप्पामो वयं रएणं। इच्चेवमाहंसु अणज्जधम्मा, अणारिया बाल रसेसु गिद्धा ॥ ६॥ जे यावि भुंजंति तहप्पगारं, सेवंति ते पावमजाणमाणा। मणं न एयं कुसला करेंती, वायावि एसा बुइया उ मिच्छा ॥७॥ सव्वेसिं जीवाण दयट्ठयाए, सावज्जदोसं परिवज्जयंता। तस्संकिणो इसिणो नायपुत्ता, उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति ॥ ८ ॥ भूयाभिसंकाएँ दुगुंछमाणा, सव्वेसिं पाणाण निहाय दंडं। तम्हा ण भुंजंति तहप्पगारं, एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥ ९॥ निग्गंथधम्मंमि इमं समाहिं, (प्र० इमा समाही) अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा। बुद्धे मुणी सीलगुणोववेए, अच्चत्थतं(ओ) पाउणती सिलोगं ॥७१०॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए णियए माहणाणं। ते पुन्नखंधं सुमहऽज्जणित्ता, भवंति देवा इति वेयवाओ ॥ १॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से, जे भोयए नियए कुलालयाणं। से गच्छति लोलुवसंपगाढे, तिव्वाभितावी णरगाभिसेवी ॥२॥ दयावरं धम्म दुगुंछमाणा, वहावहं धम्म पसंसमाणा। एगंपि जे भोययती असीलं, णिवो णिसं जाति कुओ सुरेहिं ? ॥३॥ दुहओवि धम्मंमि समुट्ठियामो, अस्सिं सुठिच्चा तह एसकालं। आयारसीले बुइएह नाणी, ण संपरायंमि विसेसमत्थि ॥४॥ अव्वत्तरूवं पुरिसं महंतं, सणातणं अक्खयमव्वयं च। सव्वेसु भूतेसुवि सव्वतो से, चंदो व ताराहिं समत्तरूवे ॥ ५॥ एवं ण मिज्जंति ण संसरंती, ण माहणा खत्तिय वेस पेसा। कीडा य पक्खी य सरीसिवा य, नरा य सव्वे तह देवलोगा ॥ ६ ॥ लोयं अयाणित्तिह केवलेणं, कहंति जे धम्ममजाणमाणा। णासंति अप्पाण परं च णट्ठा, संसार घोरंमि अणोरपारे ॥७॥ लोयं विजाणंतिह केवलेणं, पुन्नेण नाणेण समाहिजुत्ता। धम्मं समत्तं च कहंति णे उ, तारंति अप्पाण परं च तिन्ना ॥८॥ जे गरहियं ठाणमिहावसंति, जे यावि लोए चरणोववेया। उदाहडं तं तु समं मईए, अहाउसो विप्परियासमेव ॥ ९॥ संवच्छरेणावि य एगमेगं, बाणेण मारेउ महागयं तु। सेसाण जीवाण दयट्ठयाए, वासं वयं वित्ति पकप्पयामो ॥७२०॥ संवच्छरेणावि य एगमेगं, पाणं हणंता अणियत्तदोसा। सेसाण जीवाण वहेण लग्गा, सिया य थोवं गिहिणोऽवि तम्हा ॥ १ ॥ संवच्छरेणावि य एगमेगं, पाणं हणंता समणव्वएसु। आयाहिए से पुरिसे अणज्जे, ण तारिसा केवलिणो भवंति ॥ २॥ बुद्धस्स आणाएँ इमं समाहिं, अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण ताई। तरिउं समुद्दं व महाभवोघं, आयाणवं धम्ममुदाहरेज्ज ॥७२३॥ त्तिबेमि, आर्द्रकीयाध्ययनं ६ (२२)॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमितसमिद्धे वण्णओ जाव पडिरूवे, तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए (× एत्थ णं) नालदानामं बाहिरिया होत्था, अणेगभवणसयसन्निविट्ठा जाव पडिरूवा। ६९। तत्थ णं नालंदाए बाहिरियाए लेवे नामं गाहावई होत्था, अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधणबहुजायरूवरजते आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूए बहुजणस्स अपरिभूए (प्र० जाव) यावि होत्था, से णं लेवे नामं गाहावई समणोवासए यावि होत्था, अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगहियट्ठे अट्ठिमिंजापेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अयं अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, उस्सियफलिहे अप्पावयदुवारे चियत्तंतेउरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे तहाविहेणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वयगुणविरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं (प्र० जाव) भावेमाणे एवं च णं विहरइ। ७०। तस्स णं लेवस्स गाहावइस्स नालंदाए बाहिरियाए (प्र० बहिया) उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए एत्थ णं सेसदविया नामं उदगसाला होत्था, अणेगखंभसयसन्निविट्ठा पासादीया जाव पडिरूवा, तीसे णं सेसदवियाए उदगसालाए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए, एत्थ णं हत्थिजामे नामं वणसंडे होत्था, किण्हे वण्णओ वणसंडस्स। ७१। तस्सिं च णं (× गिहपदेसंमि) भगवं गोयमे विहरइ, भगवं च णं अहे आरामंसि०। अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे नियंठे मेयज्जे गोत्तेणं जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता भगवं गोयमं एवं वयासी-आउसंतो! गोयमा अत्थि खलु मे केइ पदेसे पुच्छियव्वे, तं च (प्र० मे) आउसो! अहासुयं अहादरिसियं मे वियागरेहि सवायं, भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी-अवियाइ आउसो! सोच्चा निसम्म जाणिस्सामो सवायं, उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी-। ७२। आउसो! गोयमा अत्थि खलु कुमारपुत्तिया नाम समणा निग्गंथा तुम्हाणं पवयणं पवयमाणा गाहावइं समणोवासगं (× उवसंपन्नं) एवं पच्चक्खावेंति-णण्णत्थ अभिओएणं गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं णिहाय दंडं, एवं ण्हं पच्चक्खंताणं दुप्पच्चक्खायं भवइ एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं दुपच्चक्खावियव्वं भवइ, एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा अतियरंति सयं पतिण्णं, कस्स णं तं हेउं ?, संसारिया खलु पाणा थावरावि पाणा तसत्ताए पच्चायंति, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं थावरकायंसि उववण्णाणं ठाणमेयं घत्तं। ७३। एवं ण्हं पच्चक्खंताणं सुपच्चक्खायं भवइ, एवं ण्हं पच्चक्खावेमाणाणं सुपच्चक्खावियं भवइ, एवं ते परं पच्चक्खावेमाणा णातियरंति सयं पइण्णं, णण्णत्थ

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International

For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

अभिओगेणं गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं णिहाय दंडं, एवमेव सइ भासाए परक्कमे विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा परं पच्चक्खावेंति अयंपि णो उवएसे णो णेआउए भवइ, अवियाइं आउसो! गोयमा! तुब्भंपि एवं रोयइ? ।७४। सवायं भगवं गोयमे! उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी-आउसंतो! उदगा नो खलु अम्हे एयं रोयइ, जे ते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खंति जाव परूवेंति णो खलु ते समणा वा णिग्गंथा वा भासं भासंति, अणुतावियं खलु ते भासं भासंति, अब्भाइक्खंति खलु ते समणे समणोवासए वा, जेहिंवि अन्नेहिं जीवेहिं पाणेहिं भूएहिं सत्तेहिं संजमयंति ताणवि ते अब्भाइक्खंति, कस्स णं तं हेउं?, संसारिया खलु पाणा, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति थावरावि पाणा तस्सत्ताए पच्चायंति तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायंसि उववज्जंति थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं तसकायंसि उववन्नाणं ठाणमेयं अघत्तं ।७५। सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी-कयरे खलु ते आउसंतो गोयमा! तुब्भे वयह तसा पाणा तसा आउ अन्नहा?, सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी-आउसंतो उदगा! जे तुब्भे वयह तसभूता पाणा तसा ते वयं वयामो तसा पाणा, जे वयं वयामो तसा पाणा ते तुब्भे वयह तसभूया पाणा, एए संति दुवे ठाणा तुल्ला एगट्ठा, किमाउसो! इमे भे सुप्पणीयतराए भवइ-तसभूया पाणा तसा, इमे भे दुप्पणीयतराए भवइ-तसा पाणा तसा, ततो एगमाउसो! पडिक्कोसह एक्कं अभिणंदह, अयंपि भेदो से णो णेआउए भवइ। भगवं च णं उदाहु-संतेगइआ मणुस्सा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ-णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, वयं ण्हं अणुपुव्वेणं गुत्तस्स लिसिस्सामो, ते एवं संखवेंति ते एवं संखं ठवयंति ते एवं संखं ठावयंति नन्नत्थ अभिओएणं गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं निहाय दंडं, तंपि तेसिं कुसलमेव भवइ ।७६। तसावि वुच्चंति तसा तससंभारकडेणं कम्मुणा णामं च णं अब्भुवगयं भवइ, तसाउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, तसकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति, ते तओ आउयं विप्पजहित्ता थावरत्ताए पच्चायंति। थावरावि वुच्चंति थावरा थावरसंभारकडेणं कम्मुणा णामं च णं अब्भुवगयं भवइ, थावराउयं च णं पलिक्खीणं भवइ, थावरकायट्ठिइया ते तओ आउयं विप्पजहंति तओ आउयं विप्पजहित्ता भुज्जो परलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया ते चिरट्ठिइया ।७७। सवायं उदए पेढालपुत्ते भयवं गोयमं एवं वयासी-आउसंतो गोयमा! णत्थि णं से केइ परियाए जण्णं समणोवासगस्स एगपाणातिवायविरएवि दंडे निक्खित्ते, कस्स णं तं हेउं?, संसारिया खलु पाणा, थावरावि पाणा तसत्ताए पच्चायंति, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं थावरकायंसि उववन्नाणं ठाणमेयं घत्तं। सवायं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी-णो खलु आउसो! अस्माकं वत्तव्वएणं तुब्भं चेव अणुप्पवादेण अत्थि णं से परियाए जे णं समणोवासगस्स सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं दंडे निक्खित्ते भवइ, कस्स णं तं हेउं?, संसारिया खलु पाणा, तसावि पाणा थावरत्ताए पच्चायंति, थावरावि पाणा तसत्ताए पच्चायंति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायंसि उववज्जंति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायंसि उववज्जंति, तेसिं च णं तसकायंसि उववन्नाणं ठाणमेयं अघत्तं, ते पाणावि वुच्चंति, ते तसावि वुच्चंति, ते महाकाया ते चिरट्ठिइया, ते बहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवति, ते अप्पयरागा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ, से महया तसकायाओ उवसंतस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स जन्नं तुब्भे वा अन्नो वा एवं वदह-णत्थि णं से केइ परियाए जंसि समणोवासगस्स एगपाणाएवि दंडे णिक्खित्ते, अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ ।७८। भगवं च णं उदाहु नियंठा खलु पुच्छियव्वा-आउसंतो! नियंठा इह खलु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तेसिं च एवं वुत्तपुव्वं भवइ-जे इमे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, एसिं च णं आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, जे इमे अगारमावसंति एएसिं णं आमरणंताए दंडे णो णिक्खित्ते, केई च णं समणा जाव वासाइं चउपंचमाइं छट्ठदसमाइं अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूईज्जित्ता अगारमावसे (प्र० रं वए)ज्जा?, हंतावसेज्जा, तस्स णं तं गारत्थं वहमाणस्स से पच्चक्खाणे भंगे भवइ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, एवमेव समणोवासगस्सवि तसेहिं पाणेहिं दंडे णिक्खित्ते, थावरेहिं पाणेहिं दंडे णो णिक्खित्ते, तस्स णं तं थावरकायं वहमाणस्स से पच्चक्खाणे णो भंगे भवइ, से एवमायाणह? णियंठा!, एवमायाणियव्वं। भगवं च णं उदाहु नियंठा खलु पुच्छियव्वा-आउसंतो नियंठा! इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्तो वा तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म धम्मं सवणवत्तियं उवसंकमेज्जा?, हंता उवसंकमेज्जा, तेसिं च णं तहप्पगाराणं धम्मं आइक्खियव्वे?, हंता आइक्खियव्वे, किं ते तहप्पगारं धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वएज्जा-इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं संसुद्धं णेयाउयं सल्लकत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं, एत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, तमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा णिसीयामो तहा तुयट्टामो तहा भुंजामो तहा भासामो तहा अब्भुट्टामो तहा

Jain Education International For Private & Personal Use Only मुनि दीपरत्नसागर www.jainelibrary.org

उट्ठाए उट्ठेमोत्ति पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमामोत्ति वएज्जा ?, हंता वएज्जा, किं ते तहप्पगारा कप्पंति पव्वावित्तए ?, हंता कप्पंति, किं ते तहप्पगारा कप्पंति मुंडावित्तए ?, हंता कप्पंति, किं ते तहप्पगारा कप्पंति सिक्खावित्तए ?, हंता कप्पंति, किं ते तहप्पगारा कप्पंति उवट्ठावित्तए ?, हंता कप्पंति, तेसिं च णं तहप्पगाराणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ?, हंता णिक्खित्ते, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा जाव वासाइं चउपंचमाइं छट्ठद्दसमाइं वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देसं दूइज्जेत्ता अगारं वएज्जा ?, हंता वएज्जा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जे से जीवे जस्स परेणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते, से जे से जीवे जस्स आरेणं सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते, से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ, परेणं असंजए, आरेणं संजए, इयाणिं असंजए, असंजयस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं दंडे णो णिक्खित्ते भवइ, से एवमायाणह ? णियंठा !, से एवमायाणियव्वं। भगवं च णं उदाहु णियंठा खलु पुच्छियव्वा-आउसंतो ! नियंठा इह खलु परिव्वाइया वा परिव्वाइआओ वा अन्नयरेहिंतो तित्थाययणेहिंतो आगम्म धम्मसवणवत्तियं उवसंकमेज्जा ?, हंता उवसंकमेज्जा, किं तेसिं तहप्पगारेणं धम्मे आइक्खियव्वे ?, हंता आइक्खियव्वे, ते चेव उवट्ठावित्तए जाव कप्पंति ?, हंता कप्पंति, किं ते तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ?, हंता कप्पंति, तेणं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा तं चेव जाव अगारं वएज्जा ?, हंता वएज्जा, ते णं तहप्पगारा कप्पंति संभुंजित्तए ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जे से जीवे जे परेणं नो कप्पति संभुंजित्तए, से जे से जीवे आरेणं कप्पति संभुंजित्तए, से जे से जीवे जे इयाणिं णो कप्पति संभुंजित्तए, परेणं अस्समणे आरेणं समणे इयाणिं अस्समणे, अस्समणेणं सद्धिं णो कप्पति समणाणं निग्गंथाणं संभुंजित्तए, से एवमायाणह ? णियंठा !, से एवमायाणियव्वं ।७९। भगवं च णं उदाहु संतेगइया समणोवासगा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ-णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, वयं णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा विहरिस्सामो, थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो, एवं थूलगं मुसावायं थूलगं अदिन्नादाणं थूलगं मेहुणं थूलगं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो, इच्छापरिमाणं करिस्सामो, दुविहं तिविहेणं, मा खलु ममट्ठाए किंचि करेह वा करावेह वा तत्थवि पच्चक्खाइस्सामो, ते णं अभोच्चा अपिच्चा असिणाइत्ता आसंदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता ते तहा कालगया किं वत्तव्वं सिया-सम्मं कालगत्ति ?, वत्तव्वं सिया, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते चिरट्ठिइया ते बहुतरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते अप्पयरागा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खायं भवइ, इति से महयाओ जण्णं तुब्भे वयह तं चेव जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया समणोवासगा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ, णो खलु वयं संचाएमो मुंडा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वइत्तए, णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव अणुपालेमाणा विहरित्तए, वयं णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाजूसणाजूसिया भत्तपाणं पडियाइक्खिया जाव कालं अणवकंखमाणा विहरिस्सामो, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खाइस्सामो तिविहं तिविहेणं, मा खलु ममट्ठाए किंचिवि जाव आसंदीपेढियाओ पच्चोरुहित्ता एते तहा कालगया किं वत्तव्वं सिया-संमं कालगयत्ति ?, वत्तव्वं सिया, ते पाणावि वुच्चंति जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा-महइच्छा महारंभा महापरिग्गहा अहम्मिया जाव दुप्पडियाणंदा जाव सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते ततो आउगं विप्पजहंति, ततो भुज्जो सगमादाए दुग्गइगामिणो भवंति, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते चिरट्ठिइया ते बहुयरगा आयाणसो, इति से महयाओ णं जण्णं तुब्भे वदह तं चेव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा-अणारंभा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते ते तओ आउगं विप्पजहंति ते तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवंति, ते पाणावि वुच्चंति जाव णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा-अप्पेच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, ते तओ आउगं विप्पजहंति, ततो भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवंति, ते पाणावि वुच्चंति जाव णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया मणुस्सा भवंति, तंजहा-आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया कण्हुईरहस्सिया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते भवइ, णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया पाणभूयजीवसत्तेहिं, अप्पणा सच्चामोसाइं एवं विप्पडिवेदेंति-(एवं विउंजंति प्रा०) अहं ण हंतव्वो अन्ने हंतव्वा जाव कालमासे कालं किच्चा अन्नयराइं आसुरियाइं किब्बिसियाइं जाव उववत्तारो भवंति, तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए तमोरूवत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति जाव णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया पाणा दीहाउया जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए जाव दंडे णिक्खित्ते भवइ, ते

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वामेव कालं करेंति, करित्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते चिरट्ठिइया ते दीहाउया ते बहुयरगा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्च-क्खायं भवइ जाव णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया पाणा समाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए जाव दंडे णिक्खित्ते भवइ, ते समयमेव कालं करेंति करित्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते समाउया ते बहुयरगा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ जाव णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया पाणा अप्पाउया, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए जाव दंडे णिक्खित्ते भवइ, ते पुव्वामेव कालं करेंति करेत्ता पारलोइयत्ताए पच्चायंति, ते पाणावि वुच्चंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते अप्पाउया ते बहुयरगा पाणा, जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ जाव णो णेयाउए भवइ। भगवं च णं उदाहु संतेगइया समणोवासगा भवंति, तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ-णो खलु वयं संचाएमो मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्तए, णो खलु वयं संचाएमो चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालित्तए, णो खलु वयं संचाएमो अपच्छिमं जाव विहरित्तए, वयं च णं सामाइयं देसावगासियं पुरत्था पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा एतावता जाव सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं दंडे णिक्खित्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेहिं खेमंकरे अहमंसि, तत्थ आरेणं जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते, तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो जाव तेसु पच्चायंति, जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से०।८०। तत्थ आरेणं जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए दंडे णिक्खित्ते ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जाव थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते तेसु पच्चायंति, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए दंडे णिक्खित्ते ते पाणावि वुच्चंति ते तसा ते चिरट्ठिइया जाव अयंपि भेदे से०। तत्थ जे आरेणं तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ परेणं जे तसा थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० तेसु पच्चायंति, तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से०। तत्थ जे आरेणं थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए निक्खित्ते ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं चेव जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० तेसु पच्चायंति तेसु समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो०। तत्थ जे ते आरेणं जे थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता ते तत्थ आरेणं चेव जे थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते तेसु पच्चायंति, तेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए० अणट्ठाए० ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो०। तत्थ जे ते आरेणं थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ परेणं जे तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० तेसु पच्चायंति तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ। तत्थ जे ते परेणं तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे तसा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० तेसु पच्चायंति, तेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो णेयाउए भवइ। तत्थ जे ते परेणं तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता तत्थ आरेणं जे थावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए दंडे अणिक्खित्ते अणट्ठाए निक्खित्ते तेसु पच्चायंति, जेहिं समणोवासगस्स अट्ठाए अणिक्खित्ते अणट्ठाए णिक्खित्ते जाव ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो०। तत्थ ते परेणं तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० ते तओ आउं विप्पजहंति विप्पजहित्ता ते तत्थ परेणं चेव जे तसथावरा पाणा जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणंताए० तेसु पच्चायंति, जेहिं समणोवागस्स सुपच्चक्खायं भवइ, ते पाणावि जाव अयंपि भेदे से णो०। भगवं च णं उदाहु ण एतं भूयं ण एतं भव्वं ण एतं भविस्संति जण्णं तसा पाणा वोच्छिज्जिहिंति थावरा पाणा भविस्संति, थावरा पाणावि वोच्छिज्जिहिंति तसा पाणा भविस्संति, अवोच्छिन्नेहिं तसथावरेहिं पाणेहिं जण्णं तुब्भे वा अन्नो वा एवं वदह-णत्थि णं से केइ परियाए जाव णो णेयाउए भवइ।८१। भगवं च णं उदाहु आउसंतो! उदगा जे खलु समणं वा माहणं वा परिभासइ मित्ति मन्नंति आगमित्ता णाणं आगमित्ता दंसणं आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए से खलु परलोगपलिमंथत्ताए चिट्ठइ, जे खलु समणं वा माहणं वा णो परिभासइ मित्ति मन्नंति आगमित्ता णाणं आगमित्ता दंसणं आगमित्ता चरित्तं पावाणं कम्माणं अकरणयाए से खलु परलोगविसुद्धीए चिट्ठइ, तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं अणाढायमाणे जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पहारेत्थ गमणाए। भगवं च णं उदाहु आउसंतो उदगा! जे खलु तहाभूतस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म अप्पणो चेव सुहुमाए पडिलेहाए अणुत्तरं जोगखेमपयं लंभिए समाणे सोवि ताव तं आढाइ परिजाणेति वंदति नमंसति सक्कारेइ (१८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागर

संमाणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति। तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी-एतेसिं णं भंते! पदाणं पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं असुयाणं अमुयाणं अविन्नायाणं अव्वोगडाणं अणिगूढाणं अविच्छिन्नाणं अणिसिट्ठाणं अणिवूढाणं अणुवहारियाणं एयमट्ठं णो सद्दहियं णो पत्तियं णो रोइयं. एतेसिं णं भंते! पदाणं एण्हि जाणयाए सवणयाए बोहिए जाव उवहारणयाए एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि एवमेव से जहेयं तुब्भे वदह, तए णं भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं एवं वयासी-सद्दहाहि णं अज्जो! पत्तियाहि णं अज्जो! रोएहि णं अज्जो! एवमेयं जहा णं अम्हे वयामो, तए णं से उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी-इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, तए णं से भगवं गोयमे उदयं पेढालपुत्तं गहाय जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करित्ता वंदइ नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, तएणं समणे भगवं महावीरे उदयं एवं वयासी-अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि. तए णं से उदए पेढालपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइत्तिबेमि।८२। नालंदाध्ययनं ७(२३)॥ द्वितीयः श्रुतस्कन्धः॥ इति